

Union Dhara यूनियन धारा Union Dhara यूनियन धारा

मार्च March 2015



गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया  Union Bank of India

अनुक्रमणिका Contents

यूनियन धारा UNION DHARA
ईंई, 2015 March, 2015

जिल्द 37, सं. 1 Vol. XXXVII, No. 1

प्रकाशन तिथि : 15.05.2015

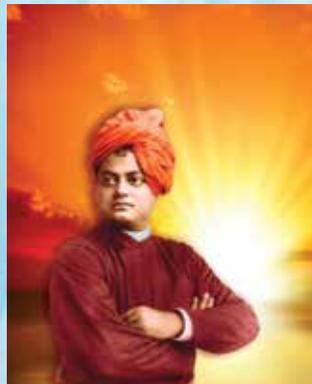
महाप्रबंधक (प्रभारी)
हेमलता राजन
General Manager (In-charge)
Hemlatha Rajan

संपादक
सविता शर्मा
Editor
Savita Sharma

संपादकीय सलाहकार
मयंक मेहता
एस. के. सिंह
अनिल मित्तल
अरुण श्रीवास्तव
Editorial Advisors
Mayank Mehta
S. K. Singh
Anil Mittal
Arun Srivastava

Edited and published by
Mrs. Savita Sharma for
Union Bank of India,
Union Bank Bhavan, 239,
Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point,
Mumbai - 400 021.
E-mail: savita.sharma@unionbankofindia.com
Our Address : Editor, Union Dhara,
11th Floor, Union Bank Bhavan, 239,
Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point,
Mumbai - 400 021.
E-mail: uniondhara@unionbankofindia.com
Tel.: 22020853 / 22896547 / 22896548

मानव व्यक्तित्व विकास	6	कर्मण्येवाधिकारस्ते.....	43
श्रीमद्भगवद्गीता में मानव संसाधन प्रबंधन ..	8	बैंक मित्र.....	44
सकारात्मक सोच.....	11	खुशनुमा व्यक्तित्व – सुखी जीवन	47
आत्मविश्वास	12	समय चाबी सफलता की.....	49
Empathy vs. Sympathy	14	भारत बिल भुगतान प्रणाली(बीबीपीएस) .	50
भारतीय कार्टून जगत के “प्राण”	15	निवृत्त जीवन से	52
एटीएम की सुरक्षा.....	16	हमारी जीवनशैली और व्यक्तित्व.....	54
अँगूठी.....	18	बधाई.....	56
एक गड्डे की आत्मकथा	19	जीत तक जारी जंग	57
Importance of Communication.....	20	Sportingly Yours	58
अलंकरण व परिधान	22	हमें गर्व हैं.....	59
हरेक के लिये बैंकिंग	25	Motivation	60
UniOne Diary	27	Customer Service	62
Personality Development & Law.....	28	नये कदम.....	63
LEADERSHIP is a way of Life....	30	आयोजन और उत्सव.....	64
Awards & Accolades	32	कारोबार और समीक्षा.....	66
शिखर की ओर	35	कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी.....	68
Bal Pratibha	36	Face in The Union Bank Crowd..	70
महत्वपूर्ण निर्देश	37	Banking Quiz	72
शुभमस्तु.....	40	चरक का कोना	73
विश्व हिन्दी दिवस – 2015.....	41	हेल्थ टिप्स/ व्यंजन	74
वार्षिक संवादादाता सम्मेलन.....	42	आपकी पाती.....	75



Special Feature
Personality Development

काकचेष्टा बकोध्यानम् अल्पनिद्रा तथैव च।

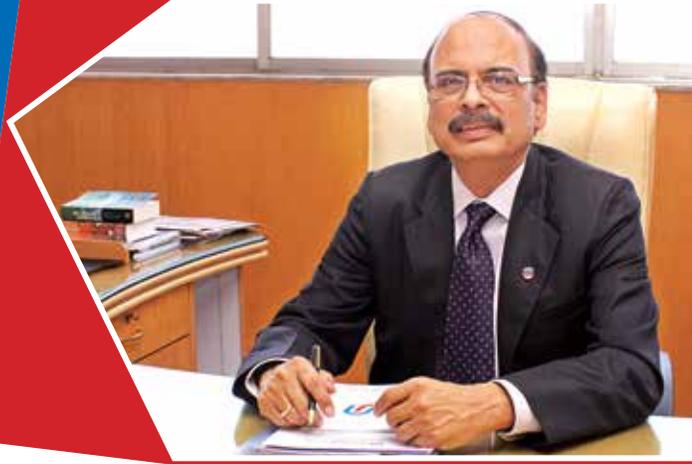
अल्पाहारी गृहत्यागी सुधीजनः पञ्चलक्षणम् ॥



इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at **SAP Print Solution Pvt. Ltd.**, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

परिदृश्य Perspective



प्रिय यूनियनाइट्स,

ग्रीष्म ऋतु आप सब के जीवन में शीतलता लाये, ऐसी मेरी शुभकामना है. ज्यों-ज्यों सूरज की तपिश बढ़ती है, ग्रीष्मकालीन दिन भी बड़ा होता जाता है. छुट्टियों के दिन होते हैं, मौज-मस्ती होती है, खासकर स्कूली बच्चों के लिए. लेकिन हम बैंकरों की ज़िंदगी घर और दफ्तर की जट्टोजहद में ही ज्यादातर खपती है. साथियो, आनंद तो दोनों में सामंजस्य बैठाने में ही है. अपने करियर पर ध्यान देते समय, हमें जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को नजरंदाज नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें अपने परिवार, दोस्तों और अंततः समाज के साथ बांटना चाहिये, इससे जीवन खुशियों और समृद्धि से भर जाता है.

दोस्तो, भारत एक युवा देश है. स्वाभाविक है हमारा व्यवहार और हमारी उम्मीदें भी जवान हो रही हैं. ग्राहकों की अपेक्षाओं और व्यवहार में कई बदलाव दिख रहे हैं. मुझे अपने साथियों की योग्यता और हुनर पर पूरा भरोसा है. आपके अनवरत प्रयास और नेक इरादों की बदौलत ही हमारा बैंक वर्तमान में हितधारकों की असीम निष्ठा व प्यार का आनंद ले पा रहा है. बदलते वक़्त के इस दौर में समय के साथ हमें अपनी योग्यता को निरंतर निखारने की जरूरत है. जहां बैंक आपके ज्ञान तथा कौशल को अद्यतन करने में अपना निवेश करेगा, वहीं समानान्तर रूप से हमारे साथियों को भी अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए सजग होने की जरूरत है.

यूनियन धारा का यह अंक व्यक्तित्व विकास को समर्पित है. कोई व्यक्ति किस तरह लोगों से रूबरू होता है, कैसी प्रतिक्रियाएँ दिखाता है; इन सब चीजों का सामामेलन होता है उसका व्यक्तित्व. मैं उम्मीद करता हूँ कि यह अंक व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करेगा तथा व्यक्ति-विशेष में श्रेष्ठ गुणों को स्थापित करने में सहायक होगा. मैं इस मश्वरे के साथ अपनी बात का समापन करना चाहूँगा कि हम सभी को व्यक्तित्व के समग्र व समुचित विकास की अभिलाषा करनी चाहिए. महर्षि अरबिंदो ने सही कहा है:-

“मनुष्य की वास्तविक प्रकृति, वैयक्तिक रूप में मस्तिष्क, शरीर व जीवन के इस्तेमाल करने वाली आत्मा और ब्रह्मांड में सामाजिक अनुभव व स्वानुभूति का विस्तार है”

आपका,

प्रतिवारी..

अरुण तिवारी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

Dear Unionites,

My greetings to each of you and wishes of a cool summer season 2015. Summer season brings longer days with Sun scorching almost all over India. It however, also means the holiday season for many, particularly school going kids discover plenty of life around. For us the bankers, there is a constant juggling between work and life, with latter often suffering while managing the former. The success, however, lies in having harmony between the two. While pursuing growth in career, one shouldn't undermine the little moments of joy, shared with family and friends, and society at large, which add-up to make a great life full of happiness and prosperity.

Friends, as India grows younger, there is a substantial churn happening in customer behavior and expectations. I have firm belief in our people's capabilities. It is through your efforts and perseverance that our Bank enjoys immense trust and love of all stakeholders presently. In fast changing times, however, there is a need to constantly upgrade our capabilities. While the Bank will be investing in upgrading your knowledge and skills, there is a parallel need for our people to develop their personality consciously.

Union Dhara has dedicated its current issue to personality development. Personality is the sum total of ways in which an individual reacts to and interacts with others. I hope, this issue will illuminate different aspects of personality and ways to inculcate the good traits in one's persona. I conclude with an advice that one should aspire for a wholesome personality, as underscored by Maharshi Aurobindo, when he said, and I quote,

“Man is in his real nature... a spirit using the mind, life and body for an individual and a communal experience and self manifestation in the universe”.

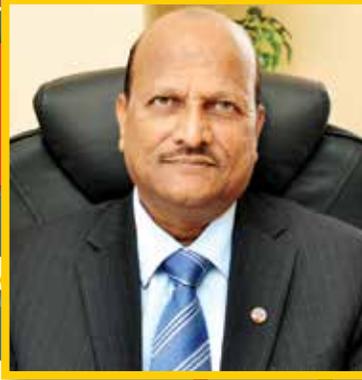
With best compliments,

Arun Tiwari

Arun Tiwari

Chairman & Managing Director

हार्दिक स्वागत



श्री किशोर पी. खरात ने 10 मार्च 2015 को यूनियन बैंक के कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 04 सितम्बर 1958 को जन्में श्री खरात बी.कॉम., एल.एल.बी. तथा प्रबंधन में एक्सीक्यूटिव डिप्लोमा प्राप्त हैं। उन्हें बैंक ऑफ बड़ौदा में विभिन्न भूमिकाओं का 37 वर्षों का विशद अनुभव है। अग्रिम विभाग में उनका विशिष्ट अनुभव रहा है तथा वित्तीय समावेशन एवं प्रधानमंत्री जन-धन योजना के कार्यान्वयन में आपकी सक्रिय भूमिका रही है। भारत के विभिन्न भागों के अलावा विदेशों - शारजाह (यू ए ई) तथा स्पेन, त्रिनिदाद एवं टोबेगो में भी उनकी पदस्थियाँ रही हैं।



On the occasion of inauguration of Union Bank of India (UK) Ltd., London, our Bank's fully owned subsidiary, on 13th March, 2015 by Honourable Minister of Finance, Government of India, Shri Arun Jaitley, our CMD Shri Arun Tiwari is seen welcoming Shri Jaitley.



On the occasion of inauguration of Union Bank of India (UK) Ltd., London, our Bank's fully owned subsidiary, on 13th March, 2015 seen on the dais (L/R) are Shri Arun Tiwari, Our CMD; Shri Arun Jaitley, Honorable Minister of Finance, Government of India; Shri Ranjan Mathai, Honorable High Commissioner, Government of India to UK and the Alderman & Sherriff of the City of London, Shri Andrew Parmley.



Our CMD Sri Arun Tiwari is seen with Mr. Ranjan Mathai, Honourable High Commissioner of India to UK during his visit to London. He discussed about exploring the business opportunities in UK and the role of Union Bank of India (UK) Ltd, our Fully owned subsidiary. This meeting took place on 12th March, 2015.

व्यक्ति और व्यक्तित्व

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की क्रियाओं, मनोवृत्तियों और व्यवहार के समामेलन के अलावा कुछ नहीं। हम अधिकांशतः संपूर्ण या आदर्श व्यक्तित्व हेतु प्रयास करते रहते हैं तथा बहुत बार कहते भी हैं कि **कृष्ण के अलावा कोई भी सम्पूर्ण नहीं**।

बहुत से लोगों ने आदर्श व्यक्तित्व की परिभाषा अलग-अलग तरीके से दी है। जहाँ तक मैंने अनुभव किया है, यह सभी सकारात्मक और अच्छी चीजों का संतुलित मिश्रण है; फिर चाहे वे विचार हों, सोच की तरंगें हों, आदते हों या फिर दृष्टिकोण। ऐसा क्यों होता है कि हमें कोई व्यक्ति बहुत अधिक पसंद आता है। हमें उसका साथ अच्छा लगता है। उसके सान्निध्य में हम शांति और स्थिरता महसूस करते हैं। हमारे जीवन में ऐसा क्यों होता है? बेशक! ऐसे में समान तरंगों वाली सोच होती है जो समानधर्मी लोगों को आकृष्ट करती है। इसे ही कहते हैं- **“मनुष्य की पहचान उसकी संगति से होती है”**।

अब पूछा जाए कि संपूर्ण व्यक्तित्व क्या है? मैं कहना चाहूंगी कि जहाँ शांति, खुशी और कल्याण हो, वही संपूर्ण व्यक्तित्व है और शायद यही **सत्यम, शिवम् सुंदरम्** है।

आपके समक्ष प्रस्तुत यूनियन धारा का यह अंक मुख्यतः व्यक्तित्व विकास पर आधारित है। हमारी उपलब्धियाँ और अंतरवैयक्तिक संबंध हमारे व्यक्तित्व की विशेषताओं पर निर्भर करते हैं और वही हमें विजेता या पराजित बनाते हैं। इन्हीं की परछाई हमारी संस्था पर भी दिखाई देती है। संस्था एवं उसका मानव संसाधन एक-दूसरे के साथ जुड़े होते हैं। दोनों में दोनों ही पक्षों की प्रतिच्छाया दिखाई देती है। अतः यह समय की मांग है कि हम बैंक के विकास हेतु स्वयं का विकास करें। यह प्रभाव जलतरंगों की तरह समाज और देश में प्रसारित होता है। ऐसा करने पर ही हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व-गुरु होने की अपनी प्रतिष्ठा की पुनर्प्राप्ति कर सकेंगे। आज इन प्रयासों की महती आवश्यकता है।

यूनियन धारा के इस अंक के द्वारा हम आप तक पहुँचा रहे हैं खुशनुमा व्यक्तित्व के गुणधर्म, दिलो-दिमाग को हिला देने वाली वास्तविकताओं से भरपूर लघुकथाओं, सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के लिए हमारे सेवानिवृत्त किंतु चिरयुवा स्टाफ सदस्यों के प्रयासों की कहानी, कुशल युवाओं की उपलब्धियाँ, अपने स्टाफ सदस्यों तथा बैंक द्वारा किये जा रहे सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रबंधन द्वारा उठाये गये नवोन्मेषी कदम, दार्शनिक भावों से युक्त काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ, संपूर्ण व्यक्तित्व की विशेषताएं तथा उनके व्यक्ति, समाज और विश्वसत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव आदि-आदि। इस अंक में हमारे कुछ सौंदर्यपरखी स्टाफ सदस्यों द्वारा लिए गये आत्मविभोर कर देने वाली प्राकृतिक छटाओं के चित्र भी हैं। आशा है यह अंक पाठकों के लिए ताजातरीन और बौद्धिक जानकारी से युक्त साबित होगा। मेरे उन सभी सहयोगियों और संवादादाताओं को हार्दिक धन्यवाद है जो अपने कैमरे की पारखी नजर और धारदार लेखनी के साथ मेरे साथ सदैव सहयोग के लिए उपस्थित रहते हैं।

भवदीय

Yours

सविता शर्मा
संपादक

Savita Sharma
Editor

Person & Personality

Personality is nothing but a balanced blend of our actions, attitudes and behavior. We have been always pursuing to be an ideal or complete personality and we often say that **no one is perfect “except Lord Krishna”**.

Personality has been defined variously by different people. But as far as I have experienced, it is a blend of all positive and good things; may it be thoughts, waves, habits or viewpoints. Why there is a person we like the most! We wish one's togetherness, we wish to be likewise, we feel cool and calm in his nearness! Why such things take place in our life. Of course, there is a thought process of the same wavelength, which attracts other people of the same attributes. This is called **A Man is Known by his Company**.

Now, what about perfect personality! I would like to say 'It is a feeling of piece, happiness and welfare that is perhaps **Satyam, Shivam, Sundaram**.

The issue, in your hands is dedicated broadly to Personality Development. Our achievements and interpersonal relationships always depend upon our personality traits and they only make us a winner or a loser and the same impact is seen in our organisation. An organisation and its human resources are interwoven with each other. Both reflect the traits of each other. Hence, this is the call of time to develop ourselves in order to develop the Institution. The impact billows like water-waves into our society, country and then only we will regain our prestige of the Universal Mentor (Vishva Guru) at the international forum. This endeavor is highly needed today.

We, by this issue of Union Dhara, provide you with the traits and symptoms of a happy personality, short stories containing mind blowing realities, endeavors of our retired but not tired retirees towards social responsibility, achievements of talented youth, cultural and social endeavors of our staff and Bank, some of the New Initiatives of our Management, poetic expressions in philosophical mood, characteristics of a compact personality and their impact upon the individual, societal and universal causes. The issue also contains some very refreshing and enchanting clicks by our talented and landscape architect staff. I hope the will prove a brain-refreshing food for all readers. Hearty compliments to all contributors and correspondents who are always beside me with their support of their highly skilled photo clicks and sharpened pens.



मानव व्यक्तित्व विकास



संसार में जन्में प्रत्येक मनुष्य का अपना-अपना व्यक्तित्व होता है, और यही व्यक्तित्व उसकी पहचान होता है. असंख्य लोगों की भीड़ में भी कोई अपने निराले व्यक्तित्व के कारण पहचाना जाता है. यही उसकी विशेषता है. प्रकृति का यह नियम है कि प्रत्येक मनुष्य की आकृति दूसरे से भिन्न होती है. आकृति का यह जन्मजात भेद आकृति तक ही सीमित नहीं होता वरन् उसके स्वभाव, संस्कार व प्रवृत्तियों में भी वैसी ही असमानता दृष्टिगोचर होती है,

और इस असमानता में ही सृष्टि का सौन्दर्य है. प्रकृति हर पल अपने को नये रूप में सजाती है. प्रतिपल होने वाले इस परिवर्तन को हम उसी तरह नहीं देख सकते, जैसे हम गुलाब के दो फूलों में अंतर नहीं कर सकते. यह दृष्टि का ही दोष है कि हमारी आंखें सूक्ष्म भेद और प्रकृति के सूक्ष्म परिवर्तनों को नहीं परख पाती हैं.

व्यक्तित्व विकास में वंशानुक्रम (Heredity) तथा परिवेश (Environment) दो प्रधान तत्त्व होते हैं. वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है. परिवेश उसे इन शक्तियों की सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है. बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है. ज्यों-ज्यों बालक बड़ा होता जाता है, वह उस समाज की शैली को आत्मसात् करता जाता है.

प्रवृत्तियों का संयम: चरित्र का आधार

चरित्र शब्द मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकट करता है. "अपने को पहचानो" शब्द का वही अर्थ है जो "अपने चरित्र को पहचानो" का है. विज्ञान ने मनुष्य शरीर को पहचानने में बहुत सफलता पाई है, किन्तु उसकी आंतरिक रचना अभी तक एक गूढ़ रहस्य बनी हुई है. शरीर के अन्दर की मशीनरी किस प्रकार काम करती है, इस प्रश्न का उत्तर अभी तक अस्पष्ट है. जो कुछ हम जानते हैं, वह केवल हमारी बुद्धि का अनुमान है. प्रामाणिक रूप से हम यह नहीं कह सकते कि यही सच है. अपने को पहचानने की इच्छा होते ही हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि हम किन बातों में अन्य मनुष्यों से भिन्न हैं? भेद जानने की यह खोज हमें पहले यह जानने को विवश करती है कि किन बातों में हम दूसरों के समान हैं. समानताओं का ज्ञान हुए बिना भिन्नता का या अपने विशेष चरित्र का ज्ञान नहीं हो सकता.

हमारी जन्मजात प्रवृत्तियाँ:

प्रत्येक मनुष्य कुछ प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है. ये स्वाभाविक जन्मजात प्रवृत्तियाँ ही मनुष्य की प्रथम प्रेरक होती हैं. मनुष्य होने के नाते सभी को इन प्रवृत्तियों की परिधि में ही अपना कार्यक्षेत्र सीमित रखना पड़ता है. इन प्रवृत्तियों का सच्चा रूप क्या है, ये संख्या में कितनी हैं, इनका संतुलन किस तरह होता है, ये रहस्य अभी तक पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाए हैं, फिर भी कुछ प्राथमिक प्रवृत्तियों का नाम प्रामाणिक रूप से लिया जा सकता है. उनमें से कुछ हैं: डरना, हँसना,

अपनी रक्षा करना, नई बातें जानने की कोशिश करना, दूसरों से मिलना-जुलना, अपने को महत्त्व में लाना, संग्रह करना, पेट भरने के लिए प्रयास करना इत्यादि. इन प्रवृत्तियों की वैज्ञानिक परिभाषा करना बड़ा कठिन काम है. इनमें से बहुत सी ऐसी हैं जो जानवरों में भी पाई जाती हैं किन्तु कुछ भावनात्मक प्रवृत्तियाँ ऐसी भी हैं जो पशुओं में नहीं होती हैं. संग्रह करना, स्वयं को महत्त्व में लाना, रचनात्मक कार्य में संतोष का अनुभव करना, दया, करुणा आदि कुछ ऐसी भावनाएँ हैं, जो केवल मनुष्यों में ही होती हैं.

प्रवृत्तियों की व्यवस्था:

ये प्रवृत्तियाँ बीज-रूप में मनुष्य के स्वभाव में सदा रहती हैं. अपनी बुद्धि से मनुष्य इन प्रवृत्तियों की ऐसी व्यवस्था कर लेता है, जिससे वे उसके व्यक्तित्व को उन्नत बनाने में सहायक हो सकें. इस व्यवस्था के निर्माण से ही मनुष्य का चरित्र-निर्माण होता है. इसी व्यवस्था का नाम योग है. इसी संतुलन को हमारे शास्त्रों ने "समत्व" कहा है. यही योग है "समत्वं योग उच्यते". यही वह योग है जिसे "योग: कर्मसु कौशलम्" कहा गया है. प्रवृत्तियों का संतुलन मनुष्य को स्वयं करना होता है. इसीलिए हम कहते हैं कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है. वह अपना चरित्र स्वयं बनाता है. चरित्र किसी को उत्तराधिकार में नहीं मिलता. अपने माता-पिता से हम कुछ व्यावहारिक बातें सीख सकते हैं, किन्तु अपना चरित्र हम स्वयं बनाते हैं.

परिस्थितियों के प्रति हमारी मानसिक प्रतिक्रिया:

कोई भी बालक अच्छे या बुरे चरित्र के साथ पैदा नहीं होता. हाँ, वह अच्छी या बुरी परिस्थितियों में अवश्य पैदा होता है, जिससे उसके चरित्र-निर्माण पर भला या बुरा असर पड़ता है. परन्तु, वास्तविकता यह है कि परिस्थितियाँ हमारे चरित्र को नहीं बनातीं, बल्कि उनके प्रति जो हमारी मानसिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं, उन से हमारा चरित्र निर्माण होता है. इस प्रक्रिया में कुछ लोग संशयशील, कुछ आत्मविश्वासी और कुछ शारीरिक भोगों में आनन्द लेने वाले विलासी बन जाते हैं. कुछ नैतिक सिद्धांतों पर दृढ़ रहने वाले तपस्वी तो कुछ लोग तुरंत लाभ की इच्छा करने वाले अधीर बन जाते हैं.

बच्चे को आत्मनिर्णय का अधिकार है:

जीवन के तीसरे वर्ष से ही बालक अपना चरित्र बनाना शुरू कर देते हैं. परिस्थितियों के प्रति मनोभाव बनाने में भिन्न-भिन्न चरित्रों वाले माता व पिता से वे बहुत कुछ सीखते हैं. अपने अध्यापकों से या साथियों से भी सीखते हैं. किन्तु जो कुछ वे देखते हैं या सुनते हैं, सभी कुछ ग्रहण नहीं कर सकते. क्योंकि, सब इतना परस्पर-विरोधी होता है कि उसे ग्रहण करना संभव नहीं होता. ग्रहण करने से पूर्व उन्हें चुनाव करना होता है कि कौन से गुण ग्राह्य है. यही चुनाव का अधिकार बच्चे को भी आत्मनिर्णय का अधिकार देता है. चरित्र निर्माण के लिए उसे परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की नहीं बल्कि आत्मनिर्णय की शक्ति को प्रयोग में लाने की आवश्यकता होती है.

प्रवृत्तियों को रचनात्मक कार्य में लगाना:

आत्मनिर्णय के अधिकार का प्रयोग तभी हो सकता है जब मनुष्य के अधीन कार्य करने वाली शक्तियाँ उसके वश में हों. जैसे शासक अपने निर्णय का प्रयोग तभी कर सकता है, जब उसकी प्रजा उसके वश में हो. इसी प्रकार यदि हमारी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ हमारे वश में होंगी, तभी हम आत्मनिर्णय कर सकेंगे. एक भी प्रवृत्ति विद्रोही हो जाए, तो हमारी सम्पूर्ण नैतिक व्यवस्था भंग हो जाएगी. अतः हमारी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ ही हमारे चरित्र की सबसे बड़ी दुश्मन होती हैं. इसका अभिप्राय यह नहीं है कि उन प्रवृत्तियों को मारना होगा. वास्तव में उन्हें मारना न

तो संभव है और न हमारे जीवन के लिए अभीष्ट. हमें उनकी दिशा में परिवर्तन करके उन्हें रचनात्मक कार्यों में लगाना होगा. ये प्रवृत्तियाँ उस जलधारा की तरह हैं जिसे नियंत्रण में रखकर खेत सींचे जा सकते हैं, बिजली पैदा की जा सकती है, परंतु अनियंत्रित होकर ये बड़े-बड़े शहरों को भी तबाह कर सकती हैं.

स्थितप्रज्ञ कौन है ?

इन प्रवृत्तियों का संयम ही चरित्र का आधार है. संयम के बिना मनुष्य शुद्ध विचार नहीं कर सकता. गीता में कहा गया है कि इन्द्रियों की प्रवृत्तियाँ जिसके वश में हों, उसी की प्रज्ञा प्रतिष्ठित होती है. प्रज्ञा तो सभी मनुष्यों में है, बुद्धि का वरदान मनुष्य मात्र को प्राप्त है, किंतु प्रतिष्ठितप्रज्ञ या स्थितप्रज्ञ वही होगा जिसकी प्रवृत्तियाँ उनके वश में होंगी. जिसकी बुद्धि स्वाभाविक प्रवृत्तियों को वश में नहीं कर सकेगी, वह कभी सचरित्र नहीं बन सकता है.

बुद्धिपूर्वक संयम ही सच्चा संयम है:

जीवन के समुद्र में जब प्रवृत्तियों की आँधी आती है तो केवल बुद्धि का मस्तूल ही पार लगाता है. जैसे पवन के रूप में आँधी सदैव आकाश में विद्यमान रहती है, वैसे ही ये विषय भी सदा प्रवृत्तियों के रूप में मनुष्य में विद्यमान रहते हैं. जिस प्रकार पवन कुछ आकाशीय तत्त्वों के सम्मिलन से तीव्र हो कर विनाशकारी आँधी बन जाता है, उसी प्रकार हमारी प्रवृत्तियाँ भी भावनाओं के विशेष मिश्रण से तीव्र हो वासनाएं बन जाती हैं. इन प्रवृत्तियों का पूर्ण दमन नहीं हो सकता है, पर बुद्धि द्वारा उन्हें कल्याणकारी दिशाओं में प्रवृत्त अवश्य किया जा सकता है.

संयम की कठिनाइयाँ:

संयम शब्द जितना साधारण है, उसे क्रियात्मक रूप देना उतना ही कठिन कार्य है. कारण यह है कि जिन प्रवृत्तियों को हम संयत करना चाहते हैं. वे हमारी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ होती हैं उनका जन्म हमारे जन्म के साथ ही हुआ है. इसके अतिरिक्त उनका अस्तित्व भी हमारे लिए आवश्यक है. क्योंकि उन प्रवृत्तियों के बिना हम कोई चेष्टा नहीं कर सकते. उदाहरण के लिए – हम भयभीत तभी होते हैं जब किसी प्रतिकूल व्यक्ति या परिस्थिति से युद्ध करने में अपने को असमर्थ पाते हैं उस समय भय की भावना जागृत होती है, जो येन केन प्रकारेण हमें अपनी रक्षा करने को प्रेरित करती है. ऐसे में यदि हम बच निकलने का उपाय न करें तो मुसीबत में पड़ सकते हैं अतः भय ही हमें यह बतलाता है कि अब यह रास्ता बदलकर नया रास्ता पकड़ो.

भय का भी प्रयोजन है:

भय के हितकारी प्रभावों से भी हम इंकार नहीं कर सकते हैं परंतु, इस प्रभाव को अस्थायी मानकर इसे क्षणिक महत्त्व देना ही उपयुक्त होता है. यदि भय हमारे स्वभाव में आ जाए तो हम सदा असफल होने की भावना से ग्रस्त हो जाएंगे. जिस प्रकार शेर पीछे हटकर हमला करता है, मनुष्य ऊँची छलांग मारने के लिए नीचे झुकता है, ठीक उसी प्रकार भय से नई स्फूर्ति और नया संकेत लेने के बाद मनुष्य नया पुरुषार्थ करने का संकल्प लेता है.

जब भय हमारा साथी बन जाता है:

निरंतर असफलता और प्रतिकूलताओं से युद्ध करने की अशक्तता हमारे भय को स्थायी बना देती है. ऐसे में हम छोटी से छोटी प्रतिकूलता से भी भयभीत होने लगते हैं. कुछ लोग जिन्हें बादलों में बिजली की कड़क का वैज्ञानिक कारण मालूम नहीं होता, वे यह कल्पना कर लेते हैं कि दो अलौकिक दैत्य आकाश में युद्ध कर रहे हैं. वे प्राकृतिक घटनाओं को भूत-प्रेतों की लड़ाइयाँ मानकर सदा भयातुर रहने का अभ्यास डाल लेते हैं. वे सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पुच्छलतारा, महामारी आदि भौतिक घटनाओं को भयानक व विनाशक मानकर सदैव भयभीत रहते हैं. विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि ये घटनाएँ विनाशक नहीं हैं, परंतु उनकी प्रवृत्ति उन्हें ऐसा न मानने के लिए विवश करती है.

भय की पूजा:

जिन वैज्ञानिकों ने मनुष्य को इन मिथ्या भयों से छुटकारा दिलाने का यत्न किया था उन्हें मृत्यु-दंड तक दिया गया था. बात यह है कि भय की यह भावना मनुष्य को कुछ अलौकिक शक्तियों पर श्रद्धा रखने की प्रेरणा देती है. श्रद्धा में आनन्द भी होता है, और वही आनन्द भय पैदा करने वाली वस्तुओं पर श्रद्धा रखने में आने लगता है. ये मनोभावनाएँ जब आनन्दप्रद हो जाएं तो समझना चाहिए कि हमारा रोग असाध्य नहीं तो दुःसाध्य अवश्य हो गया है. भय से बचने का उपाय सोचने के स्थान पर मनुष्य जब भय की पूजा शुरू कर दे तो भय से मुक्ति की आशा बहुत कम रह जाती है. हमारा ध्येय यह है कि मनुष्य भय की प्रवृत्ति को वश में करें, न कि उसका गुलाम बन जाए.

जब भय का भूत विशाल हो जाता है:

मनुष्य भय की प्रवृत्ति का दास किस तरह बन जाता है, यह भी एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है. अगर एक पागल कुत्ता आपको पीछा करता है तो निश्चय ही आपको उस कुत्ते से डर लगने लगता है और आपको उससे डरने की आदत भी पड़ जाती है. यह आदत युक्ति युक्त है. इसका इतना ही मतलब है कि आपको पागल कुत्ते को काबू में करने का उपाय नहीं मालूम है, किन्तु जब आपको दूसरे कुत्तों से भी भय होने लगे तो समझ लीजिए कि भय की आदत आपको वश में करने लगी है. देखा यह गया है कि कमजोर दिल के आदमी पागल कुत्ते से डरने के बाद सभी कुत्तों से डरना शुरू कर देते हैं. यह डर बढ़ता-बढ़ता यहाँ तक पहुँच जाता है कि उन्हें सभी चौपायों से भी डर लगने लगता है. इसका प्रभाव मनुष्य के चरित्र पर स्थायी होता जाता है. वह सदा के लिए भयभीत हो जाता है, उसे जीवन का हर क्षण मृत्यु का संदेश देता प्रतीत होता है. हवा की मधुर मरमर में तूफान की भयंकर गर्जन सुनाई देने लगती है और पत्तों के हिलने में प्रलय के तांडव का दृश्य दिखाई देने लगता है. ऐसे में निर्भय होने का संकल्प ही भय को जीतने का उपाय होता है.

जिस प्रकार मनुष्य में प्रतिकूलता से डरने की प्रवृत्ति होती है, उसी तरह प्रतिकूलताओं से युद्ध कर अपनी प्रतिष्ठा रखने की प्रवृत्ति भी होती है. इन प्रवृत्तियों को जागृत करके मनुष्य जब भय को जीतने का संकल्प कर लेता है, तो वह स्वयं निर्भय हो जाता है. मनुष्य की एक प्रवृत्ति दूसरी प्रवृत्ति का सन्तुलन करती रहती है. जिस तरह प्रवृत्तियाँ स्वाभाविक हैं, उसी तरह संतुलन भी स्वाभाविक प्रक्रिया है. प्राकृतिक अवस्था में यह कार्य स्वयं होता रहता है. किन्तु, आज हमारा जीवन केवल प्राकृतिक अवस्थाओं में से नहीं गुजरता है. विज्ञान के कारण हमारा जीवन प्रतिदिन अप्राकृतिक और विषम होता जा रहा है. हमारे आस पास की परिस्थितियाँ असाधारण होती जा रही हैं. हमारा जीवन अधिक वेगवान होता जा रहा है. संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है. जीवन में सफल होने के लिए अनेकों बार हमें जान लड़ाकर कोशिश करनी पड़ती है.

मानव चरित्र को परखना बड़ा ही कठिन कार्य है. कठिन केवल इसलिए नहीं है कि उसमें विविध तत्त्वों का मिश्रण है, बल्कि इसलिए भी कि नित्य नई परिस्थितियों के आघात-प्रतिघात से वह बदलता रहता है. चरित्र चेतन वस्तु है व परिवर्तन उसका स्वभाव है. प्रयोगशाला की परीक्षण नली में रखकर उसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता. हर बालक एक अनगढ़ पत्थर की तरह होता है, जिसमें सुन्दर मूर्ति छिपी होती है, शिल्पी उस पत्थर को तराश कर सुन्दर मूर्ति में बदल देता है. चूंकि, मूर्ति पहले से ही पत्थर में मौजूद होती है, शिल्पी तो बस जिसमें मूर्ति ढकी है, उस फालतू पत्थर को काट कर हटा देता है. इसी प्रकार माता-पिता, शिक्षक और समाज बालक को सँवार कर एक खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते हैं.

कृष्ण कुमार यादव
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई



श्रीमद्भगवद्गीता में

मानव संसाधन प्रबंधन

आर. आर. मोहन्ती
मानव सं. प्र. एवं का. विभाग
कें.का., मुंबई.



इस तथ्य में किंचित् मात्र भी संदेह नहीं है कि प्रबंधन आज के युग में अपना अलग ही महत्व रखता है। चाहे घर हो या दफ्तर, प्रबंधन उस विधा का नाम है जो व्यक्तियों को एक निश्चित उद्देश्य के लिए एक दिशा में एकजुट होकर कार्य करने को प्रेरित करती है। प्रबंधकीय कौशल हमें तनाव, संघर्ष तथा कम उत्पादन क्षमता से सौहार्दपूर्ण वातावरण प्रदान करने में सहायक होते हैं। गीता के छोटे से उपदेश ग्रंथ में हर प्रकार के व्यक्ति और व्यक्तित्व के लिये परामर्श है, पारिस्थितिकीय समस्यायें, धर्म की उलझनें और दैनिक जीवन की आर्थिक-धार्मिक-सामाजिक आवश्यकतायें, उन अनंत आवश्यकताओं से जन्म लेने वाली चिंतायें, उनके समस्या-समाधान के लिये खोजी जाने वाली प्रणालियाँ और प्रयास हैं। वस्तुतः गीता तो एक फार्मूला है जिसे किसी भी सवाल को हल करने के लिये उपयोग में लाया जा सकता है। गीता हर परिस्थिति को एक विशेष दृष्टिकोण से देखती और हल करती

है। दृष्टिकोण का यही अंतर गीता के उपदेश हमें प्रदान करते हैं। गीता का हर उपदेश एक अलग चश्मे के समान है जो हमें विभिन्न प्रकार की समस्याओं के साथ निपटने की दिशा और समाधान की दशा देता है।

नेतृत्व-सैद्धांतिक रूप से एक सक्षम नेतृत्व विभिन्न मनोवृत्तियों के सही मिश्रण वाली टीम का निर्माण करता है। हाँलाकि यह कार्य मुश्किल है किंतु असंभव नहीं। यह भी देखा गया है कि यदि एक समान मनोवृत्तियों वाले लोग एकसाथ कार्यरत हो जायें तो संस्था के कार्य का सुचारु रूप से जारी रहना कठिन हो जाता है। इसी प्रकार लोगों की मनोवृत्तियों का अनुचित सम्मिश्र भी टीम और नेता - दोनों के लिये हानिकारक तथा प्रभावहीन साबित होता है। सही नेतृत्व यह भलीभाँति जानता है कि उसे संख्यात्मक निर्णय लेने चाहिये या गुणात्मक. शाखाओं / कार्यालयों में अधिक संख्या में जनबल तैनात करने के बजाय कम संख्या में अधिक बुद्धिमान एवं सक्षम कार्मिकों को तैनात करना उचित रहता है। कई बार एक बुद्धिमान का

चयन अधिसंख्यक बुद्धिहीनों की तुलना में लाभप्रद रहता है। नाम को तो वह बुद्धिमान व्यक्ति अर्जुन के सारथी थे और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन्होंने शस्त्र भी नहीं उठाया था, फिर भी उनके पांडव-पक्ष में होने के कारण पांडवों की विजय सुनिश्चित थी।

“यतः कृष्णः ततः सर्वे यतः कृष्णस्ततो जयः”

यह तो निश्चित है कि यदि राजनीतिज्ञ, ज्ञानवान, दूरद्रष्टा और कूटनीतिज्ञ कृष्ण पांडवों के पक्ष में न होते तो पांडवों



के पक्ष में महाभारत के युद्ध का निर्णय होना असंभव ही था. दूसरी ओर उनकी अपनी ही दस करोड़ से अधिक यादव सेना कौरवों के पक्ष में थी जिसके विरुद्ध कृष्ण स्वयं खड़े थे. संख्या-बल को चुनते समय दुर्योधन इस मंत्र पर विचार क्यों नहीं कर पाया कि कभी भी अपने ही सेनापति/स्वामी के विरुद्ध उसकी ही सेना प्रतिपक्ष से नहीं लड़ सकती. ऐसी व्यवस्था करके पार्थसारथी ने अपनी बड़ी सशस्त्र सेना के प्रभाव को युद्ध से पहले ही प्रभावहीन कर दिया था. यहाँ पार्थसारथी की कूटनीतिक चाल नजर आती है जिसे न तो कौरव समझ पाये और न ही पांडव. तथापि पार्थसारथी के हाथों में स्वयं को समर्पण करके पांडु-पुत्रों ने अपने लिये सुनिश्चित विजयश्री का चयन कर लिया था. जब सक्षम नेतृत्व हो, समर्पित किंतु शक्तिशाली और बुद्धिमान अनुगामी हों, तो उस समूह/इकाई/सेना की विजय शतप्रतिशत निश्चित होती है. यही गीता का उपदेश हमें सिखाता है.

सम्प्रेषण कौशल- एक सक्षम नेता और टीम के लिए उचित एवं सम्पूर्ण सम्प्रेषण भी अपना एक अलग महत्व रखता है. गीता हमें यह सोचने पर विवश करती है कि एक से एक ज्ञानियों से भरे युग में महर्षि वेद-व्यास ने संजय को ही दिव्य-दृष्टि क्यों दी थी ? तो इसका उत्तर यह है कि महर्षि ने उन्हें ही इस कार्य के लिये इसलिये चुना क्योंकि वे ही इस कार्य के लिये उचित पात्र थे. अपनी सम्प्रेषण क्षमता तथा तटस्थ दृष्टिकोण के कारण वे अपने ही परिवार के दो पक्षों को संघर्ष करते हुए वर्णन कर पाये.

अनासक्त कर्म- जहाँ एक ओर संजय में अद्भुत सम्प्रेषण क्षमता, तटस्थता, अनासक्ति का सम्मिश्रण है वहीं दूसरी ओर वे कर्मयोगी भी हैं. वे वर्णन तो एक ही परिवार के दो पक्षों के बीच हो रहे युद्ध का कर रहे हैं किंतु बिना किसी का पक्ष लिये और बिना भावनाओं से ग्रस्त हुए. वे सिर्फ वर्णन करते हैं, उस वर्णन में लिस नहीं होते. इसी कारण उनके द्वारा किया गया वर्णन विश्वसनीय माना गया और उस पर भरोसा किया गया. संजय को ही उक्त कार्य का सौंपा जाना **“सही व्यक्ति-सही काम”** को भी परिभाषित करता है. कार्यालय में पत्राचार तथा सम्भाषण करते हुए संजय के संप्रेषण कौशल से शिक्षा ली जा सकती है कि हमारा संप्रेषण चाहे लिखित हो या मौखिक - निष्पक्ष और अनासक्त तथा भावना-विहीन होना चाहिये तभी हम कार्यालयीन प्रक्रियाओं और प्रणालियों के साथ न्याय कर पायेंगे. सरल भाषा में कह सकते हैं कि दफ्तर के काम दिल से नहीं - दिमाग से काम करने चाहिये. ध्यान देने योग्य बात है यहाँ, कि दिल भावना-प्रधान होता है तथा दिमाग तर्कप्रधान होता है. इसी तथ्य को उपदेशात्मक तरीके से कहा गया है.

उचित व्यक्ति-उचित कार्य-

1) इसी ग्रंथ में एक जगह और मानव संसाधन प्रबंधन तथा सम्प्रेषण कौशल दोनों एक साथ दिखाई देते हैं जब धर्मराज युधिष्ठिर से 'अश्वत्थामा हतः- नरो वा कुंजरो' कहलवाया जाता है. श्रीकृष्ण को पता था कि इस खबर की पुष्टि होने पर ही द्रोण-वध हो सकता है और वाक्-सत्यता में युधिष्ठिर की पुष्टि ना मांगी जाये- ऐसा असंभव था. इसलिये इस सूचना की पुष्टि के लिये पार्थ-सारथी अचूक मानव-संसाधन-प्रबंधन की अपनी क्षमता दर्शाते हुए धर्मराज का यथास्थान और यथोचित उपयोग करते हैं. धर्मराज ने सम्प्रेषण तो पूरा ही किया था किंतु वातावरणीय कोलाहल के कारण वह पूर्ण हो नहीं पाया था. इस बात से सम्प्रेषण में पारिस्थितिकीय बाधाओंका महत्व ज्ञात होता है. साथ ही पारिस्थितिकीय बाधाओं का सकारात्मक एवं अनुकूल उपयोग भी इस सम्प्रेषण में दर्शाया गया है. यदि 'नरो वा कुंजरो' कहते समय शेष पांडव कृष्ण के संकेत पर शंख, ढोल, नगाड़ों तथा दुंदुभियों का कोलाहल ना मचाते तो संप्रेषण तो पूर्ण हो जाता किंतु उद्देश्य अपूर्ण रह जाता. यह है प्रतिकूलतम तथ्यों का अनुकूलतम उपयोग- जो गीता

हमें सिखाती है.

2) भीष्म-वध में शिखंडी का उपयोग कुरुश्रेष्ठ की रुढ़िगत संकीर्ण मान्यताओं(कि शिखंडी नया जन्म लेने के बावजूद स्त्री ही है और इसीलिये भीष्म उस पर शस्त्र नहीं उठायेगा) का लाभ लेते हुए अपेक्षाकृत कम परिश्रम से अधिक परिणाम पाने तथा सर्वश्रेष्ठ मानव-संसाधन प्रबंधन की प्रक्रिया को दर्शाता है. यदि शिखंडी सामने ना होते तो क्या अर्जुन भीष्म का वध नहीं कर सकते थे ? अवश्य कर सकते थे. बल और पराक्रम के कारण नहीं बल्कि धर्म और पार्थसारथी का अपने पक्ष में संयोग होने के कारण. फिर भी सूत्रधार ने भीष्मवध में लगने वाली ऊर्जा के व्यय को कम और कमतर करने के लिये शिखंडी का सदुपयोग किया. गीता हमें सिखाती है कि किस प्रकार नकारात्मक तत्वों का उपयोग सकारात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये किया जा सकता है.

3) भीम और हिडिंबा के पुत्र घटोत्कच को युद्ध में कब और कैसे उपयोग किया गया, हम सभी जानते हैं. घटोत्कच का सामना कौरव सेना नहीं कर सकती थी. और घटोत्कच महारथी कर्ण को इन्द्रदेव द्वारा प्रदान की गई शक्ति को नहीं झेल सकता था. वस्तुतः उस शक्ति का सामना तो कोई भी नहीं कर सकता था. इसीलिये युद्ध के सूत्रधार अर्जुन को तब तक कर्ण के साथ युद्ध में आमना-सामना होने से बचाते हैं, जब तक कि महारथी कर्ण उक्त शक्ति का उपयोग घटोत्कच पर नहीं कर लेते. उस शक्ति के समाप्त हो जाने के बाद अर्जुन महारथी कर्ण से निरापद थे. दूसरी ओर, पांडव-पक्ष घटोत्कच को दैत्य-पुत्र होने के कारण वह सम्मान न दे पाता, जो शेष पांडव-पुत्रों को प्राप्त होता. इसलिये घटोत्कच की शक्ति का शत्रु के विरुद्ध उपयोग करके एक ओर घटोत्कच को पांडव पक्ष से सम्मान दिलाया गया तथा दूसरी ओर भावी पारिवारिक कलह को भी टाल दिया गया. यह भी एक दूरदृष्टा नेता की सोच और सही व्यक्ति के सही इस्तेमाल को दर्शाता है. सही व्यक्ति का सही स्थान और अवसर पर सही उपयोग के उदाहरण समूची गीता में यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं.

कार्य संस्कृति- गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि फल की आशा और आसक्ति से किये गये कार्य अशांति और असंतोष देते हैं जबकि बिना फल की आशा किये सिर्फ उत्कृष्टता के लिये गये कार्य समत्व, आनंद, निर्भीकता, पवित्रता, आत्म-नियंत्रण तथा समर्पण आदि भावनाओं को जन्म देते हैं. इनमें लालच, छिद्रान्वेषण आदि की कोई गुंजाइश नहीं होती. एक स्थान पर यह भी आया है **योगाः कर्मसु कौशलम.** अर्थात् कर्म करने का कौशल ही योग है. शांत मन तथा समत्व बुद्धि से किया गया कर्म ही योग है. कर्म करने की विधि नैतिक तथा सबके लिए हितकारी हो और जब हमारे इस प्रकार के कर्म में समर्पण सम्मिलित हो जाता है तो यह पूजा बन जाता है और हम कहते हैं- कर्म ही पूजा है. दफ्तर के कार्य में यदि सफलता मिले तब भी इसका श्रेय कर्ता को ही नहीं जाना चाहिए. सारी टीम के एकजुट प्रयासों से ही सफलता मिलती है. यहीं पर गीता में कहा गया है कि कर्तापन का अभिमान छोड़ा जाना चाहिए. यदि कार्य में असफलता मिलती है तो इसका श्रेय भी केवल कर्ता का नहीं होना चाहिए. कार्य करते समय उचित भूमिका, तत्परता, त्याग तथा सबके कल्याण की भावना हो तो वह कार्य निष्काम कर्म में बदल जाता है.

आज के युग में, जब कॉर्पोरेट जगत भी नैतिक मूल्यों को अपने कारोबार का आधार बना रहा है, गीता भारत का राष्ट्रीय ग्रंथ बने न बने, कोई फर्क नहीं पड़ता. यह तो स्वयं ही सार्वभौमिक गुरु ग्रंथ है जो हर छोटे-बड़े, उंचे-नीचे तथा विश्व के हर मनुष्य-मात्र का मार्गदर्शन करता है.

माँ

मानवीय भावनाओं को मुट्टियों में जकड़कर
मेरी धर्म पत्नी ने कहा एक दिन मुझसे अकड़कर
में आधुनिक महिला और वो भारत की पिछड़ी नारी
इस घर में रहेगा एक या तो मैं या माँ तुम्हारी
ना बोलने का ढंग ना बात करने का सलीका
देखने से एकदम काम वाली लगती है
उसे देखकर मेरी सारी सहेलिया हँसती हैं
उनकी संगति में बिगड़ रहे है बच्चे
ऐसी दादी से तो बिन दादी के अच्छे
आँखें भर आयी, अजब परीक्षा की घड़ी थी
एक तरफ माँ, तो दूसरी तरफ धर्मपत्नी खड़ी थी
मस्तिष्क पर खिंच गयी लकीरें, याद आ गया बीता हुआ कल
जाने किन परिस्थितियों से लड़ कर, माँ ने संभाला था हर पल,
चार घरों में काम करके, जब उसे मिलता था रोटी का टुकड़ा,
खुद भूखे रह कर भी उसे याद रहता था मेरा मुखड़ा,
अपना पेट काटकर वह मुझे खिलाती थी,
थक हार कर खुद भूखे सो जाती थी,
मुझे ओढ़ाकर वह खुद ठंड में ठिठुरती रही,
मैं पढ़ सकूँ इसलिए मास्टर जी के घर काम करती रही,
देख, उसके जर्जर शरीर को जिसका मैं ही सहारा हूँ
पहले उसका बेटा, फिर पति तुम्हारा हूँ
आधुनिकता की चकाचौंध में तू क्यों पड़ती है
जिस माँ को दुल्कार रही उसी का बेटा तेरा पति है,
तू भी माँ है कल जब तेरा बेटा ये पल दोहराएगा
खुद-ब-खुद उस दिन तुझे अपने सारे सबालों का जवाब मिल जाएगा.

— अनूप कुमार वर्मा
लखनऊ मुख्य शाखा

माँ की बेटी

कसूर तेरी जिद का नहीं, कसूर जज्बातों का है,
माँ तेरी बेटी है दुखी, कसूर हालातों का है.
तूने अपनी कोख में समेट रखा था मुझे, आज किस्मत ने बिखेर दिया.
हर नजर से बचाती रही तू, आज अंधों ने ही घेर लिया.
तेरी मोहब्बत का कसूर है, जो आज जिंदा मरी हूँ मैं,
खूब मुश्किल से तेरे घर में, डर-डर कर पली हूँ मैं.
एक बार जो कोशिश की, मैंने कुछ दूर उड़ने की,



किसी शिकारी ने मुझे फिर अपना शिकार किया.
तेरा कसूर नहीं, मैं कसूर हूँ उस कातिल का,
क्यों मुझे पैदा कर तूने वक्रत बर्बाद किया.
जाने कितनी जंजीरों में जकड़ना है मुझे,
कितनी कठिनाई में आगे बढ़ना है मुझे
हर किसी के हाथ की कठपुतली बनना भी मैंने स्वीकार किया.
इस युग में लड़ रही हूँ मैं, अपनी पहचान के लिए,
जाने कितने चेहरों ने, मेरा बहिष्कार किया.
क्यों जन्म देती है माँ, बुराई मोल लेती है माँ...
क्यों इस समाज ने, बेटियों को अस्वीकार किया.
बेटी कोई अभिशाप नहीं, वरदान है भगवान का,
जाने कितने राक्षसों ने, देवियों को मार दिया.
कसूर तेरी जिद का नहीं, कसूर जज्बातों का है

— शिवानी भाटिया
गदरपुर शाखा, हल्द्वानी

सकारात्मक सोच – एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

सकारात्मक सोच वह दृष्टिकोण है, जिसमें किसी भी व्यक्ति में परिस्थिति, घटना या परिवेश के उजाले पक्ष के बारे में सोचने की प्रवृत्ति जागती है. कहा भी गया है “उम्मीद पर दुनियां टिकी है.” वास्तव में यही “उम्मीद” सकारात्मक सोच का बीजमंत्र है. सकारात्मक सोच का व्यवहारिक पहलू यह है कि इसे जीवन में अपनाकर व्यक्ति सफलता के शिखर तक पहुँच का प्रयास करता है और यह उसके व्यक्तित्व के विकास का अनिवार्य अंग बनती है.

“व्यक्ति जैसा सोचता है, उसकी धारणा वैसी होती जाती है.” यानी कि व्यक्ति की सोच का धरातल तैयार करने में उसकी सोच का बहुत महत्व है. साथ ही व्यक्ति की सोच से उसका मानसिक धरातल तैयार होता है. वास्तव में “व्यक्ति की मानसिकता उसके कार्यों को प्रभावित करती है तथा व्यक्ति के कर्म ही परिणाम तैयार करते हैं.”

प्रसिद्ध विद्वान एवं उद्योगपति हेनरी फोर्ड का कहना है कि :

“जब तुम सोचते हो कि तुम सफल हो सकते हो और जब तुम सोचते हो कि तुम सफल नहीं हो सकते हो, दोनों ही परिस्थिति में तुम ठीक सोचते हो.”

यानी कि सफल होना या न होना, यह दोनों ही सकारात्मक एवं नकारात्मक सोच पर निर्भर करता है.

एक नया नया साइकिल चलाना सीखने वाला व्यक्ति सड़क के बीचों-बीच पत्थर को देख कर डर जाता है. वह सोचता है कि कहीं वह पत्थर से टकरा न जाये. जबकि उस पत्थर के आसपास निकलने के लिए पर्याप्त जगह है, लेकिन पत्थर से टकराने का डर, उसकी सकारात्मक सोच को शून्य कर देती है और वह व्यक्ति न चाहते हुए भी साइकिल को दायें या बायें मोड़ने के विकल्प को भूल जाता है और नकारात्मक सोच के कारण वह पत्थर से टकरा जाता है.

“आधे भरे एवं आधे खाली गिलास” के संबंध में गिलास के आधे हिस्से को भरा देखने वाला व्यक्ति सक्रिय सकारात्मक सोच की श्रेणी में आता है. क्योंकि वह यह उम्मीद करता है कि : “यह आधा गिलास आगे भर भी सकता है.” और इसके प्रति प्रयास भी करेगा. जबकि गिलास को आधा खाली देखने वाला व्यक्ति निष्क्रिय सोच वाला व्यक्ति होगा, वह सोचेगा कि धीरे-धीरे गिलास और खाली होता जायेगा और एक दिन यह पूरा खाली हो जायेगा. इस तरह से वह व्यक्ति कार्य के प्रति निष्क्रिय हो जायेगा.

सोच का व्यक्तित्व पर प्रभाव:

वैज्ञानिक तौर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हर व्यक्ति के चारों तरफ एक सूक्ष्म ऊर्जा का संचार होता रहता है. सकारात्मक सोच वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व हँसमुख, कार्यशील रहेगा तथा वह अपने साथ-साथ अपने सहकर्मियों में उत्साह का संचार करता रहेगा. जबकि नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व क्रोध, निराशा, असफलता एवं अवसाद से भरा रहेगा, ऐसा व्यक्ति स्वयं अपने को एवं सहकर्मियों के बीच प्रभावी नेतृत्व प्रदान नहीं कर सकता है.

सकारात्मक सोच विकसित करने हेतु प्रयास:

जीवन में सतत प्रयास से अपने व्यक्तित्व को सकारात्मक बनाया जा सकता है, इसके लिए निम्न बातों को जीवन में अपनाया चाहिए:

- स्वयं पर विश्वास करें. • हर स्थिति में प्रसन्न रहने का प्रयास करें. • आशावादी रहें. • हर परिस्थिति, समस्या एवं घटना में सकारात्मक पहलू को ढूँढने का प्रयास करें. • विपरीत परिस्थितियों में विचलित न हों. • खाली समय में प्रेरणादायक एवं सफल व्यक्तियों की जीवनी तथा प्रेरक प्रसंग पढ़ें, यह विचारधारा को बदलने में

सहायक सिद्ध होंगी एवं सकारात्मक सोच विकसित करेगी. • नकारात्मक सोच को अपने ऊपर हावी न होने दें, क्योंकि यह अवसाद का कारण बनता है.

“चारों तरफ शत्रु से घिरा, सकारात्मक सोच वाला सैनिक मृत्यु को आलिङ्गन करने के बजाय चारों दिशाओं में अंधाधुंध गोलियां चलायेगा, तथा इससे वह शत्रु में भय पैदा करने का प्रयास करेगा, इससे संभवतः शत्रु मैदान छोड़ कर भी भाग जाये.”

सकारात्मक सोच और मानसिक तनाव:

हमेशा यह सोचना कि उसका साथी उसको गलत जानकारी देकर उसको धोखा देगा, उचित नहीं है.

“हमेशा, हर कोई गलत नहीं होता है” एक सर्वेक्षण में यह तथ्य सामने आया है कि व्यक्ति के 78% साथी सही होते हैं. 12% उसे साथ देना तो चाहते हैं परन्तु अपनी शर्तों के अनुसार तथा 10% साथी समस्याओं को जन्म देते हैं एवं उसको हानि पहुँचाने की कोशिश करते हैं.

यहां सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति 78% अच्छे साथियों को अपना साथी बनायेगा और बाकी को नजरअंदाज करेगा.

बैंकर के दृष्टिकोण में सकारात्मक सोच का महत्व:

सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति पुरानी बातों को भूल कर समझौते का रास्ता निकालता है. सकारात्मक सोच के चलते व्यक्ति अपने दोस्तों से दूरी नहीं बनाता है और अपनी मानसिकता को बदलते हुए, अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने के लिए प्रेरित होता है.

शाखा प्रमुख की हैसियत से कार्य करते हुए, एक बैंकर को सकारात्मक सोच रखना बहुत उपयोगी है. शाखा की सफलता में सकारात्मक सोच का बहुत महत्व है और यही बैंकर के व्यक्तित्व विकास एवं उन्नति का अनिवार्य अंग भी बनता है.

जोखिम कम करने में सहायक है, सकारात्मक सोच:

बंदरगाह पर खड़ा जहाज सुरक्षित है, लेकिन उसकी उपयोगिता तभी है जब वह समुद्र के बीच उतर कर अपने गन्तव्य स्थान की तरफ चले और लक्ष्य तक पहुँचें. नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति सोचेगा कि जहाज तूफान में फंस जायेगा.

जबकि सकारात्मक सोच वाला चालक सुरक्षात्मक उपाय अपनाते हुए, समुद्र में जहाज को उतारेगा, और गंतव्य स्थान पर पहुँचेगा.

इस तरह से जीवन में सोच का बहुत महत्व है. बचपन से ही अपने व्यक्तित्व में सकारात्मक सोच को स्थान देना चाहिए और उसे विकसित करने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की उंचाइयों तक पहुँचने में व्यक्ति सक्षम हो सके.

संतोष श्रीवास्तव
एस.टी.सी., भोपाल



आत्मविश्वास

सत्यनिष्ठ मनुष्य जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकता है. वह अपने प्रयास इतने आत्म-विश्वास के साथ करता है कि उसमें आकर्षण और सफलता दोनों ही विद्यमान रहते हैं. सभी मनुष्यों के मन में एक महान लक्ष्य होता है, एक ऊंचा उद्देश्य या कोई विशाल योजना होती है, किन्तु मार्ग में पहली कठिनाई आते ही उसके अनुकूल जीवन जीने का संकल्प और उस दिशा में निरंतर आगे बढ़ने का निश्चय डोल जाता है.

भर्तृहरि कहते हैं—कुछ लोग बाधा न आने तक आगे बढ़ते हैं, किन्तु बहुत लोग ऐसे भी होते हैं जो बाधाओं के भय से कोई कार्य हाथ में ही नहीं लेते. जीवन-पथ पर जब कोई अनपेक्षित घटना घटती है तो दृढ़ता की परीक्षा होती है. उस समय सत्य-निष्ठा की जांच होती है. कभी-कभी यह परीक्षा बड़ी अनुदार और कठोर होती है. यदि सत्य-निष्ठा में विश्वास और आदर्श गहरी जड़ें जमाए हैं, तो वह खरी सिद्ध होती है. उस समय सत्यनिष्ठ व्यक्ति संघर्ष के लिये अधिक सशक्त बन जाते हैं. इस प्रकार सशक्त बन व्यक्ति जब सत्यनिष्ठा के साथ जीवन के कठिन मार्ग पर आगे बढ़ता है तथा बाहरी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है, तो उसके अंदर नये उत्साह का संचार होता है. वह अपने एक संकल्प के पूरे होने पर दूसरा बड़ा संकल्प लेता है. इस तरह वह अपने को विशाल बनाता जाता है और अधिक कुशलता अर्जित करके सफलता की ओर बढ़ता जाता है. प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहता है. सफलता की आवश्यकता अगर उतनी ही तीव्र हो जितनी कि डूबने वाले को हवा की होती है, तो वह प्रयास करने वाले व्यक्ति को जरूर मिलेगी. सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा लक्ष्य को प्राप्त करने की गहरी इच्छा शक्ति से आती है. व्यक्ति के अंदर इतनी शक्ति होती है कि वह जो कुछ भी सोचता है और जिसमें यकीन करता है, उसे हासिल भी कर सकता है. सभी कामयाबियों की शुरुआत, उन कामयाबियों से जुड़े कामों को पूरा करने की इच्छा से होती है. जिस प्रकार थोड़ी सी आग अधिक गरमी नहीं दे सकती, उसी तरह कमजोर इच्छा-शक्ति से बड़ी कामयाबियां नहीं मिल सकती. जीवन में सफलता पाने के लिये आत्मविश्वास उतना ही जरूरी है, जितना जीने के लिये भोजन. कोई भी सफलता बिना आत्म-विश्वास के मिलनी असंभव है. आत्म-विश्वास वह शक्ति है जो तूफानों को मोड़ सकती है, संघर्षों से जूझ सकती है और पानी में भी अपना मार्ग खोज लेती है. असफलता इसलिये मिलती है क्योंकि कहीं न कहीं कर्ता के प्रयासों में कोई कमी होती है. अतः असफलताओं को सकारात्मक रूप में लेने की कोशिश करनी चाहिये. सफलता का पहला सिद्धांत है, अनासक्त कर्म. निष्काम भावना से परिश्रम करते रहने वाले की गोद में सफलता खुद ही बैठने को उत्सुक रहती है. असफलता की सीढ़ियों पर चढ़ कर ही बहुत से व्यक्ति सफलता की ऊंची चोटी पर पहुंच पाते हैं.

आत्म-विश्वास खोने की सबसे बड़ी वजह यह होती है कि हम अपनी क्षमताओं पर पूरा भरोसा नहीं करते. सच तो यह है कि सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू होते हैं. असफलता का यह मतलब बिल्कुल नहीं कि व्यक्ति लगातार असफल ही होगा. जीवन में दो ही व्यक्ति असफल होते हैं—जो सोचते हैं, पर करते नहीं. दूसरे वे—जो करते तो हैं, पर सोचते नहीं. अपने कार्य को उत्साहपूर्वक एक सुनिश्चित योजना के अनुसार निरंतर करते रहना चाहिये. लोग तो कुछ न कुछ कहेंगे ही, चाहे कार्य अच्छा हो या बुरा. यदि व्यक्ति ने ठान लिया कि वह इन बातों से ऊपर उठकर कार्य करेगा, तो कोई संदेह नहीं कि उसका आत्म-विश्वास हमेशा उसका साथ देगा और वह सफल होगा. जब व्यक्ति का आत्म-विश्वास डगमगाता है तो ऐसा महसूस होने लगता है कि उसे कुछ नहीं आता. वह स्वयं को कमतर आंकने लगता है. इस वजह से उसके चारों तरफ नकारात्मक विचारों का ऐसा भँवर बन जाता है, जिसमें वह धिर कर रह जाता है. ऐसे में जिस काम को वह आसानी से पूरा कर सकता है वह भी बड़ा जटिल तथा कठिन लगने लगता है. धीरे-धीरे व्यक्ति के मन में यह विश्वास घर कर लेता है कि अब वह किसी काबिल नहीं रहा. वास्तव में आत्म-विश्वास का दामन उसी समय कमजोर पड़ने लगता है जब व्यक्ति अपने काम पर ध्यान देने के बजाय यह सोचने लगता है कि यदि उसमें असफल हो गये तो लोग क्या कहेंगे ?

गलतियों का महत्व— गलतियों के मामले में यह मान कर चलना चाहिये कि हर कोई गलती करता है. सबसे महत्वपूर्ण बात है गलती से सीखना. पर गलती से व्यक्ति तभी सीख पाएगा, जब वह माने कि गलती हुई है. सामान्यतः यहीं पर आकर बात अटक जाती है. गलती करके भी कोई मानना नहीं चाहता कि उसने गलती की है. गलती मानना सफल व्यक्तियों का साहस है. सफलता का निचोड़ बस इसी में है कि व्यक्ति अपने निर्णयों में कितनी कम गलतियां करते हैं. सफल व्यक्ति से ऐसी गलतियां कम होती हैं, जो आम आदमी ज्यादा करते हैं. इसी का नाम सफलता है. सफल व्यक्तियों में आत्म-विश्वास और साहस अधिक मात्रा में होता है फिर भी वे और अधिक आत्मविश्वास और साहस बढ़ाने की कोशिश में रहते हैं. कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, सुधार के लिये कार्य जरूर करें. इसमें सुधार या बदलाव की आवश्यकता रहती ही है. अगर व्यक्ति झुंझला कर पीछे न हटे और आगे बढ़ने को तत्पर रहे, तो बुलंदियों को छूने में वह अवश्य कामयाब होगा. जिस किसी ने धैर्य का साथ नहीं छोड़ा है, अपना कार्य नहीं छोड़ा, तो सुधार के साथ उसने अपनी

इच्छा के अनुसार सफलता भी पाई है। सफल व्यक्ति सफलता पाने एवं अच्छे काम करने के लिये असाधारण परिस्थितियों का इंतजार नहीं करते बल्कि वे साधारण परिस्थितियों का उपयोग करना श्रेयस्कर समझते हैं। कहा भी गया है कि "अवसर उनकी सहायता करता है तो जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं"। मुझे रास्ता मिलेगा नहीं, तो मैं बना लूंगा। जैसे घिसाई के बिना हीरे को नहीं चमकाया जा सकता इसी तरह इंसान को भी चमकाने-चमकाने के लिए रगड़ की जरूरत पड़ती है। इस रगड़ में दर्द तो होता है लेकिन चमक पाने के लिए वह दर्द आवश्यक होता है। व्यक्ति विपत्तियों से आँख मिलाएगा तो वे स्वयंमेव ही हट जायेंगे। उनका दृढ़ता से सामना करें, क्योंकि अगर वह युद्ध में वीरता से लड़ेगा, तभी तो उसको पदक मिलेंगे और एक कठिन लड़ाई जीतने में क्या ज्यादा आनंद नहीं आता? धीरज का फल मीठा होता है। सफलता पाने के लिये व्यक्ति को चाहिये कि वह हमेशा एक बत्तख जैसा व्यवहार करे, ऊपर से गंभीर और शांत रहे, पर पानी के अंदर तेजी से पैर चलाता रहे। व्यक्ति को सफलता पाने के लिये अपने मस्तिष्क को शुद्ध रखना चाहिये। पूर्वजों ने सफलता पाने के लिये व्यक्ति में जिन बातों को आवश्यक बताया है उनमें पहली बात नियम तथा दूसरी बात संयम है। व्यक्ति को

सफल होना है तो उसे निराशा को त्याग कर आशा को, भय को दूर कर उत्साह को तथा शंका को दूर कर विश्वास को अपनाना चाहिये। सफलता की चाह करने वाले व्यक्ति को नेक तथा शुभ कार्य फौरन शुरू करने चाहिये। बहुत से लोग सुस्ती, आलस्य एवं ढीलेपन तथा काम को टालने की आदत से इतना दुःख भोगते हैं, जितना किसी अन्य बात से नहीं। आज का कार्य कल पर टालने की आदत को अपना भयंकर दुश्मन मानना चाहिये। व्यक्ति की आधी सफलता उसके नजरिये पर निर्भर करती है। अगर व्यक्ति सकारात्मक नजरिये का है तो जीवन में उसके लिये कुछ भी मुश्किल नहीं है। पन्तु यदि उसका नजरिया नकारात्मक है तो सफलता उसके लिये दूर की चीज है।



सुरेश चौहान
बासनी शाखा, जोधपुर

चट्टान या इंसान

मिटा नहीं, झुका नहीं जो समय के प्रहार से
खुदा ने भी टेक दिये घुटने उस पहाड़ से।
हौसलों में जिनके तूफान है, कदमों में जिनके उड़ान है
ये आसमाँ भी उनकी ऊंचाइयों का गुलाम है।
बाँध न पाया कोई उनको सीमाओं में, जिनके इरादों में जान है।
बना लिया जिन्होंने सब काँटों को अपनी सेज
दिया हर मुसीबत को खुद से दूर भेज,
हर मंजिल को उनपे नाज है!

लिखते हैं किस्मत वो अपनी, अपने ही हाथ से
सिमट जाती हैं लकीरें भी उनके कर्मों के बयार से।
जिनके लिये न ही कोई निर्बल, न ही कोई शक्तिमान है।
सभी उस खुदा की बनाई संतान हैं।
वो हममें से, तुममें से, फर्क उसकी सोच चट्टान है।
न वो हारा है। न वो हारेगा, कर्तव्य उसके महान है।
वो कोई असाधारण नहीं
सच बताता हूँ तुमको मैं,
वो भी एक इंसान है। सिर्फ एक इंसान है।



सर्वेश कुमार मिश्रा
उगार खुर्द शाखा, बेलगाम क्षेत्र

जुजूज

ये जुजूज है इंसान का
उसके आगे बढ़ने की पहचान का
ढुनिया को देने नये आयाम का
चाँद पर भी लिखना अपने नाम का

ये जुजूज है इंसान का
पैदा करना धरती पर धान का
पर्वतो को भी लांघ जाने का
पानी पर बनाना अपने निशान का

ये जुजूज है इंसान का
विश्व को अपना घर बनाने का
दिलों में साँस बन बस जाने का
कष्टों में मददगार बन जाने का

ये जुजूज है इंसान का
आसमानों के भी पार जाने का
दिखाना जलवा अपने ज्ञान का
क्षितिज पर भी फूल खिलाने का

ये जुजूज है इंसान का
मान बढ़ाना अपने मेहमान का
बनाना अपने कीर्तिमान का
बने रहना अपने ईमान का

ये जुजूज है इंसान का
ये जुजूज है इंसान का..... |



ऋषि प्रकाश
क्ष. म.प्र.का. दिल्ली





Empathy vs. Sympathy

The Big Distinction

Empathy: The ability to understand, perceive and feel another person's feelings. In other words, empathy is the capacity to understand what another person is experiencing from within the other person's frame of reference, i.e. the capacity to place oneself in another's shoes.

Empathy has many different definitions that encompass a broad range of emotional states, including caring for other people and having a desire to help them; experiencing emotions that match another person's emotions; discerning what another person is thinking or feeling; and making less distinct the differences between the self and the other.

It also is the ability to feel and share another person's emotions. Some believe that empathy involves the ability to match another's emotions, while others believe that empathy involves being tenderhearted toward another person. Compassion and sympathy are two terms that many associate with empathy, but all three of these terms are unique. Sympathy is a feeling of care and understanding for someone in need.

Sympathy: The tendency to help others in order to prevent or alleviate their suffering. Sympathy (from the Greek words sym "together" and pathos "feeling" which means "fellow-feeling") is the perception, understanding, and reaction to the distress or need of another human being. This empathic concern is driven by a switch in viewpoint, from a personal perspective to the perspective of another group or individual who is in need.

Empathy and sympathy are often used interchangeably. Sympathy is a feeling, but the two terms have distinct origins and meanings. Empathy refers to the understanding and sharing of a specific emotional state with another person. Sympathy does not require the sharing of the same emotional state. Instead, sympathy is a concern for the well-being of another. Although sympathy may begin with empathizing with the same emotion another person is feeling, sympathy can be extended to other emotional states. These are not exact, dictionary definitions and it seems there are no universally accepted definitions for empathy and sympathy in psychology. These are rather the way one should operate with the two concepts, in order to emphasizing a couple of key aspects.

Here are these aspects:

- 1) **Empathy is always good, sympathy is contextually good.**
Understanding the feelings of other people means to

access very precious information which one can use in multiple ways. However, feeling the need to help others is something which from one case to another can be good or bad. Sometimes it can mean honour and building bridges, sometimes it can mean lying, being fake, sacrificing your own needs, not letting others learn on their own and other pointless people pleasing behaviors.

- 2) **You can have one, without the other.**

This is the most important part. One can have sympathy with only a vague understanding of the other person's feelings. One can also understand exactly how bad a person feels and still be capable of not helping her.

One can be a highly empathic person and still have his/her freedom to act in the ways he/she thinks are best, whether they involve helping others or not. One can have empathy and have options at the same time.

Let's say a friend of yours invites you to their birthday party. While you would like to go, in the very same day there is a conference in another town that you would like to go to even more than the birthday party.

Having empathy means that you understand this will make your friend feel hurt, maybe even a little angry. Having sympathy only as an option means that although you understand this, you can still say no to their invitation and go to the conference instead of the party, without feeling bad.

Why is this distinction essential?

- It's essential because when it comes to people skills, many believe that the ability to be empathic and the tendency to have sympathy are the same thing: If you have empathy, you have sympathy. If you understand how badly a person feels then you can't help but help them in some way, even if rationally you know it's a poor decision.
- As another implication, since many people believe empathy and sympathy can only go hand in hand, they also think that in order to not have sympathy, you have to sacrifice your empathy. You have to become ignorant and numb.
- Also, they often believe that they automatically have a lot of empathy because they tend to help others all the time. All of these ideas are incorrect.

When you have a good understanding of the fact that empathy and sympathy are related phenomena but they go in separate boxes, you can learn to have empathy without always having sympathy, and you take your people skills to the next level.

Debashis Chatterjee
R.O., Kottayam



भारतीय कार्टून जगत के “प्राण”



साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा हास्य भी है. यह हास्य रस हमारे साहित्य के लेखन में कई प्रकार से सम्मिलित किया जाता है. कभी हास्य रस की कविताओं के रूप में तो कभी लेखों की भाषा में हास्य का पुट देकर. कालांतर में यह तथ्य भी प्रत्यक्ष रूप से माना जाने लगा कि अक्षरों और शब्दों के माध्यम से की जाने वाली अभिव्यक्ति के साथ यदि उसका लकीरों के माध्यम से चित्रण भी कर दिया जाए तो भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन

और व्याख्या अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट और पुष्ट हो जाती है. यहीं से चित्र कथाओं का आरंभ हुआ.

भारत में चित्र कथा के प्रिय पात्र 'चाचा चौधरी' तथा उनके मित्र 'साबू' को जीवंत करने वाले एवं प्राण के नाम से प्रसिद्ध प्रख्यात कार्टूनिस्ट प्राण कुमार शर्मा रहे हैं. प्राण का जन्म 15 अगस्त, 1938 को पाकिस्तान स्थित कसूर में हुआ था जो लाहौर के निकट है. प्राण ने बतौर कार्टूनिस्ट अपना करियर दिल्ली के दैनिक हिन्दी समाचार पत्र 'मिलाप' के "डब्बू" नामक चित्रकथा की शृंखला से 1960 में शुरू किया था. 1969 में प्राण ने हिन्दी पत्रिका 'लोटपोट' के लिए चाचा चौधरी कार्टून बनाया जिससे उन्हें प्रसिद्धि मिली.

डायमंड कॉमिक के गुलशन राय के शब्दों में "1981 में जब उन्होंने उनसे पहली बार संपर्क किया तब तक वह समाचार पत्रों के लिए छोटे-छोटे कार्टून बनाते थे. उस समय कोई भी भारतीय चित्रकथा नहीं थी, बल्कि जो कुछ भी था वह विदेशी शीर्षकों की पुनर्प्रस्तुति थी. पिछले 35 वर्षों से डायमंड कॉमिक उनके कार्टूनों का एकमात्र प्रकाशक था,"

पाँच दशकों से अधिक के करियर में, प्राण ने श्रीमतीजी, पिकी, बिल्लू, रमन और चन्नी चाची जैसे पारिवारिक चरित्रों का निर्माण करने के लिए साधारण शैली तथा हास्य बोध का प्रयोग किया जो नियमित रूप से भारतीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होता आया है.

ब्रिटिश भारत के कसूर में जन्म लेने के बाद प्राण ने अपनी "बी. ए." की डिग्री ग्वालियर से तथा स्नातकोत्तर डिग्री (राजनीति शास्त्र) इवनिंग कैंप कालेज दिल्ली से प्राप्त की. तत्पश्चात उन्होंने दिल्ली में

रहते हुए दूरस्थ माध्यम से व्यक्तिगत छात्र के रूप में सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुंबई से पाँच वर्षीय आर्ट्स के पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया ताकि वह किसी स्कूल में चित्रकला के अध्यापक पद हेतु आवेदन कर सकें किन्तु बाद में उन्होंने इसे छोड़ दिया.

'डब्बू' के अतिरिक्त भारतीय चित्रकथा परिदृश्य मुख्यतः 'फैंटम' तथा 'सुपरमैन' के पुनर्मुद्रण पर निर्भर था.

1969 में, प्राण ने हिन्दी पत्रिका लोटपोट के लिये चाचा चौधरी का स्केच तैयार किया, जिससे उन्हें प्रसिद्धि मिली. प्राण ने श्रीमतीजी, पिकी, बिल्लू, रमन, चन्नी चाची जैसे एवं अन्य चरित्रों का भी सृजन किया जो भारतीय पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं. भारत में चित्रकथाओं को लोकप्रिय बनाने के लिये उन्हें लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स द्वारा पीपुल ऑफ दि ईयर 1995 में शामिल किया गया था. 1983 में भारत की तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्राण की राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाली चित्रकथा "रमन-हम एक हैं" का विमोचन किया. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कार्टूनिस्ट द्वारा प्राण को लाइफ टाइम एचीवमेंट 2001 प्रदान किया गया. प्राण ने अपने पुत्र निखिल द्वारा संचालित प्राण'स मीडिया इंस्टीट्यूट में कार्टूनिस्टों को पढ़ाया भी है.



मौरिस हॉर्न ने लिखा है दि वर्ल्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ कोमिक्स में प्राण को "भारत का वाल्ट डिज्नी" की उपाधि दी गयी है. इंटरनेशनल म्यूजियम ऑफ कार्टून आर्ट्स, यूएसए में चाचा चौधरी शृंखला को स्थायी स्थान प्राप्त है.

05 अगस्त, 2014 को उन्होंने गुडगाँव के एक अस्पताल में 76 वर्ष की आयु में अपनी अंतिम सांस ली. पिछले 8 माह से वह आंतों के कैंसर से पीड़ित थे. उनके एक पुत्र तथा एक पुत्री हैं.

महान कार्टूनिस्ट प्राण के निधन से भारतीय कार्टून जगत को अपूरणीय क्षति हुई है.



ज्ञानेन्द्र नाथ मिश्र
पी बी ओ डी, कें.का., मुंबई.

स्वचालित टेलर मशीन (ATM) के लिए भौतिक और तार्किक सुरक्षा उपाय

बैंकिंग और वित्त उद्योग में नई तकनीक की सुविधाओं और उपादेयताओं को ध्यान में रखते हुए यह लक्ष्य निर्धारित किया गया है कि 'ग्राहकों की दहलीज पर नेट बैंकिंग, एटीएम आदि के माध्यम से बेहतर बैंकिंग व उससे संबंधित सेवाएं प्रदान की जाएंगी। इस सेवा के साथ, नेटवर्क अपने साथ निहित सुरक्षा-संकट तथा कारोबार में अंतर्निहित जोखिम भी लाता है। दिन-प्रति-दिन सुरक्षा से संबन्धित घटनायें तेजी से बढ़ रही हैं। एटीएम से संबंधित सुरक्षा के कई आयाम हैं। एटीएम की अवधारणा के साथ, उसके संचालन के साथ ही कई सुरक्षा प्रणालियों एवं सुरक्षा संबन्धित चिंताएँ भी जुड़ी हुई हैं।

एटीएम धोखाधड़ी के लिए प्रचलित तरीके:

एटीएम कार्ड की चोरी, एटीएम कार्ड स्किमिंग, पिन पैड ओवरले, कार्ड जैमिंग, कार्ड स्वैपिंग, शोल्डर सर्फिंग-कार्ड को क्षतिग्रस्त करना, भौतिक हमला, मर्गिंग (लूट) आदि एटीएम धोखाधड़ी के सामान्य तरीके हैं। हमलों के आधार एटीएम सुरक्षा के उपायों को 2 प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जाता है:

• भौतिक सुरक्षा (Physical security) :

1. परिधि निगरानी (Perimeter surveillance), 2. पहुँच का नियंत्रण (Access control) 3. घुसपैठ का पता लगाना (Intrusion detection) 4. परीक्षित और स्वीकृत एटीएम (Tested & Approved ATM enclosures) 5. सुरक्षा गार्ड (Security Guards) 6. केंद्रीय मॉनिटरिंग स्टेशन (Central Monitoring Station)

• तार्किक सुरक्षा उपाय (Logical Security):

1. फायरवाल (Firewall) 2. प्रभावी ट्रैकिंग और निगरानी (An Effective Tracking & Monitoring System) 3. एन्क्रिप्शन टेक्नोलॉजी (Encryption Technologies) 4. तार्किक प्रवेश नियंत्रण (Logical Access control (Principal of least privileges) 5. धोखाधड़ी खोज प्रणाली (Fraud Detection System) 6. संप्रेषण का संरक्षण (Protection of Communication)

एटीएम धोखाधड़ी के लिए प्रचलित तकनीक

1. एटीएम कार्ड चोरी ATM Card Theft :



- अपराधी अक्सर इस प्रकार के अपराध टीम बनाकर करते हैं, कोई व्यक्ति जब कैश पॉइंट से रुपया निकालने के लिए कार्ड डालता है तो उसके कार्ड का विवरण अपराधी द्वारा ट्रैप कर लिया जाता है। • बाहर खड़ा व्यक्ति चेतावनी देने के लिए रहता है। • अगले व्यक्ति द्वारा जब्त किया हुआ कार्ड निकाल लिया जाता है। • अब एक अन्य ग्राहक शुभचिंतक बनकर ग्राहक को सहायता देने के बहाने से उसे एटीएम पिन डालने के लिए राजी करता है। उस समय स्कैमर ग्राहक के पिन का पता लगा लेते हैं। • कई प्रयासों के बाद, ग्राहक यह विश्वास कर लेता है कि कार्ड को बैंक द्वारा जब्त कर लिया गया है और एटीएम में ही अपना कार्ड छोड़ कर चला जाता है। • फिर अन्य स्कैमर एटीएम में असली कार्ड मशीन में डाल कर उपयोग करता है, और ग्राहक के बैंक खाते से पैसे निकल जाते हैं।

2. एटीएम कार्ड स्किमिंग ATM Card Skimming :

'स्किमिंग' एटीएम कार्ड की चुंबकीय पट्टी के माध्यम से जानकारी तक पहुँचने से संदर्भित है। यह अवैध रूप से कार्ड ट्रैक डेटा प्राप्त करने की विधि है जिसका अक्सर इस्तेमाल किया जाता है। "Skimmers" द्वारा चुंबकीय पट्टी में संग्रहीत डेटा पर कब्जा कर इसका इस्तेमाल किया जाता है। अनधिकृत उपयोगकर्ता धोखे से खाते में अवैध लेन-देन करता रहता है।

3. पिन पैड उपरिशायी (ओवरलेयरिंग) Pin Pad Overlay :

शब्द से ही स्पष्ट है कि अपराधी मूल पिन पैड पर एक नकली पिन पैड डाल कर नकली पिन पैड मूल पिन पैड की तरह काम कर एटीएम में डाले हुए की स्ट्रोकस को भंडार कर लेता है। अपराधी बाद में इस नकली पिन पैड से सभी कार्डों में संग्रहीत पिन पढ़ लेते हैं। आमतौर पर पिन पैड उपरिशायी अपराध, एटीएम कार्ड स्किमिंग के बाद किया जाता है।

4. कार्ड जैमिंग (Card Jamming): अपराधियों द्वारा मशीन के कार्ड रीडर से छेड़छाड़ की जाती है। ग्राहक का कार्ड मशीन में फँस जाता है और फिर ग्राहक एटीएम कार्ड को एटीएम में ही छोड़ देता है जिसे अपराधी बाद में निकाल लेता है।

5. कार्ड स्वैपिंग (Card Swapping) : ग्राहक का कार्ड उसके संज्ञान के बिना किसी और कार्ड से बदल लिया जाता है।

6. शोल्डर सर्फिंग (Shoulder Surfing) : ग्राहक के करीब खड़ा होकर उसके की-स्ट्रोकस का निरीक्षण कर, उसकी पिन की पहचान कर ली जाती है।

7. क्षतिग्रस्त करना (Vandalism): एटीएम मशीन को जानबूझ कर क्षतिग्रस्त किया जाता है ताकि ग्राहक का कार्ड फँसाया जा सके।

8. भौतिक हमला (Physical Attack): एटीएम नकदी तिजोरी से कैश बाहर लेने के इरादे के साथ भौतिक रूप से हमला किया जाता है।

9. लूट (Mugging): जबरदस्ती एटीएम को लूट लिया जाता है।

भौतिक सुरक्षा उपाय:

- परिधि निगरानी (Perimeter surveillance): परिधि निगरानी आमतौर पर दूरी से अवलोकन के लिए उपयोग किया जाता है; जैसे एटीएम पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों (सीसीटीवी कैमरों) के माध्यम से किया जाता है। यह माध्यम खतरों की पहचान, निगरानी और आपराधिक गतिविधियों को रोकने एवं जांच करने के लिए उपयोगी है।

• **पहुँच का नियंत्रण (Access control):** अभिगम नियंत्रण प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जो किसी प्राधिकारी को दी गयी भौतिक सुविधा है जो कंप्यूटर आधारित सूचना प्रणाली में संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करती है। एकसैस कंट्रोल प्रणाली भौतिक सुरक्षा की दूसरी परत के रूप में देखी जाती है। उदाहरण के लिए कुछ एटीएम में दरवाजे पर एक स्वचालित लॉकिंग उपकरण है जो ग्राहक के कार्ड डालने पर ही दरवाजा खोलता है।

• **घुसपैठ का पता लगाना (Intrusion detection):** इंटरूजन डेटेक्शन सिस्टम या अलार्म सिस्टम हमलों पर नजर रखता है। यह प्रिवेंटिव उपाय है। पीआईआर आधारित 'मोशन डिटेक्टर' का उपयोग अधिकतर स्थानों पर किया जा रहा है। इसके अलावा, वीएसएस/ सीसीटीवी कैमरे तेजी से आम उपयोग किए जा रहे हैं। जिससे भौतिक स्थानों में हस्तक्षेप करने वालों की पहचान की जा सकती है। एटीएम का नकदी डिस्पेंसर अभेद्य होता है। उसे तोड़ा नहीं जा सकता। लेकिन हमला करके उसके अंदर रखे पैसे को खराब/नष्ट किया जा सकता है।

• **परीक्षित और स्वीकृत एटीएम (Tested & Approved ATM enclosures):** सेफ अच्छी तरह कुशलतापूर्वक परीक्षित होना चाहिए। इसे गश्त गार्ड द्वारा निरीक्षण के समय कम से कम समय खुलना चाहिए। अलार्म प्रतिक्रिया का समय भी कम से कम होना चाहिए।

• **सुरक्षा गार्ड (Security Guards):** इन चार परतों की सुरक्षा संरचना में सुरक्षा गार्ड सभी परतों में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है—पहली, गश्ती दल के रूप में एटीएम चौकियों पर, दूसरे इलेक्ट्रॉनिक अभिगम नियंत्रण प्रशासन के रूप में, तीसरी में अलार्म का जवाब प्रतिक्रिया बल के रूप में और चौथी में वीडियो निगरानी और विश्लेषण के लिए।

• **केंद्रीय मॉनिटरिंग स्टेशन (Central Monitoring Station):** केंद्रीय अनुश्रवण स्टेशन लगातार सभी गतिविधियों की निगरानी कर सकते हैं और किसी भी दुर्घटना की स्थिति में सुरक्षा और घटना की प्रतिक्रिया और टीमों को भेजने के लिए अपना उपयोग कर सकते हैं।

भौतिक सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में पीसीआई (PCI) पीसीआई-पीडी (PCI-PED) के अनुसार निम्नलिखित में भौतिक सुरक्षा अनिवार्य है:

★ भौतिक परिरक्षण बाधा यानी टेंपर रोधी एटीएम ही नहीं बल्कि टेंपर रोधी पिन पैड भी होना चाहिए। ★ दोहरे सुरक्षा तंत्र को कार्यान्वित करना चाहिए ताकि सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जा सके। ★ कम से कम कोणिक दृष्टि हो (उदाहरण के लिए, एक पोलराइजिंग फिल्टर या रेसिस्टेड पिन पैड)। ★ उचित पर्यावरण एवं परिचालन परिस्थिति। ★ भौतिक पहुँच नियंत्रित एवं निगरानी में होनी चाहिए। ★ दुर्घटना प्रतिक्रिया तंत्र क्रियाशील होना चाहिए।

• **तार्किक सुरक्षा उपाय (Logical Security Measures):** नेटवर्क, एटीएम के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब ग्राहक अपने कार्ड स्वाइप कर अपना पिन प्रविष्ट करते हैं तो नेटवर्क सारे विवरण के सत्यापन के लिए सर्वर के माध्यम से आरडीबीएमएस (RDBMS) को भेजता है। तब हमलावरों के द्वारा अवरोधन कर तार्किक धोखाधड़ी (Logical frauds) करने की कोशिश की जाती है। नीचे वर्णित तार्किक सुरक्षा उपाय ऐसी घटनाओं को रोकने में मदद कर सकते हैं:

• **फ़ायरवाल (Firewall):** अपराधियों के द्वारा एटीएम मशीनों के कुंजीपटल ओवरले कर लोगों के पिन पर कब्जा किया जाता है। प्रत्येक कुंजी को प्रेस कर, एटीएम के कुंजीपटल से अपराधी के कीपैड में डाटा संरक्षित हो जाता है। इस डेटा को ऐसे बनाया और जोड़ा जाता है जो बिल्कुल एटीएम मशीन की तरह है। इसे देखने से बैंक ग्राहकों को इसकी उपस्थिति का पता ही नहीं चल पता है। फ़ायरवॉल इस प्रकार प्रत्यक्ष 'की-लॉगर' को रोकने में सक्षम नहीं है, लेकिन

नेटवर्क 'की-लॉगर' को रोक सकता है।

• **प्रभावी ट्रैकिंग और निगरानी (An Effective Tracking & Monitoring System):** कार्ड जारी करने वालों के द्वारा कई प्रकार से भौगोलिक और व्यावहारिक धोखाधड़ी विश्लेषण उपकरण का उपयोग कर संदिग्ध लेन-देन की ट्रैकिंग की जाती है। सुरक्षा कैमरों को स्थापित कर अवसरवादी चोरों द्वारा चिप और पिन को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए एटीएम पर प्रभावी ट्रैकिंग और निगरानी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए ताकि इस प्रकार की धोखाधड़ी को रोका जा सके।

• **एन्क्रिप्शन तकनीक (Encryption Technologies):** ट्रिपल डेटा एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड (TDDES या SDES या ट्रिपल DES) और उन्नत एन्क्रिप्शन स्टैंडर्ड (AES) ब्लॉक सिफर डिजाइन पूरी तरह परीक्षित हैं। TDDES तकनीकी का प्रयोग विस्तृत शृंखला के लिए किया जाता है, जैसे एटीएम के स्मार्ट कार्ड के लिए किया गया एन्क्रिप्शन; क्योंकि स्मार्ट कार्ड के एम्बेडेड चिप पर आम तौर पर कुछ क्रिप्टोग्राफिक एल्गोरिथम लागू किया जाता है।

• **तार्किक प्रवेश नियंत्रण {Logical Access control (Principal of least privileges)}:** किसी भी अभिगम नियंत्रण मॉडल में, जो एंटीटीस (entities) का प्रदर्शन कर सकता है, उसे सब्जेक्ट कहा जाता है, और ऐसे एंटीटीस कार्यवाही को जो संसाधनों का प्रतिनिधित्व करता है एवं जिन तक पहुंचने के लिए नियंत्रण की आवश्यकता हो सकती है, उन्हें आब्जेक्टस कहा जाता है। सब्जेक्ट और आब्जेक्टस दोनों को सॉफ्टवेयर का तत्व (Entities) माना जाना चाहिए, बजाय मानव उपयोगकर्ताओं के रूप में।

• **धोखाधड़ी खोज प्रणाली (Fraud Detection System):** किसी भी मूल्यवान वस्तु से युक्त डेटा (एटीएम और अन्य प्रणालियों) के साथ धोखाधड़ी होने का जोखिम जुड़ा होता है। एटीएम का उपयोग करते समय धोखाधड़ी कई रूपों में हो सकती है। जैसे कार्ड क्लॉनिंग और स्कैमिंग की जांच। चुंबकीय कार्ड और फर्मवेयर सभी चुंबकीय धारियों में एम्बेडेड हस्ताक्षर द्वारा किया जा सकता है। इस प्रकार के सिग्नेचर को "MagnePrint" या "BluPrint" कहा जाता है जो कि एटीएम का उपयोग करते समय दोहरे प्रमाणीकरण के रूप में किया जाता है। धोखाधड़ी के विरुद्ध निरोधक उपाय में प्रति सप्ताह कार्ड का उपयोग शामिल है। अनधिकृत उपकरणों के द्वारा काउंटर मेजर्स आसानी से प्रतिलिपि द्वारा नहीं बनाये जा सकते हैं। इस प्रकार अप्रमाणित कार्ड का पता आसानी से चल जाता है।

• **संप्रेषण का संरक्षण (Protection of Communication)**

1. **स्थानी लेन-देन के लिए पिन की स्वीकृति**

पिन नंबर की ऑन-लाइन स्वीकृति (Online PIN validation) : ऑन-लाइन पिन का सत्यापन तभी होता है जब टर्मिनल केंद्रीय डेटा बेस से जुड़ा हो।

ऑफ-लाइन पिन स्वीकृति (Offline PIN validation): ऑफ-लाइन पिन सत्यापन में, एटीएम केंद्रीय डेटा बेस से जुड़ा नहीं होता है। ऑफ-लाइन पिन सत्यापन के लिए एक शर्त यह है कि एटीएम स्वयं में पिन की तुलना करने में सक्षम होना चाहिए।

2. **लेन-देन (Interchange Transactions) के लिए पिन स्वीकृति:**

उच्चस्तरीय सुरक्षा से लैस आदान-प्रदान एवं लेन-देन के संचालन के लिए त्रिस्तरीय पिन प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। प्रवेश टर्मिनल पर एन्क्रिप्टेड पिन होता है जिसमें एक गुप्त क्रिप्टोग्राफिक कुंजी का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा अन्य ट्रांज़ैक्शन के लिए एन्क्रिप्टेड पिन का सिस्टम द्वारा अधिग्रहण किया जाता है। दूसरा एन्क्रिप्टेड पिन सिस्टम द्वारा अधिग्रहण कर हार्डवेयर सुरक्षा मॉड्यूल तक पहुँचाया जाता है। इसके टर्मिनल में क्रिप्टोग्राफिक कुंजी का उपयोग कर पिन डीक्रिप्ट हो जाता है। क्रिप्टोग्राफिक कुंजी इंटरचेंज के लिए उपयोग की जाती है,

और डिक्रिप्ट कुंजी तुरंत एन्क्रिप्टेड हो जाती है और सामान्य संचार चैनलों पर जारीकर्ता सिस्टम में पहुँच जाती है। तीसरा, भेजा गया पिन जारीकर्ता के मॉड्यूल में डिक्रिप्ट और फिर लोकल ऑन-लाइन पिन सत्यापन द्वारा मान्य हो जाता है।

तार्किक (लॉजिकल) सुरक्षा के लिए पीसीआई परिप्रेक्ष्य:

- अधिग्राहक (Acquirers), प्रोसेसर और अन्य के लिए तृतीय पक्ष को (स्टोर, प्रोसेस, और / या संचारित) कार्डधारक डाटा एक्सैस करने के लिए PCI-DSS के नियमों का अनुपालन करना आवश्यक होगा।
- वर्तमान में सभी PCI-DSS के अनुपालन की आवश्यकता है क्योंकि चुंबकीय पट्टी, आंकड़ों, पिन और पिन ब्लॉकों को संग्रहित नहीं कर सकती है।
- एटीएम ऑडिट करते समय यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि केवल आवश्यक/अनुमत डेटा का लॉग संग्रहित किया जा रहा है।
- चेतावनी: यदि आपके संगठन या आपके संगठन द्वारा प्रायोजितों पर जुर्माना पीसीआई डीएसएस के अधीन है तो उसे सिविल और सांविधिक नुकसान के तहत किया जा सकता है।
- कार्डधारक के डेटा को एक्सैस करने वाली सभी तृतीय पार्टियों को ट्रेकिंग किया जाना चाहिए। (टेलीफोन और केबल कंपनियों को छोड़कर-स्टोर, प्रोसेस, और / या संचारित करने वालों को)।
- सभी उपकरणों और अनुप्रयोगों की सूची बनाई रखी जानी चाहिए।
- एटीएम निर्माता यह सुनिश्चित करें कि उनके उपकरणों में पीसीआई पिन और पीईडी अवश्य मौजूद हो। इसके अलावा पीए-डीएसएस का अंततः सभी एटीएम उपकरणों पर स्थापित सभी सॉफ्टवेयर पर प्रभाव हो।

पीसीआई पिन – कार्यान्वित करने, बनाए रखने और पिन सुरक्षा के लिए निम्न प्रमुख मदों पर ध्यान दें:

- दोहरा नियंत्रण और विभक्त जानकारी (Split knowledge) – धोखाधड़ी और

पहचान की चोरी को रोकता है।

- समय – समय पर अनुप्रमाणन (Attention) आवश्यक है।
- टीडीईएस (TDDES) / एईएस (AES) (कुछ परीक्षित तथा व्यापक रूप से स्वीकार किए जाने वाला ब्लॉक सिफर है) एन्क्रिप्टेड।
- छेड़छाड़ प्रतिरोधी सुरक्षा मॉड्यूल (TRSM) क्रिप्टोग्राफिक सुरक्षा पैरामीटर में कमी करता है।

निष्कर्ष:

एटीएम सुरक्षा, बैंकिंग और भुगतान उद्योग के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। सभी बैंक अपने ग्राहकों को एटीएम से संबन्धित धोखाधड़ी से सुरक्षित रखना चाहते हैं। हम विभिन्न सुरक्षा उपायों एवं विभिन्न तकनीकों का इस्तेमाल करके एटीएम के उपयोग को अभेद्य बना सकते हैं। ग्राहक जागरूकता से भी एटीएम उपयोगकर्ताओं को और अधिक सुरक्षित बनाने में योगदान प्राप्त हो सकता है।

पीसीआई, बैंकिंग और भुगतान उद्योग के लिए सुरक्षा मानकों की एक अग्रणी संस्था है। पीसीआई-डीएसएस (PCI-DSS), पीए-डीएसएस (PA-DSS), पीसीआई-पीईडी (PCI-PED), पीसीआई-एटीएम (PCI-ATM) और पीसीआई-पीआईएन (PCI-PIN) यह सभी मानक एटीएम की सुरक्षा पर विशेष प्रभाव डालते हैं।

अनिर्बान कुमार विश्वास

क्षे.का., जबलपुर

(MS in Information Security, IIT-A Allahabad)



(लघुकथा)

अँगूठी

खान साहब ने अपने लिये शादी का इश्तहार दिया तो कई लड़कियों के रिश्ते आ गये। काम काज और संपत्ति के बारे में पूछने पर खान साहब सबको यही बताते “मैं तो किराये के मकान में रहता हूँ, कभी मेरा अच्छा खासा व्यापार भी था पर माँ-बाप की लम्बी बीमारी की वजह से घर में ना तो कुछ पैसा ही बच पाया और ना ही काम धंधे पर ध्यान दे सका। लेकिन अब दोनों के इंतकाल हो जाने के बाद फिर से कुछ करने का इरादा है। संपत्ति के नाम पर मेरे पास बस अँगूठी में पहनी यह एक अँगूठी ही रह गयी है। बाकी सब बिक गया। मैं शरीफ खानदान का हूँ और अपनी बीवी को भी हमेशा सुखी रखूँगा-यह मेरा वादा है। ऐसे हालात में जो भी लड़की मुझसे शादी करना चाहे, हाँ कर सकती है।” दस लड़कियों के रिश्ते आये और फक्कड़ की बातों को सुनकर, उनको पागल समझकर सब लौट गए। ग्यारहवाँ रिश्ता एक सरदारनी ‘मंजीत कौर’ का आया। उसे खान साहब की साफदिली ऐसी भायी कि उसने रिश्ते के लिये हाँ कर दी। शादी भी सादगी के साथ हो गयी।

एक दिन ‘मंजीत’ की सहेली ‘आबिदा’ उससे मिलने उसके घर आई। घर बहुत आलीशान था। आबिदा को पता चला कि यह उन्हीं खान साहब का घर है जिनका

रिश्ता उसने टुकरा दिया था। उसने मंजीत से पूछ ही लिया “अरे मंजीत, तुम लोगों के पास इतनी दौलत कहाँ से आ गयी? वे तो कहते थे कि उनके पास बस एक अँगूठी के सिवा कुछ भी नहीं है?” “हाँ सही कहते थे।” मंजीत ने जवाब दिया। वो उनकी खानदानी अँगूठी थी और उस अँगूठी की कीमत थी – दो करोड़ रुपये। यह बात खान साहब को अच्छी तरह पता थी। पर वे तो ऐसी लड़की की तलाश में थे जो उनकी दौलत को नहीं, उन्हें देखकर शादी करे। अँगूठी बेचकर हमने यह घर खरीदा, एक होटल खरीदा जिसकी देखभाल मैं करती हूँ और बाकी पैसा इनके व्यापार को ठीक करने में लगा। अब हम लोग बहुत संपन्न हैं।”

आबिदा मन ही मन सोच रही थी कि उसने अंजाने में एक नहीं, दो-दो हीरों को टुकरा दिया था। एक अँगूठी में लगे हीरे को और दूसरा उस अँगूठी को पहनने वाले हीरे को।

उमेश मोहन धवन

क्षे.का., कानपुर



"एक गड्ढे की आत्मकथा"

मैं एक गड्ढा हूँ. मेरी उत्पत्ति रोड पर जिस वजह से हुई उसे हर कोई जानता है. मैं सभी की आंख का कांटा हूँ. मैं हर किसी को टोकर मारता हूँ. बड़ा-छोटा अथवा दो-तीन-चार-छः-आठ पहिया कोई भी वाहन बिना मेरे वजूद को महसूस किए गुजर ही नहीं सकता. हालांकि प्रारंभ में मेरी ऐसी कतई इच्छा नहीं थी कि मैं किसी की परेशानी का सबब बनूँ, लेकिन मजबूर था. अब किसी को आते देखकर मैं तो किनारे हट नहीं सकता, उसे ही हटना होगा.

उत्पत्ति के समय मेरा आकार छोटा था और लोग इधर-उधर से कतरा कर निकल जाते थे, परन्तु समय के साथ मेरा आकार बढ़ता गया और साथ ही मेरा गुरुर. फिर शनैःशनैः मेरा आकार इतना बड़ा हो गया कि अब मैं किसी भी वाहन यहां तक कि बड़े से बड़े ट्रक को गुजरने पर उसके अस्थिपंजर हिला सकता हूँ. मैं जानता हूँ कि हर आने-जाने वाला शख्स मुझे बड़ी टेढ़ी निगाह से देखता है और यदि उसका वश चले तो मेरे अस्तित्व को पल भर में मिटा दे. लेकिन मेरा अस्तित्व मिटाने की पावर भी उन्हीं लोगों के हाथों में है जिनकी वजह से मैं हूँ. इसलिए मैं बिल्कुल बेफिक्र हूँ. मैं बिगड़े बाप की बिगड़ी औलाद हूँ. जब मेरे बाप का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सका तो मेरा क्या बिगाड़ लेगा. मुझे फख्र है कि मैं किसी के रहमो-करम पर नहीं बल्कि लोग मेरे रहमो-करम पर हूँ.

जिस किसी भी गुजरते शख्स को चाहूँ तो मुँह के बल गिराकर पटखनी देकर धूल चटा दूँ. अभी उस दिन एक बहुत बड़ा दस टायरों वाला ट्रक बड़ी ठसक से बिना मेरा कोई संज्ञान लिए मेरे ऊपर से अपनी पूरी स्पीड में गुजरने की फिराक में था. गोया मैं कुछ हूँ ही नहीं. यह मुझे गवारा नहीं. मेरे ऊपर से गुजरने वाली हर शय को मेरे सम्मान में रुककर और गति धीमी करने के पश्चात ही गुजरने देना मुझे मंजूर है. लिहाजा मैंने उसके पिछले टायर को इतना जोर से झटका देकर उछाला कि उसकी कमानियों का दम निकल गया और दोनों चक्के ट्रक का साथ छोड़कर बगलवाली खाई में दौड़ गए. बेचारा दस-टायरा कराहता हुआ बीच सड़क पर घिसटकर ढेर हो गया. आने-जाने वाला सारा ट्रैफिक जाम हो गया और इस सारे फसाद की जड़ मैं शान से बीच सड़क पर विराज रहा था.

ऐसा नहीं कि मैं किसी से डरता नहीं, मैं डरता हूँ तो 'वेरी इन्डेफ़िनिट परसन्स' से जो शार्ट में 'वीआईपीज' के टाइटिल से नवाजे जाते हैं. इनका कोई भरोसा नहीं. ये क्या सोचते हैं, क्या कहते हैं और क्या करते हैं. यदि इस सबमें कोई सामंजस्य दिख जाए तो ये वीआईपी कहे ही क्यों जाएं. वैसे तो ये जिन गाड़ियों में चलते हैं वे लक्जरीयत से इतना भरपूर होती हैं जिनमें छोटे-मोटे गड्ढों से कोई फर्क पड़ता नहीं. परन्तु बाई चान्स यदि किसी ऐसे परसन् को हिचकोला लग जाए और उसका दिमाग घूम जाए तो कहिए तत्काल ही मेरे वजूद को समाप्त करने का फरमान जारी कर दिया जाए. लिहाजा इनसे बचकर रहना और इनको अपने से बचाए रखना मेरा



भी फर्ज बनता है. इसीलिए आपने कभी बिरले ही सुना होगा कि कोई इन्डेफ़िनिट परसन् कभी किसी गड्ढे की वजह से दुनिया से रुखसत हुआ हो. आम आदमी यानी मैंगो पीपुल और उनकी खटारा गाड़ियां मेरे सापट टारगेट सदैव रहे हैं और रहेंगे.

मैं पक्का बेहया हूँ, आराम से बीच सड़क पर लेटा मुस्कुराता रहता हूँ. लोग मुझे गालियां देते निकलते रहते हैं. मुझे लोगों की बुद्धि पर तरस आता है जब वे मुझे धिक्कारते हैं, क्योंकि मैं उन्हीं के बीच के कुछ लोगों के धत्कर्मों की उपज हूँ. मैं अपने आप में कुछ हूँ ही नहीं. मेरा अपना कोई अस्तित्व नहीं है. यदि धिक्कारना है तो उन्हें धिक्कारिए जो मेरी वजह हैं, या जिनकी वजह से मैं हूँ. चूंकि मैं शठता का नतीजा हूँ सो शठता ही करूँगा, मुझसे शराफत की उम्मीद करना बेमानी है. आशा करता हूँ कि आगे से मैं स्वयं या मेरा कोई भाई-बन्धु जब कभी आपकी परेशानी का सबब बनेगा तो आप आदर सहित सर झुकाकर अदब से पेश आते हुए बाजू से गुजर जाएंगे.

राजीव सिंह चन्देल
क्षे. का., लखनऊ.





IMPORTANCE OF COMMUNICATION SKILLS IN TODAY'S WORLD

Communication is the significant part and parcel of language. It is essential for survival of living creatures. All living creatures have developed their own means of communication. These means include the use of vocal noises, facial expressions or even body movements. Man is the only living creature with highly developed and systematic means of communication. He is able to exploit a variety of techniques for the purpose of communication. - In this way speech and gestures co-ordinate to give meaning to human thoughts.

Communication Skill: The word communication is derived from the Latin word 'Communicate' or 'communico', that means to share. Communication forms an essential part of our life. In fact it is as important to us as air, food, clothing and shelter. A person shares his sorrows, happiness, moments of excitement and grief with someone through communication only. A man would become quite irritated and frustrated if he cannot write or speak to his kith and kin for a long time. Those residing far away from their associates communicate to their dear ones through letters, telephone calls and so on. Official communication is carried out through letters, telephone fax, e-mail and computers. About 70 to 80 percent of the total working time of a professional is spent on communication. It may be verbal or non verbal. The success of communication is measured in terms of not only the effective transmission of the message but also the achievement of the intended result.

Verbal or spoken Communication: When two or more persons interact with each other through conversation, they are said to be following the mode of verbal communication. Meetings, Seminars, telephonic conversation, face-to-face interaction between two individuals can be cited as classic examples of verbal communication. The advantage of this communication

is that we can get immediate feedback. A speaker at a conference can visualize without much difficulty the way his lecture is being received by the audience. He can, as well, adjust the tone of his communication. Oral communication varies according to a person and also situation. A lawyer would be called 'insane' if he behaves in the same manner as he does in the courtroom.

Written Communication: It is the commonest mode of communication in the official circles. Much of your success depends on your ability to communicate efficiently through this mode. You may reproduce, multiply or store any information in this type of transaction. Immediate feedback, however, is not possible through this type of communication.

Non-Linguistic Communication: Communication can also be made through symbols. Traffic lights, road signs, railway signals are a few examples of non-linguistic communication. We also communicate through gestures if we are at a far off distance or are not in a position to meet somebody due to some obligations.

A new branch of communication called 'KINESICS' is on the way to development that is the study of non-verbal communication like body movement, appearance, voice etc.

Bilateral or Dyadic Communication: The term dyadic is derived from 'di' that means two. As such, dyadic communication takes place between two persons. It may be verbal or nonverbal, informal conversation between husband and wife or two friends or two acquaintances at a party, etc. There are no hard and fast rules for this conversation. It is a routine one and is a part and parcel of our life. Formal dyadic conversation however demand artistry and can be acquired through practice. Some

of the common forms of formal dyadic communication are Face-to-Face conversation, Telephonic conversation, Interview, Instruction and Dictation.

Interactive or Face-to-Face conversation: Majority of time at home is spent on face-to-face conversation. This conversation does not require any official decorum. Conversation outside our home i.e. the one which we have at restaurants, parties, parks and even offices, need not follow any rigid rule. However, if we keep in mind the following points, we may be labelled as a pleasant 'conversationalist'.

- Choose a topic that interests both the participants.
- Be courteous and cheerful. Remember that there is no such thing as uninteresting topic'. We only have 'uninteresting people'.
- Use simple, easy to understand language.

Here are some reasons why communication skills are so important:

- Good communication **passes information along**. If you can effectively communicate, then people understand you much better, and whatever information you are trying to tell them will get across without being misunderstood. In business, this can prevent mistakes from being made by people who thought you said something else. In personal life, it can help you to let others know what you want.
- Good communication **makes good relationships**. If you can effectively communicate, then other people know what you need and want, and you can let them know your feelings without being misunderstood. This prevents arguments, especially between couples, because it avoids all that "you should have known how I felt" sort of mind-reading arguments. If you can explain your thoughts and feelings, then you won't misunderstand each other.
- Good communication **helps you get what you need**. If you can effectively communicate what you need or want, you are more likely to be successful in getting it. Effective communication also helps you to convince others to agree with you in a persuasive setting.
- Good communication **gives you self-esteem**. People with effective communication skills are more confident, because they know that they can tell other people exactly what they need to, and they know that they can understand those people better.
- Good communication **helps you to think better**. In order to communicate effectively, you have to think ahead and organize your thoughts. This helps you learn how to organize, and how to plan ahead.
- Good communication **makes peaceful communities**. If you can effectively communicate, then you can get along better with your neighbours - in your town or city, in your country, and in the world. Most wars are caused by people not communicating effectively and not being able to negotiate with each other.

Here are some points to remember about good communication:

- Communication is a two-way street. Good listening skills are part of good communication; you need to understand what the other person is saying to you as well as to say what you want.
- Communication often includes non-verbal clues such as tone of voice, facial expression, gestures, and body posture. Good communication includes being observant and focusing on the other person.
- Communication is a compromise. Everyone has a right to have their own opinion; just because you don't agree with them is no reason not to listen.
- Communication skills are very important since everyday in our life we need to communicate with different kinds of people around us. And having good communication skills can improve our relationship with them.
- Also in every field, communication skills are very essential to succeed. A good communicator always has the high paying position.
- If you can communicate well, you can decide whether or not you have understood what the teacher just said, and can then let the teacher know whether or not you need additional help. Communication is also vital to interactions between you and your peers - if you can communicate well, you are less likely to use violence and get into trouble.
- Identification is one of the key ingredients of effective communication. Listeners can identify with what you are saying and with the way you are saying it. The ability to communicate is the primary factor that distinguishes human beings from animals. And it is the ability to communicate well that distinguishes one individual from another.
- Communication skills are incredibly important, not only to students, but to everyone. The CEOs of top companies have stated that the primary things they look for when hiring new employees is how well they are able to communicate, according to several communications textbooks. Verbal communication is a large part of how you present yourself, and so having the appropriate skill set is beneficial in both your private and public lives.
- If someone is unable to communicate well, it does not matter how brilliant or talented they are. They will not be able to live up to their full potential if they cannot present themselves well and adequately express their ideas.
- Communication skills are very essential because it usually makes or breaks your career.
- In work, communication skill is very important since you need to communicate with others and you need to deliver and get the right message.
- Because if you can't communicate effectively, people will not listen to what you have to say and you will have very limited career options.

V. H. Kamath
R.O. Belgaum



अलंकरण व परिधान

हमारे व्यक्तित्व के आवश्यक कवच

आंखों में जर्नलिस्ट बनने का सपना सजाये, कॉलेज का सितारा रही नवयुवती आन्द्रेया को एक फैशन मैगजीन में नौकरी मिल जाती है। अपनी कॉलेज की साधारण साज-सज्जा को कायम रखते हुए ही आन्द्रेया अपने नए ऑफिस पहुँचती है। नौकरी के पहले दिन ही ऑफिस के सभी स्टाफ सदस्य आन्द्रेया के कपड़े एवं बालों पर ताना कसते हुए उसका मजाक बनाते हैं। उसकी बॉस, जो स्वयं महिला हैं, वे भी आन्द्रेया के पहनावे एवं साज सजा से निराश होती हैं। सब के लिए वो महज एक मनोरंजन का साधन बनी हुई है।

अंततः आन्द्रेया अत्यंत निराश एवं दुखी होकर प्रॉफेशनल सहायता लेकर अपने पहनावे एवं रख-रखाव का ढंग बदल लेती है। धीरे-धीरे हालात सामान्य होने लगते हैं और आन्द्रेया की बॉस की नजरों में उसके काम का भी मूल्य बढ़ता जाता है।

अधिकांश लोग यह समझ गए होंगे कि यह कहानी The devil wears parada की है। यह कहानी सोचने पर विवश करती है कि क्या आन्द्रेया अच्छी कर्मचारी नहीं थी? क्या सिर्फ उसके कपड़ों का ढंग ही उसकी कार्यशैली को आँकता है? क्या कीमती आधुनिकतम कपड़े ही व्यक्ति की क्षमता का मापदंड हैं? क्या बाह्य अलंकरण आज के समय में अनिवार्य है?

आन्द्रेया हमेशा ही अच्छी कर्मचारी थी, जोश से भरी। अपने काम के प्रति उत्साहित, सीखने की ललक, सब कुछ प्रारम्भ से ही उसमें विद्यमान था, किन्तु उसके पहनावे से किसी का ध्यान ही नहीं हटता था, कि उसकी प्रतिभा का आंकलन कर सकें। साथ ही प्रतिदिन के ताने उसके आत्मविश्वास को भी ठेस पहुँचाते थे। जब वह अपने सहकर्मियों की तरह ही पहनावा पहनने लगी तब कहीं उसके सहकर्मियों का एवं बॉस का ध्यान उसकी कार्यशैली की ओर आकर्षित हुआ। उसके परिधान एवं अलंकरण ने कवच के रूप में काम करते हुए उसे अनावश्यक छींटाकशी से मुक्ति प्रदान की। उसके नये और आकर्षक व्यक्तित्व से सभी अचंभित थे और आन्द्रेया उत्साह एवं आत्मविश्वास से भरपूर।

हम चाहे भारत में रहें या यूरोपीय देशों में, हमारे समाजों में व्यक्ति के परिधान उसकी पहचान और परिभाषा की भूमिका निभाते हैं। उचित मौके पर उचित परिधान एवं साज-सज्जा न केवल हमारे व्यक्तित्व को निखारते हैं वरन् हमारी अभिरुचि और शैली को भी उजागर करते हैं। जहां उचित वेशभूषा हमारा आत्मविश्वास बढ़ाती है वहीं हमें आस-पास के माहौल में स्वयं को ढालने हेतु भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय परंपरा एवं आधुनिक पाश्चात्य शैली का समावेश हमारे परिधानों पर भी स्पष्ट है। ऐसे में, जबकि हमारे पास परिधान के ढेरों विकल्प उपलब्ध हैं, विभिन्न मौकों पर कैसे परिधान का चयन किया जाए, आइये जाने क्या है विशेषज्ञों की राय।

आयु एवं समय के अनुरूप- सबसे मुख्य बात है कि आयु के अनुरूप ही परिधान धारण किए जाएँ। कम आयु में चटकीले परिधान शोभा देते हैं, किन्तु प्रौढ़ावस्था में हल्के वर्ण के परिधान अधिक उचित प्रतीत होते हैं। शृंगार भी आयु के अनुरूप हो, युवतियाँ जहां पारंपरिक भारी आभूषणों एवं शृंगार से स्वयं को निखार सकती हैं, प्रौढ़ावस्था में आभूषण संख्या में भी कम हों एवं भार में भी। इसी प्रकार शृंगार भी हल्का ही होना चाहिए। दिन के प्रकाश में सौम्य वर्ण ज्यादा खिलते हैं। रात्रि में मेकअप गहरा होना चाहिए जबकि दिन के समय हल्का। अगर आप खेल कूद में रुचि रखती हैं, तो ध्यान देने योग्य बात है कि खेलों के लिए बिलकुल महीन शृंगार ही करें। जहां उचित शृंगार आपके व्यक्तित्व को निखार सकता है वहीं अनुचित शृंगार आपकी पूरी मेहनत पर पानी फेर सकता है।

परिधानों की रूपरेखा- सदैव अपनी शारीरिक बनावट के अनुरूप परिधान का चयन करना चाहिए। अत्यंत चुस्त अथवा अधिक ढीले-ढाले परिधान अपनी शोभा खो देते हैं। बेढब परिधान आपको हंसी का पात्र बना देते हैं। इसके साथ ही परिधान ऐसे हों कि धारण करने के पश्चात भी उठने बैठने की स्वतन्त्रता बनी रहे। परिधानों में उपयोग किया जाने वाला कपड़ा अति महत्वपूर्ण है। कुछ परिधान मनोहर प्रतीत होते हैं किन्तु धारण करने पर ज्ञात होता है कि शरीर के लिए आरामदायक नहीं हैं। ऐसे में आवश्यक है कि कपड़े को परखा जाए। प्राकृतिक कपड़ा सामान्यतः शरीर के प्रति कोमल एवं आरामदायक होता है।

स्वच्छ परिधान- आपके परिधान चाहे कितने ही बहुमूल्य क्यों न हों, अगर मैले अथवा सिलवट वाले हैं, तो आपकी छवि धूमिल करने में पूर्णतः सक्षम होते हैं। सूती हों या रेशमी, सिलवट से रहित, स्वच्छ परिधान ही धारण करें। साथ ही यह भी ध्यान करने योग्य बात है कि प्याज, लहसुन एवं मसालों की महक व्यंजनों में जँचती है, परिधानों पर नहीं। पाकशाला में कार्य करते हुए अगर आपके परिधानों पर चाय/हल्दी/चटनी के दाग लग जाएँ तो कृपया इन परिधानों को दुबारा उपयोग करने से पहले धोकर स्वच्छ कर लें।

त्योहारों पर- सामान्यतः भारतवर्ष में त्योहारों पर पूजा-पाठ का विधान है। पूजा के समय जमीन पर बैठना आवश्यक है। अतः परिधान का भारतीय शैली का एवं सुविधापूर्ण होना ही उपयुक्त होगा, ताकि उठने बैठने में आसानी हो। कुछ राज्यों में त्योहारों के लिए विशिष्ट परिधान चिह्नित हैं। जैसे रास गरबा के लिए घाघरा चोली। अन्य किसी भी परिधान में रास गरबे का वो रस नहीं आता, या फिर बंगाल में दशहरा के दिन लाल बार्डर की सफेद साड़ी। या फिर ओणम के उपलक्ष्य पर उपयोग में लायी जाने वाली विशिष्ट या चन्दन वर्ण वाली सुनहरे बार्डर की साड़ी। त्योहारों पर परिधान के साथ भारी एवं पारंपरिक आभूषणों का भी चलन है। सामान्यतः करवा चौथ के उपलक्ष्य पर विवाहित महिलाएं सुहाग की सभी

निशानियों को धारण करते हुए व्रत पूजा करती हैं। इसके उलट होली के त्योहार पर सामान्यतः अथवा अत्यंत हल्के वर्ण के परिधानों का उपयोग किया जाता है, ताकि रंगों का त्योहार परिधानों पर भी पूर्णतया परिलक्षित हो।

मौसम के अनुरूप- भारतवर्ष में कहावत है कि बारह माह में तेरह त्योहार होते हैं। अतः प्रत्येक माह में एक त्योहार। इसलिए आवश्यक है कि मौसम के अनुरूप परिधान एवं वेश भूषा धारण की जाए। हमारे हिन्दू नव वर्ष की तिथि मुख्यतः ग्रीष्म काल में ही होती है। नव वर्ष पर नवीन परिधानों का उपयोग होता है। ऐसे में यदि जरी के अथवा सितारे-जड़े, काले अथवा वर्ण के परिधान का उपयोग किया जाए तो अटपटा सा लगता है। ग्रीष्म काल में सूती हल्के वर्ण के परिधान उपयुक्त लगते हैं, जो कि दृष्टि को भी शीतलता प्रदान करें, साथ ही धारण करने वाले को भी गर्मी में असुविधा न हो। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि ग्रीष्म काल में पसीना आता है जो कि नूतन वस्त्रों पर सामान्य से अधिक परिलक्षित होता है।

पूजा-पाठ पर- पड़ोस में सत्यनारायण की पूजा थी, होम भी होना था। सभी पड़ोसी आमंत्रित थे। माही ने पूजा में सम्मिलित होने के लिए जीन्स का चयन किया। निश्चय ही उसका परिधान चर्चा का विषय बना। हमारे समाज में पाश्चात्य एवं आधुनिक कपड़ों को उचित स्थान दिया गया है। किन्तु आज भी वैदिक अनुष्ठानों पर भारतीय परिधान ही उचित जान पड़ते हैं। इसी प्रकार ऐसे उपलक्ष्यों पर काले अथवा सफेद वर्ण के परिधानों से भी बचा जाए क्योंकि यह दोनों ही वर्ण वैदिक अनुष्ठानों के लिए अनुचित माने गए हैं।

शादी ब्याह पर- अरोमा की शादी थी, चर्च में। बड़े उत्साह से सम्मिलित होने गए सभी। अरोमा ने एक सुंदर वर्ण का गाउन धारण किया था। वहाँ आंगंतुकों में शेरिन भी थी। शेरिन ने भी वर्ण के परिधान का ही उपयोग किया था। सभी उसे देख अवाक थे। इसी तरह एक अन्य प्रसंग में नमिता की शादी पर सुहाना अपने

ब्याह के परिधानों को धारण कर सम्मिलित हुईं। एक बार को आंगंतुक भरमा गए की वधू कौन है। शादी ब्याह तो सजने सँवरने के अवसर होते हैं। साथ ही घर में ही ब्याह हो तो और भी हर्षोल्लास होता है। किन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि साज-सज्जा इतनी न हो कि वधू और आप में कोई अंतर न जान पड़े। आजकल वधू के लिए लाल के अतिरिक्त अन्य वर्ण के परिधानों का भी उपयोग होने लगा है,

सामाजिक दावत- सहाय जी अपनी सेवानिवृत्ति पर दावत दे रहे थे। मालिनी सोलह शृंगार कर सम्मिलित हुईं। सुजाता को तो एक उपयुक्त अवसर मिल गया मालिनी का मजाक उड़ाने का। सामाजिक दावतों पर परिधान बहुत ज्यादा

तड़क भड़क वाले न हों। साथ ही शृंगार भी सामान्य ही होना चाहिए। शादी ब्याह में एवं सामाजिक दावत में अंतर होता है। न बैंड-बाजा, न DJ, न ढेर सारी रोशनी, उसी तरह परिधान में भी अंतर रखना चाहिए। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि आप बाजार जाने के परिधानों में दावत में सम्मिलित हों।

कार्यालय में- शादी-ब्याह, दावत तो यदा-कदा ही होते हैं, परंतु कार्यालय वह स्थान है जहाँ हम रोज जाते हैं। इसलिए कार्यालय में उपयुक्त परिधान का विशेष महत्व है। आपके परिजन संभवतः आपके अनुपयुक्त परिधान पर आपका ध्यान आकृष्ट करें, तथा कुछ समय पश्चात आपकी चूक भुला दें, किन्तु कार्यालय में परिवार नहीं, सहकर्मी होते हैं, जो आपके प्रतिस्पर्धी हैं। यहाँ एक नगण्य सी चूक भी आपकी छवि धूमिल करने के लिए पर्याप्त है। इसलिए कार्यालय हेतु विशेषज्ञों ने निम्न बिन्दुओं को महत्वपूर्ण बताया है:

आस पास देखें- अपने सहकर्मियों के परिधानों को ध्यान से देखें। अगर कार्यालय में सभी फॉर्मल वस्त्रों को प्रयोग करते हैं तो वैसा ही करना उचित होगा, इसी प्रकार अगर सभी कैजुअल में आते हैं, तो कृपया आप फॉर्मल धारण कर भीड़ से अलग न दिखाई दें।

चमकीले वस्त्र- किसी उपलक्ष्य विशेष पर चमकीले, जरीदार, गोटेदार वस्त्रों का उपयोग किया जा सकता है, किन्तु दैनिक तौर पर सामान्य वस्त्र ही धारण करना उचित होगा। अगर आप पब्लिक डीलिंग में हैं तो यह और भी आवश्यक है की पब्लिक केवल आपके कार्य एवं कार्यशैली पर ध्यान दें न कि आपके चमकीले परिधानों पर। निश्चित ही आप नहीं चाहेंगी कि हर आंगंतुक आपकी चमक का कारण जानने को आतुर हो। साथ ही भारी परिधानों के साथ रोजमर्रा के कार्यों में भी असुविधा होती है।

आभूषण- हीना की नई नई शादी हुई है। रस्मों के अनुरूप वह हाथों में चूड़ा डाले कार्यालय आई। उसके आभूषण एवं साज सज्जा से सभी को ज्ञात हुआ कि वह नव-वधू है। तीज और करवाचौथ पर तो सामान्यतः सभी विवाहित महिलाएं आभूषणों को धारण करती हैं, किन्तु प्रभा की पायल तो रोज रून्-झुन करती है, इतनी ध्वनि तो विश्वामित्र का भी ध्यान भंग कर दे। प्रभा कहीं भी जाए उसकी उपस्थिति की सूचना उसकी पायल दे देती है। आजकल सब उसे रून्-झुन नाम से संबोधित करने लगे हैं। की-बोर्ड पर कार्य करते समय, पृथा की चूड़ियाँ एवं कंगन खूब बजते हैं, या यूं कहें कि काम कम होता है आवाज अधिक। कार्यालय में न्यूनतम आभूषणों का प्रयोग वांछनीय है। चूड़ी सुहाग की निशानी है अतः केवल दो-तीन चूड़ियाँ ही उपयोग में लाई जाएँ। पायल अगर आवश्यक है तो कृपया उसके घुंघरू निकाल कर धारण करें। संभव हो तो एक कलाई पर घड़ी धारण करें। यह इस बात का सूचक है कि आप समय का आदर करती हैं।

जब प्रेजेंटेशन हो- जब आप कोई प्रेजेंटेशन देने वाली हैं, तो आवश्यक है कि सुविधापूर्ण परिधानों का चयन हो, ताकि आपकी गतिविधि आसान हो। आपके वस्त्रों के वर्ण आपके प्रेजेंटेशन के वर्ण से भिन्न होने आवश्यक है, प्रेजेंटेशन के समय गहरे वर्ण के परिधान का प्रयोग उचित होगा। साथ ही निम्नतम आभूषणों का ही उपयोग करें ताकि सबका ध्यान आपके प्रेजेंटेशन पर ही हो और आभूषण की आवाज ध्यान भंग न करे।

ऑफिस पार्टी- कार्यालय द्वारा आयोजित दावत सामान्यतः किसी होटल अथवा पार्टी गार्डेन में होती है। इस दावत में सभी वरिष्ठ अधिकारी भी सम्मिलित होते हैं, वे भी जिनसे आपकी रोज भेंट नहीं होती। रोज के कार्यालय के परिवेश से दावत का परिवेश भिन्न होता है, इसलिए, आपका परिधान एवं आपकी साज सज्जा का

अवसर के अनुरूप होना, अन्य किसी भी दावत की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी दावत पर, रोजमर्रा के परिधानों की तुलना में कुछ सजीला धारण करना उचित है। फॉर्मल पार्टी वियर बाजार में उपलब्ध हैं। ऐसे परिधान चमकीले नहीं होते, न ही खूब रंग रंगीले होते हैं, वरन यह परिधान मुख्यतः एक अथवा दो वर्ण से ही निर्मित तथा अत्यंत गरिमापूर्ण होते हैं। ऐसी दावत में परिधान से मेल खाते हल्के आभूषणों का उपयोग उचित होता है।

केश- सामान्यतः महिलाओं के केश लंबे होते हैं। लंबे केशों को विभिन्न प्रकार से बांधा जा सकता है। किन्तु आजकल खुले केशों का चलन है, अथवा पोनी टेल जिसमें एक क्लचर अथवा हैयर बैंड की सहायता से केशों को केवल जड़ों के पास बांधा जाता है। अपनी सम्पूर्ण लंबाई में केश खुले होते हैं। अगर आप केश खुले रखती हैं तो ध्यान देने योग्य बात है की केश बिखरे हुए न हों। मध्यम लंबाई के केश खुले रखने के लिए बिलकुल उपयुक्त होते हैं। केशों को विभिन्न प्रकार से रंगने का भी चलन है आजकल। अपने व्यक्तित्व के अनुसार केश रंगे जा सकते हैं।

नाखून एवं अन्य मुखाकृति- गंदे एवं बेतरतीब नाखून, फटे हुए होंठ, कांतिहीन त्वचा, सूजी हुई आँखें, आपकी छवि को धूमिल करती हैं। अतः परिधान के साथ-साथ इन छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

बैग/पर्स- कार्यालय हो या दावत या फिर डेट, पर्स तो साथ जायगा ही, इसलिए कटे-फटे पर्स का उपयोग न करें। अगर उसकी जिप काम नहीं कर रही है तो उसे तुरंत सुधरवाएँ अथवा नवीन पर्स क्रय करें। अपने पर्स को अनावश्यक समान से मुक्त रखें। बेकार के कागज आदि को पर्स में जमा न करें।

सुगंधी- सौम्य सुगंधी का प्रयोग करना न भूलें। सुगंधी केवल आपको ही नहीं दूसरों को भी मंत्रमुग्ध करने में सक्षम है। कहते हैं "A woman's perfume tells more about her than her handwriting" इसलिए अति तीव्र सुगंधी के प्रयोग से बचें। तीव्र गंध से कई लोगों को एलर्जी होती है, तथा सिर दर्द भी होता है। तीव्र गंध ध्यान भंग करने में अव्वल है।

आपकी सहजता- हर बड़ी छोटी बात का ध्यान रखते हुए मृदुला तैयार तो हो गई, किन्तु वह साड़ी में स्वयं को असहज महसूस कर रही थी। दावत तक पहुँचते-पहुँचते वह उदास हो चुकी थी। वह दावत समारोह का तनिक भी आनंद न ले पाई। अगर आप साड़ी में असहज हैं तो कृपया अपनी सहजता के अनुरूप कोई अन्य परिधान धारण करें। परिधान की शोभा आपके बर्ताव पर, आपके उठने-बैठने के ढंग पर भी निर्भर करती है। आपका लालित्य-संतुलन आपके व्यक्तित्व को चार चाँद लगा देता है। आपका आत्मविश्वास एवं मनोदशा आपके चेहरे पर भी झलकती है।

एक अति महत्वपूर्ण आभूषण, जो सदैव धारण करना चाहिए- आपकी मुस्कान। यह आभूषण अत्यंत आसानी से उपलब्ध है तथा कुदरत से बिना किसी मूल्य के प्राप्त हो जाती है। यह आभूषण सारे परिधानों पर एवं लगभग सभी अवसरों में फबता है। इसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए, इसके कोई भी साइड इफैक्ट नहीं होते। उलटे, यह आभूषण तो विपरीत मनोदशा को भी आपके अनुकूल करने में सहायक सिद्ध होंगे।



शिल्पा शर्मा सरकार
टी.बी.डी.कें.का., मुंबई

Innovation : Staff Feedback/Suggestions

With a view to motivate the staff and encourage them to freely communicate with the Top Management and give their views/suggestions for the betterment of the Bank, a platform in the form of a dedicated e-mail id 'innovation@unionbankofindia.com' is created. The suggestions and feedback so received will be evaluated by a committee of Senior Officials. The feasible suggestions will be shortlisted for implementation and the same will be uploaded on the link 'http://172.31.14.12/UBINET' specially created on UBINET for information of all staff members. This link will be periodically updated as and when the suggestions are implemented. However, the staff members are requested not to use this platform for grievances for which many other channels are available.

(Refer Circular Let. No.3047 dt. 12.09.2014 & 6904 dt. 17.01.2015)

व्यस्त हूँ मैं...

ए वक्त जरा रुक रुक के चल,
अभी व्यस्त हूँ मैं जिंदगी सुलझाने में,
मांगता है हर रोज कोई मेरे वक्त का हिस्सा,
अभी व्यस्त हूँ मैं उसका जवाब लाने में,
बिताना चाहती हूँ मैं भी वक्त अपनों के साथ,
मगर व्यस्त हूँ मैं उस वक्त को निकाल पाने में,
चाहती हूँ मैं भी जीवन को जीना
क्या आती-जाती सारे है जिंदगी,
अभी व्यस्त हूँ मैं इसका पता लगाने में.

पूजा कनौजिया,
के. ले. वि. विभाग, कें. का., मुंबई.

हरेक के लिये बैंकिंग

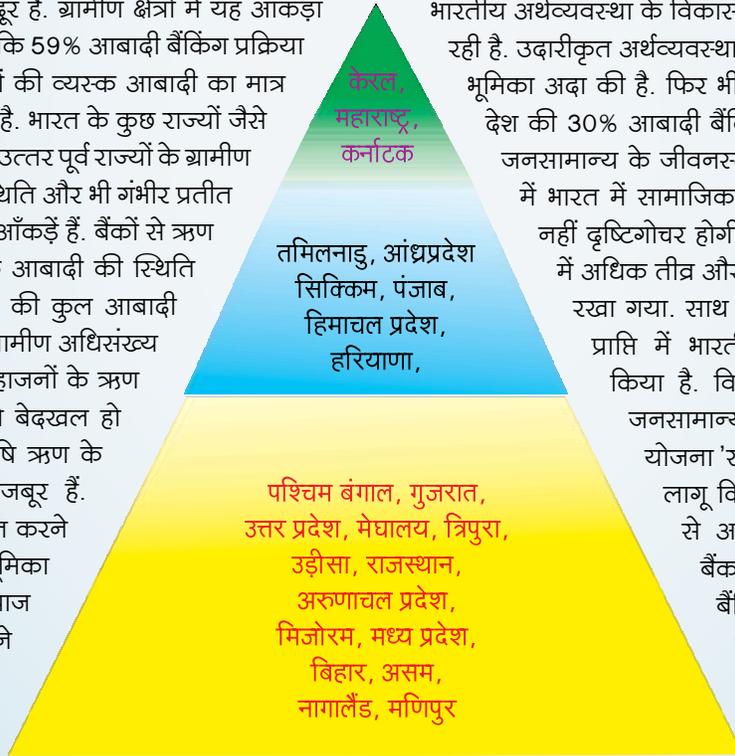


भारतीय अर्थव्यवस्था में वित्तीय समावेशन आज सर्वाधिक लोकप्रिय तथा चर्चित शब्द बना हुआ है। वित्तीय समावेशन का अर्थ कम आय वाले लोगों को कम लागत पर बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाना है जो अभी तक इसके दायरे से बाहर रहे हैं। वित्तीय समावेशन हेतु बैंकिंग सेवाओं से जुड़ने के लिए बहुत कम या शून्य शेष खाते परिचालित किए जाते हैं। वित्तीय समावेशन की अवधारणा को जमीन पर उतारने का मूल प्रयोजन, उदारीकृत भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता का लाभ समाज के निर्धनतम व्यक्ति तक पहुँचाने और आर्थिक विकास में उनकी भी भागीदारी सुनिश्चित करने की है। सामान्यतः इसके लक्षित वर्ग में ग्रामीण तथा शहरी गरीब, सीमांत तथा लघु किसान, समाज के पिछड़े तथा अल्पसंख्यक समुदाय के निर्धन लोगों को शामिल किया गया है जो बैंकिंग प्रणाली की जटिलता से बैंकिंग सुविधाओं से अब तक दूर रहे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा जारी बुकलेट में वित्तीय समावेशन को समावेशी विकास के लिए अपरिहार्य अंग बताया गया है। भारत में आज भी 30% लोक वित्तीय सेवा से दूर हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह आँकड़ा 45% है। आँकड़ों से पता चलता है कि 59% आबादी बैंकिंग प्रक्रिया से जुड़ नहीं पायी है। ग्रामीण क्षेत्रों की व्यस्क आबादी का मात्र 39% ही बैंकिंग व्यवस्था से जुड़ा है। भारत के कुछ राज्यों जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड तथा उत्तर पूर्व राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों को शामिल किया जाए तो स्थिति और भी गंभीर प्रतीत होगी। यह बचत खाते से संबंधित आँकड़ें हैं। बैंकों से ऋण संबंधित सेवाएँ लेने वाली व्यस्क आबादी की स्थिति और भी निराशाजनक है जो देश की कुल आबादी का 4% ही है। आज भी भारत के ग्रामीण अधिसंख्य लोग ऋण के लिए साहूकार - महाजनों के ऋण जाल में फँसकर अपने जमीन से बेदखल हो रहे हैं तो दूसरी ओर किसान कृषि ऋण के चलते आत्महत्या करने को मजबूर हैं। हाल के वर्षों में ऋण सुविधा प्रदान करने में सूक्ष्म वित्त संस्थानों की भूमिका उल्लेखनीय रही है। लेकिन उच्च ब्याज दर और जबरन ऋण वसूली ने इसकी भूमिका पर प्रश्नचिह्न खड़ा किया है। इसी संदर्भ में बैंकों ने स्वयं सहायता समूह (SHG) के माध्यम से सूक्ष्म वित्त प्रदान करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। स्वयं सहायता समूह ने देश की अधिकांश ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार प्रदान करने तथा स्थानीय बैंक से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। साथ ही किसान क्रेडिट योजना ने भी ग्रामीण क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

उपर्युक्त तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि उदारीकृत अर्थव्यवस्था में

भारत को उच्च विकास समृद्धि वाला देश माना गया है। विगत कुछ वर्षों में भारत ने लगभग 8% की विकास दर को हासिल किया था। इस विकास दर ने जहाँ एक ओर उच्च मध्यवर्गियों का जीवन स्तर उच्च बनाया था तो दूसरी ओर आर्थिक असमानता की खाई को और भी चौड़ा किया था। अर्थात् यह कह सकते हैं कि वित्तीय समावेशन इसी पृष्ठभूमि में एक अपरिहार्य अवधारणा के रूप में सरकार द्वारा अपनाया गया है। भारतीय संविधान में सामाजिक, आर्थिक विकास में भागीदारी हेतु सामाजिक न्याय की अवधारणा को महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। बैंकों का राष्ट्रीयकरण आज लोगों तक आर्थिक, सामाजिक विकास की पहुँच का प्रयास माना जा सकता है। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना भी इसी प्रयास का एक अंग रही है। मिश्रित अर्थव्यवस्था पर आधारित भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में राष्ट्रीय बैंकों की अग्रणी भूमिका रही है। उदारीकृत अर्थव्यवस्था में भारतीय बैंकिंग प्रणाली ने महती भूमिका अदा की है। फिर भी आज यह चिन्तनीय स्थिति है कि देश की 30% आबादी बैंकिंग की पहुँच से बाहर है। जब तक जनसामान्य के जीवनस्तर में सुधार नहीं होगा सही मायने में भारत में सामाजिक, आर्थिक विकास की सही तस्वीर नहीं दृष्टिगोचर होगी। इसीलिए 11वीं पंचवर्षीय योजना में अधिक तीव्र और ज्यादा समावेशी विकास का लक्ष्य रखा गया। साथ ही भारत सरकार ने इस लक्ष्य की प्राप्ति में भारतीय बैंकिंग व्यवस्था को शामिल किया है। वित्तीय समावेशन को अधिकाधिक जनसामान्य के दायरे में लाने के लिए विशेष योजना 'स्वाभिमान' को 10 फरवरी 2011 को लागू किया गया था जिसका लक्ष्य 2000 से अधिक आबादी वाले सभी 73000 बैंक रहित गाँवों में लोगों को बुनियादी बैंकिंग सेवा प्रदान करने का वादा था। यह अभियान ग्रामीण भारत में बैंक खाता खोलने, आवश्यकता आधारित ऋण सुविधा उपलब्ध कराने, धन प्रेषण सुविधाओं के साथ ही आर्थिक साक्षरता को बढ़ावा देने में मदद करेगा। नयी तकनीक तथा बैंक करेस्पॉन्डेन्ट इस अभियान का संचालन करेंगे। 'स्वाभिमान' वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग और भारतीय बैंक संघ की एक उल्लेखनीय पहल है जिसका उद्देश्य ग्रामीण तथा शहरी भारत के बीच आर्थिक दूरी को कम करना है।

वित्तीय समावेशन के माध्यम से ग्रामीण बचतों को राष्ट्रीय आर्थिक



गतिविधि में शामिल कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करना है. विगत 13 वर्षों में योजना आयोग तथा भारत सरकार की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक योजनाओं का लक्ष्य अधिक से अधिक रोजगार सृजन रहा है. खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में 'मनरेगा' जैसे कार्यक्रम रोजगार सृजन के सबसे लोकप्रिय तथा सफल कार्यक्रम साबित हुए हैं. हाँलाकि मजदूरी भुगतान जैसे मसलों पर भ्रष्टाचार की खबरें मिलती रही हैं और यही वजह है



कि सरकार ने उन सभी आर्थिक, सामाजिक कल्याणकारी कार्यों का वित्तीय भुगतान बैंकों के माध्यम से सुनिश्चित करने का दिशा-निर्देश दिया है. वित्तीय समावेशन की सफलता हेतु वित्तीय साक्षरता के साथ-साथ यूआईडी (UID) और मोबाइल बैंकिंग का इस्तेमाल तथा नवीन तकनीकों का प्रयोग कर इसकी पहुँच के दायरे को विस्तृत करना है.

इनवेस्ट इंडिया इन्कम एंड सर्विस सर्वे के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों के लोग भी वित्तीय मामले में पूर्णतया शिक्षित नहीं हैं. वित्तीय साक्षरता की कमी ग्रामीण जनता को सूदखोर महाजन के पास जाने को विवश करती है. साथ ही वे बचत संबंधी बैंकिंग उत्पादों से पूरी तरह अनभिज्ञ रहते हैं. यह कमियाँ वित्तीय समावेशन की पूर्ण सफलता में बाधक हैं. वित्तीय साक्षरता के लिए आर.बी.आई. की पहल पर प्रोफेसर एस.एस. जोशी कार्यदल का गठन किया गया, जो किसान की ऋण व्यवहार्यता, बचत तथा जीवन निर्वाह संबंधी परामर्श पर आधारित था. राज्य सरकारों द्वारा वित्तीय साक्षरता सह परामर्श केन्द्र भी खोले गये हैं,

ये सभी प्रयास जनसामान्य में वित्तीय साक्षरता तथा जागरूकता को बढ़ाने के लिए किये गये हैं. सरकार द्वारा बैंकों को जनोन्मुखी होने का निर्देश दिया गया है. इस दिशा में हमें प्रगति देखने को मिल रही है.

वित्तीय समावेशन हेतु केन्द्र सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक तथा वित्त मंत्रालय द्वारा इस दिशा में प्रधानमंत्री जन-धन योजना काफी अभिनव प्रयास किए जा रहे हैं. नाबार्ड, जिला

स्तरीय कॉ-आपरेटिव बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक द्वारा उल्लेखनीय प्रयास किए जा रहे हैं. स्वयं सहायता समूहों ने भी इसमें महती भूमिका निभायी है. किन्तु इसमें अभी और भी तेजी लाने की आवश्यकता है. तभी वित्तीय समावेशन की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा सकता है. ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आर्थिक स्वावलंबन बैंकों की सहायता से ही संभव है. इस दिशा में बैंकों को और भी प्रयास करने की आवश्यकता है. भारत सरकार की मुहिम 'मेरा खाता-भाग्य विधाता' भी इसी मन्तव्य से जुड़ी एक अवधारणा है जिसका इस समय बैंकों द्वारा खूब जोर-शोर से क्रियान्वयन किया जा रहा है.

सुप्रिया

विल्लीवाक्कम शाखा, क्षे.का., चेन्नै.

जीवन दान



माँ तुम मुझे बचा लेना !
माँ तुम मुझे बचा लेना !!
यह दुनिया मुझे दिखा देना !
माँ तुम मुझे बचा लेना !

पापा की आँखों का तारा !
अंश तुम्हारा ही हूँ सारा !
तुम जीवन दूध पिला देना !
माँ तुम मुझे बचा लेना !!

क्या जाने कल मैं भी बन जाऊँ, इंदिरा या फिर सानिया !
काम करूँ जग में ऐसा किं लोहा माने सारी दुनिया !
मेरे अरमानों की बगिया अब तुम इसे सजा देना !
माँ तुम मुझे बचा लेना !!

पावन कोख जो माँ तेरा है !
नों महीने अब घर मेरा है !
अपनी सांसों का हिस्सा बनाकर !
इस घर में मुझे छुपा लेना !
माँ तुम मुझे बचा लेना !!

जीवन मेरा तुझ पर निर्भर !
यह जीवन दान दिला देना !
माँ तुम मुझे बचा लेना !!
माँ तुम मुझे बचा लेना !!

हेमंत कुमार लखेरा
यू एल पी चेम्बूर



uniOne DIARY

"Our business in life is not to get ahead of others but to get ahead of ourselves to break our own records, to outstrip our yesterdays by our today, to do our work with more force than ever before."

While every one of us expects a good life with all comforts and luxuries of modern day life, it never crossed my mind that there are a large number of less fortunate men, women and children, who are denied of even the basic necessities of life. They live a life of misery and sufferings.

This realisation, I have faced, when I became part of UniOne - a unique initiative taken by Union Bank executives' spouses under the leadership of Mrs. Namrata Tiwari, Mrs. Sarla Subrahmanyam and Mrs. Poonam Sethi.

When the idea was discussed the first time about being part of Unione - An

NGO, I was not very sure how it would turn out, but somehow I just let go my inertia, with a hope that it will not be another housewife typical get-together.

UniOne is an unique and noble initiative which has given opportunity to all of us to contribute towards welfare of the underprivileged and less fortunate ones. Apart from social initiatives taken by Unione, it has also given us a unique opportunity to know - each other, we, who belong to different places and culture. UniOne is unique little India - diverse but united.

I feel fortunate to get an opportunity, to contribute towards the welfare of the young and underprivileged girls through Project Nanhi Kali, an NGO that supports education for underprivileged girls in India. Similarly, I was also part

of our contribution towards ADAPT - Able Disabled All People Together. Adapt is working to provide education and treatment - for the spastics.

To sum up my experience, I have found that the most fabulous way to start my day is with a smile, which I saw on the face of each little girl in Nahni Kali having hope for a better future with some help from society. This experience is my treasure for life.

I must thank UniOne for giving me such a wonderful opportunity to contribute towards the welfare of society and also to know more about Union Bank's extended family more closely and work as a team.

Alka Kuril
W/o. Mr. Anil Kuril
CA&ID, CO, Mumbai



"On 07.02.2015, Uni-One Foundation, the NGO led by Mrs. Namrata Tiwari, Mrs. Poonam Sethi and other members, had organized a health check-up programme for the wives of the drivers working for our Bank's executives at N.M. Medical Centre, Khar, Mumbai. Mrs. Hemalatha Rajan, GM(P) was also present on this occasion."

PERSONALITY DEVELOPMENT AND LAW

Man is a social animal and cannot exist alone. Society is an essential condition of human life. The development of an individual, his personality and quality of his life is inextricably linked to his surroundings and the society that he lives in. Any efforts for development and growth of individuals necessarily require some kind of transformation in the social structures, social patterns or social interactions. The prevailing social and economic conditions help in shaping up the personality of an individual. This is where the role of law comes in. Law helps in regulating human behavior as well as the social structure and institutions, thereby influencing the personality development of the masses.

Many distinguished legal scholars and thinkers have recognized that law is an instrument of social change and it can effectively be employed to bring about transformation in the social structure and provide for better conditions of living for the people.

The role of law in the context of personality development is twofold. First, to prevent commission of crimes, thereby reducing the social impact of crime and ensuring that there are no victims to bear the brunt. Second, it enacts various legislations and rules and regulations for the upliftment of people who are already suffering from personality disorders or strive to provide a reasonable standard of living to one and all to ensure better personality development of the public.

India, after independence, adopted the ideal of a socialistic pattern of society. This reflects in the legal system and various legislations and programmes for social welfare that are developed in various spheres. They aspire to achieve a social order which would eradicate poverty and exploitation of the weaker section, ensure equal opportunity for all its citizens, social security along with just obligations towards the nation and one another. Ensuring these ideals to one and all will not only lead to a stronger nation but also a citizenry with wholesome personality.

The Courts have held that Public Sector Banks are expected to be model employers and thereby take steps to ensure fairness and equal opportunity for one and all. This has resulted into creation of a body of rights for the labour force which includes right to work of one's choice, right against discrimination, prohibition of child labour, just and humane conditions of work, social security, protection of wages, redress of grievances, right to organize and form trade unions, collective bargaining and participation in management.

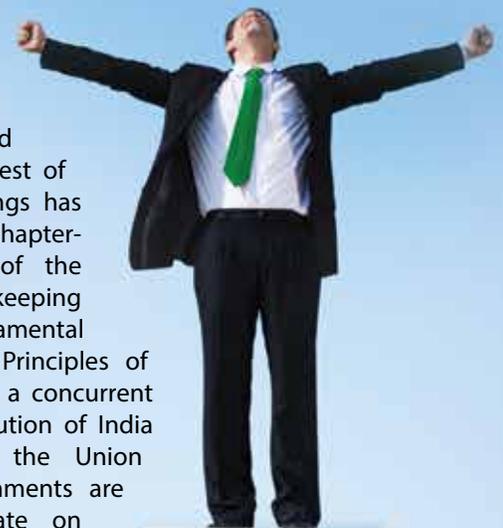
Some of the legislations which aim at providing suitable environment

and adequate opportunity to people for their personality development are discussed below:

CONSTITUTION OF INDIA

The Constitution of India aims to secure to all its citizens social and economic justice and - ensure equality of status and opportunity to promote the dignity of the individual in the united and integrated Bharat.

The relevance of the dignity of human labour and the need for protecting and safeguarding the interest of labour as human beings has been enshrined in Chapter-III and Chapter IV of the Constitution of India keeping in line with Fundamental Rights and Directive Principles of State Policy. Labour is a concurrent subject in the Constitution of India implying that both the Union and the state governments are competent to legislate on labour matters and administer the same. As a result, a large number of labour laws



have been enacted catering to different aspects of labour namely, occupational health, safety, employment, training of apprentices, fixation, review and revision of minimum wages, mode of payment of wages, payment of compensation to workmen who suffer injuries as a result of accidents or causing death or disablement, bonded labour, contract labour, women labour and child labour, resolution and adjudication of industrial disputes, provision of social security such as provident fund, employees' state insurance, gratuity, provision for payment of bonus, regulating the working conditions of certain specific categories of workmen such as plantation labour, beedi workers, etc.

THE EMPLOYMENT EXCHANGES (COMPULSORY NOTIFICATION OF VACANCIES) ACT, 1959

The main purpose of the Act is to provide for the compulsory notification of vacancies to employment exchanges. The employer is required on a compulsory basis, to notify to the Employment Exchanges all vacancies other than vacancies in unskilled categories, temporary vacancies and vacancies proposed to be filled through promotion and tender to the Employment Exchanges, return relating to the staff strengths at regular intervals.

THE SEXUAL HARASSMENT OF WOMEN AT WORKPLACE (PREVENTION, PROHIBITION AND OF SEXUAL HARASSMENT AT WORK PLACE REDRESSAL) ACT, 2013

This Act provides protection against sexual harassment of women at workplace and for the prevention and redressal of complaints of sexual harassment and other related issues. The Act aims to ensure that women are protected against sexual harassment at all the work places, be it in public or private. Effective implementation of the Act will contribute to realisation of their right to gender equality, life and liberty and equality in working conditions everywhere. The sense of security at the workplace will improve women's participation in work, resulting in their economic empowerment and inclusive growth.

Our Bank has framed a comprehensive policy on prevention of sexual harassment of women titled as "**UNION BANK OF INDIA POLICY ON PREVENTION, PROHIBITION AND REDRESSAL OF SEXUAL HARASSMENT OF WOMEN EMPLOYEES AT WORKPLACE AND REDRESSAL OF COMPLAINTS OF SEXUAL HARASSMENT**" to provide an effective system in place that provides speedy redressal of the complaints received from the victims of sexual harassment.

EMPLOYEE STATE INSURANCE ACT, 1948

This Act is a piece of social welfare legislation enacted primarily with the object of providing certain benefits to employees in case of sickness, maternity and employment injury and also to make provision for certain others matters incidental thereto. It tries to attain the goal of socio-economic justice enshrined in the Directive principles of state policy which enjoin the state to make effective provision for securing the right to work, to education and public assistance in cases of unemployment, old age, sickness and disablement.

THE EQUAL REMUNERATION ACT, 1976

This Act provides for payment of equal remuneration to men and women workers and for the prevention of discrimination on the ground of sex, against women in the matter of employments and matters connected to it. This Act seeks to attain the objective enshrined in Article 39 of the Constitution which states that the State shall direct its policy, among other things, towards securing that there is equal work for both men and women.

THE PAYMENT OF GRATUITY ACT, 1972

This Act was enacted to provide for a scheme for payment of gratuity for certain employees employed in industrial and commercial establishments, as a measure of social security. It is a welfare legislation intending to recognize and reward those employees who have rendered long and faithful service to the employer.

THE PERSONS WITH DISABILITIES (EQUAL OPPORTUNITIES, PROTECTION OF RIGHTS AND FULL PARTICIPATION) ACT, 1995

This Act puts the responsibility on society to provide equal opportunities to persons with disabilities for their full participation in everyday life. It prohibits discrimination on the ground of disability in every sphere of life and strives to create a society where persons with disability lead a life of equality and dignity.

The main objectives of the Persons with Disabilities Act are to ensure that the government takes responsibility for prevention of disabilities, protection of the rights of persons with disabilities, provision of medical care, education, training, employment and rehabilitation of persons with disabilities; to create a barrier-free environment for persons with disabilities; to remove any discrimination against persons with disabilities in; to protect persons with disabilities against abuses and exploitation; to lay down strategies that will ensure comprehensive programmes and services and equal opportunities for persons with disabilities; to make special provisions for including persons with disabilities in mainstream society; to establish Co-ordination Committees and Executive Committees at the Central and State levels in order to ensure the full implementation of the provisions under the Act.

The above are only a few legislations which aim to provide the employees an opportunity to grow and develop to the best of their abilities. Law, since time immemorial, has proved to be an effective tool for social regulation and control of human behavior. The above laws are laudatory but they can be effective only when every individual embraces the principles behind them and adheres to them. It is our bounden duty to help each other grow and develop to our full potential. Personality development, to this extent, is a common goal and can be attained only by combined effort of one and all.

Ayushi Agarwal
CRLD C.O., Mumbai





LEADERSHIP

is a way of Life,
it's like LOVE

Leading People is an art. Whether it is in the War, or whether it is in the Business, or whether it is in the Game, or whether it is in any established Private or Public sector Organization, and whether it is even in Politics – the success or failure depends on the Leader. If this much important is the role of a leader, then who is a Leader?

Any person can become a leader who decides to become a leader and focussing to acquire the skills necessary to draw out extraordinary performance from ordinary people. To me Leader is a person who has capability to Inspire, Motivate, Recognize and Reward People around, to make them believe in what he is saying and doing. In simple terms I can say, Leader is a person- "who knows the way, shows the way and goes the way".

In the War it is considered that a General is equal to 1000 soldiers. They design, direct, delegate and take decisions. This is the importance of the role of a LEADER. True leaders do not make people into followers but make Leaders. Their focus is to lead the people with clarity and conviction and outcomes are achievements.

What is the difference between Leader & Leadership?

When we talk about "Leader" – it means Leader is a person either he or she, whereas when we talk about the word "Leadership" – it means, the qualities of a Leader. So, Leader is a person and Leadership is the qualities of the Leader.

Leadership means "the ability of an individual to influence, motivate, facilitate, and enable others to contribute extraordinary performance for the success of the organization.

"Leadership is action, not a position" – Peter Drucker.

In the words of Sri Vineet Nayar, Former CEO HCL Technologies, " Leadership is about being passionate about an idea. It's a passion you would never give up. Leadership is a way of life. It's like love."

What is the difference between Leadership and Management?

Do you think that both Leadership and Management are synonymous and fail to see the difference between them. In

fact, Management and Leadership are completely divergent tasks and require different skills to perform. It has been observed that people use the term "Leadership" to refer to the people at the top of the hierarchy and the layers below them in an organization are called "Management". Management means "planning, organizing, directing, controlling and coordinating a group of people for the purpose of accomplishing the organizational goals"

Qualities of a Leader:

A great Visionary :

He is a great visionary and foreseeing the things that are going to happen. He who believes in - "Seeing the invisible is the Vision and doing the impossible is the Mission". Vision is the most important quality of a leader and who believes that the best way to predict future is to create it. Leader formulates clear vision of where they want to take their organization. "Leaders establish the vision for the future and set the strategy for getting there."

Courage :

The second quality of a leader is Courage. Development of courage in a leader is essential to realize his full potential. They have the courage even to accept the failure and maintain cool and calm at all times. Courage can be learned and developed over time.

Inspiring the People :

Leaders are the persons those who have the ability to inspire and motivate the people for the better performance of the organization by extracting additional capacities out of the average capacity. This ability of extracting more performance out of average capacity is possible by the specific quality of inspiring the people in and around. His role is to enthuse, enable and encourage.

POSITIVE ATTITUDE:

Leaders exhibit positive attitude. They are always optimistic. Even in difficult situations, what ever it may be, they behave normal. Because of this positive attitude Leaders have the



ability to see positive even in negatives. They even believe that the stones that come in their way are not stones but milestones – that is the level of their positive attitude. Because of this magnetic positive attitude they could make minus as plus.

Strategic thinking :

Thinking big is another important quality of the Leader. Strategic thinking means while taking decisions they have a long term view instead of short term. Strategic thinking involves the generation and application of unique business insights and opportunities intended to create competitive advantages. This quality of a Leader is regarded as a benefit in highly competitive and fast-changing business landscapes.

Leader has a Macro "I".

Leader never thinks small. He always thinks big because his family is so big, and leading different kinds of people for a noble common cause is his immediate task. It means Leadership focused on a macroscopic "I" rather microscopic "I".

Acknowledges the need of Change:

Despite of the fact that change is inevitable, unavoidable, unstoppable and mostly unpredictable – leader believes that survival goes to the one most adaptable to change and change never change its form.

Excellent Goal Setters :

Leaders are excellent goal setters. They know where they are, where they want to go. Hence they set goals, that to SMART goals and take the entire people around to achieve the goal.

Leading by Example :

Leaders are excellent Role Models. Walk the talk i.e. leading by example is an absolute requirement in Management and a prerequisite for leadership.

Integrity, Honesty and Credibility :

These are the foundations of leadership. Integrity, Honesty and credibility of the leaders are undisputable and humility is their ability while dealing with people in and around. Besides these qualities they also have the ability to delegate and courage to take risks.

Committed to 100% Success :

Leadership is committed to 100% success in field they are. They have a sense of deep rooted commitment to achieve the vision. Commitment and Conviction to success and striving hard to achieve the same is the beauty of the Leadership.

TEAM Building:

Leader has the ability to turn any team at his disposal into a winning team. Leadership skill is fostered in each member of the team by acknowledging, accepting, and respecting individual differences. Leaders concentrate on the strengths

and development areas but not on their weaknesses.

Leaders are learners:

Leaders are very much hungry for information in the field they engage. They never stop learning. They continuously want to grow in the field they engage. They believe that continuous learning is the foundation of competence both as a person and a leader. They spend certain time daily for learning the new things. Their burning desire of learning is one of the good qualities to stay on the top of the affairs, and skill of learning new skills is the actual skill of leaders.

Solution Centric :

Leaders are solution centric. They never see problem as a problem instead think of it as a challenge or an opportunity. Leaders believe that every problem has a solution and problem never exists without a solution. They have the ability to deal with difficulties and solve problems.

Leadership is a lifelong journey and it is not a Nine-to-Five affair. It is a 24 x 7 x 365 work of a life time with a magnetic power. Keeping in view of the qualities of a Leader, I can conclude that "Leadership is a way of life, and it's like Love" ever exists.



B. S. Narayanmurty
Staff College, Bengaluru

सोच

हर कोशिश करने वाला, कामयाब होता है;
हर आलस में जीने वाला, नाकाम होता है.
हवा के झोंकों में भी जो चिराग जला सके;
वही व्यक्ति शहंशाह होता है.
चिराग दूसरों के जो बुझाता; वह व्यक्ति शैतान होता है.
दूसरों के हित की जो सोचे; वह व्यक्ति इंसान होता है.
दूसरों को जो दर्द देता; वह हैवान होता है.
हाथ में हाथ मिलाकर चले, वही सफल कप्तान होता है.
जो अकेला ही चलना जाने; वह अपना सम्मान खोता है.
विकास सबका हो जिसमें; वह सुशासन होता है.
जो केवल अपनी ही सोचे, वह कुशासन होता है

अरुण कुमार दत्ता
वर्धमान(मुख्य शाखा)



Our Bank has won Three Banking Technology Awards from IBA (Indian Banks' Association). Shri Arun Tiwari, CMD along with Shri K. Subrahmanyam & Shri Rakesh Sethi (both ED), ; Shri Debajyoti Gupta, GM (PBOD & ACNID) and Shri Ajit Kumar Rath, GM (IT) received these awards from Padma Vibhushan Dr. Raghunath Mashelkar and Padma Vibhushan Shri Anil Kakodkar at the award function organized by IBA on 11.02.2015 at Mumbai.

Winner – Best Payment Initiatives : For its comprehensive payment strategy focussed on building significant value added features through internet banking mobile banking for small value remittances and strong growth in value of electronic transfers

Joint Winner – Best Initiative to Enhance Customer Experience : For detailed customer segmentation and differentiated service strategy for each customer segment. Integrated complaint management system and centralised customer management system and customer 360° view

1st Runner Up – Technology Bank of The Year : IT strategy plan incorporates long term and short term business objectives, expansion plans, factors such as product development, organizational model and changes to it, technological evolution, business process re-engineering, process improvement, staffing, in-sourcing or outsourcing, strong policies and practices, workflow based system to improve performance.

फिर जीत गए.. हम..

“यूनियन धारा” को लगातार 28वें वर्ष भी एसोसिएशन ऑफ बिजनेस कम्यूनिकेटर्स ऑफ इंडिया (ए.बी.सी.आई.) पुरस्कार प्राप्त हुए हैं . यूनियन बैंक के इतिहास में लगातार पाँचवीं बार बैंक की गृहपत्रिका ‘यूनियन धारा’ को सर्वश्रेष्ठ पत्रिका पुरस्कार प्राप्त हुआ. ए बी सी आई का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह मुंबई के ताज प्रेसिडेंट होटल में दिनांक 27 फरवरी, 2015 को संपन्न हुआ. अन्य प्रतिभागियों के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा करते हुए ‘यूनियन धारा’ ने सर्वोच्च पुरस्कार ‘Champion of the Champions’ अन्य छह पुरस्कारों के साथ प्राप्त किया. वर्ष 2013-14 में “यूनियन धारा” को निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं :

'Champion of the Champions' पुरस्कार		
श्रेणी	नाम	पुरस्कार
फीचर्स (अंग्रेजी)	श्री अनुराग सरोलिया	स्वर्ण
स्पेशल कॉलम (लैंग्वेज)	डॉ. नीरा प्रसाद	रजत
स्पेशल कॉलम (अंग्रेजी)	श्रीमती सुप्रिया नाडकर्णी	रजत
बायलिंग्वल पब्लिकेशन्स	डॉ. नीरा प्रसाद	कांस्य
मैगजीन डिजाइन	श्रीमती सविता शर्मा	कांस्य
फोटो फीचर	श्री राजेन्द्र प्रसाद	कांस्य



व्यावसायिक संप्रेषण में श्रेष्ठता संवर्धन हेतु घोषित ए.बी.सी.आई. वार्षिक पुरस्कार कार्पोरेट संप्रेषण में सर्वोत्तम को मान्यता प्रदान करते हैं. देशभर की निजी, सरकारी संस्थाओं से प्रतिस्पर्धा करते हुए ‘यूनियन धारा’ पत्रिका सबसे अग्रणी रही. पुरस्कार वितरण समारोह में (बायें से) श्री अरुण श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा); श्रीमती सविता शर्मा, संपादक, यूनियन धारा; श्री योगेश जोशी, प्रेसिडेंट – एबीसीआई; श्री बी.पी. डिमरी, महाप्रबंधक श्री एच. नेरुरकर, चेयरमन – टीआरएल क्रोसाकी से ‘Champion of the Champions’ पुरस्कार शील्ड प्राप्त करते हुए; श्री एम.आर. चांदुरकर, संस्थापक, इप्का लॉब; डॉ. नीरा प्रसाद, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री अनुराग सरोलिया, प्रबंधक, डीआईटी, मुंबई.



Indian Micro Small & Medium Enterprises (CIMSME) was organized its second annual flagship event “MSME Banking Excellence Awards-2014” on 10th January 2015 wherein our Bank has received award in following two categories: ‘Best MSME Bank Award for Large Banks’ – Winner & ‘Best Bank Award for Tech Savvy’ – Runner Up. The Bank Executives are receiving these awards from Shri Kalraj Mishra, Hon’ble Union Minister for MSME.

पुरस्कार और सम्मान/ Awards & Accolades



Our Bank has been awarded Best Bank under "Best Education Loan Provider" category at the recently concluded Outlook Money Awards 2014 held on 25-03-2015 in Mumbai. Shri. S. K. Singh, General Manager, Retail Banking Department receiving the award from Shri. Yashwant Sinha, Ex-Finance Minister.



दिनांक 07-02-2015 नेल्लूर शहर के कस्तूरबा कला केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में श्री वेंकैया नायडू, माननीय केंद्रीय शहरी विकास मंत्री महोदय द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नेल्लूर को नेल्लूर क्षेत्र में 'जन-धन योजना' के प्रभावी कार्यान्वयन की सराहना करते हुए लक्ष्य से अधिक खाते खोलने हेतु शील्ड तथा 'यूनियन रुपे' प्रदान किया गया. क्षेत्र प्रमुख, नेल्लूर एवं उप महा प्रबन्धक श्री आई. विश्वनाथन ने उक्त कार्यक्रम में श्री वेंकैया नायडू, माननीय केंद्रीय शहरी विकास मंत्री से प्रशस्ति पत्र तथा ट्रॉफी ग्रहण की. कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश के शहरी विकास मंत्री भी उपस्थित थे.



दिनांक 30 जनवरी, 2015 को बीएचईएल सांस्कृतिक भवन, भोपाल में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र के राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में वर्ष 2013-14 के दौरान उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए 'क' क्षेत्र के बैंकों में क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर को 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया. भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, सचिव श्रीमती स्नेहलता कुमार से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री एच. सी. मित्तल, क्षेत्र प्रमुख, जबलपुर; साथ हैं (बाएं से दाएं) डॉ गिरीश्वर मिश्रा, कुलपति, हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रो. डॉ. पी. जे. सुधाकर, निदेशक, प्रैस ब्यूरो ऑफ इंडिया; श्रीमती पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव, भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग एवं डॉ अप्पुकुट्टम के. के., निदेशक, एमएनएनआईटी, भोपाल.



भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 27.03.2015 को मेंगलूर में आयोजित "राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह (दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र)" के अवसर पर वर्ष 2013-14 के दौरान दक्षिणी क्षेत्र के बैंकों में सर्वोत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूर को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उल्लेखनीय है कि महामहिम राज्यपाल, कर्नाटक श्री वजुभाई रुदाभाई वाला के कर-कमलों से यह पुरस्कार श्री ए. वी. रमणा, क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूर और डॉ नीरा प्रसाद, मुख्य प्रबन्धक (राभा) ने, सुश्री स्नेहलता कुमार, सचिव - राजभाषा विभाग, आईएएस; सुश्री पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव-राजभाषा विभाग एवं अन्य गणमान्यजन की गरिमामयी उपस्थिति में ग्रहण किया.

चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित एक समारोह के दौरान वर्ष 2013-14 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को इंडियन बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री महेश कुमार जैन तथा श्रीमती सुनीता देवी यादव, उप निदेशक (का) से प्रथम पुरस्कार स्वरूप अन्तर बैंक वार्षिक शील्ड पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री टी.सी. जॉन, उप महाप्रबंधक, म.प्र.का., चेन्नै और डॉ. आर.के. जैन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा),



पुरस्कार और सम्मान/ Awards & Accolades



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर द्वारा दिनांक 20.03.2015 को आयोजित "वार्षिक राजभाषा एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर वर्ष 2014 के दौरान बैंकों में सर्वोत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. यह पुरस्कार श्री एस.एस. चंद्रशेखर, क्षेत्र प्रमुख, जयपुर द्वारा ग्रहण किया गया.



क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर को वर्ष 2014 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के अवसर पर दिनांक 16.03.2015 को श्री निर्मल कुमार दूबे, अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन) एवं कार्यालय अध्यक्ष, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) एवं श्री कृष्ण मोहन त्रिवेदी, अध्यक्ष नराकास (बैंक) के करकमलों से पुरस्कार शील्ड तथा प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री विजय कुमार श्रीवास्तव, उप महा प्रबंधक, एवं श्री प्राणेश वर्मा, राजभाषा प्रभारी क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर



बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे की 49वीं बैठक में श्री विलास रवन्दे, अंचल प्रबंधक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र व अध्यक्ष, बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे से वर्ष 2013-14 के लिए राजभाषा शील्ड एवं प्रमाणपत्र स्वीकारते हुए श्रीमती पद्मा नीलकंठन, सहायक महाप्रबंधक, शे.का., पुणे और श्री सतीश खर्डेकर, मुख्य प्रबंधक (राभा), शे.का., पुणे



वर्ष 2013-14 के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा को बैंक नगर राजभाषा समिति बड़ौदा द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 21.04.2015 को नराकास, बड़ौदा द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में उक्त पुरस्कार श्री निशीष मोबार, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा; श्री जी.जी. गुप्ता, सहायक महाप्रबंधक तथा श्रीमती लावण्या प्रमाणिक, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा), शे.का., बड़ौदा ने श्री वी.के. धवन, अध्यक्ष, बैंक नराकास बड़ौदा एवं महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा से प्राप्त किया.



दिनांक 09.01.2015 को संपन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर की 6वीं बैठक, जिसकी अध्यक्षता बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा आयोजित की गई. इस बैठक के दौरान नराकास द्वारा राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर को द्वितीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया, जिसे प्राप्त करने के लिए राजभाषा अधिकारी के साथ क्षेत्र प्रमुख श्री एच. पी. एस. गुगलानी भी उपस्थित थे.



शिखर की ओर

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री सतीश कुमार जैन
महाप्रबंधक



श्री जी.एस. रावत
महाप्रबंधक



श्री पी.सी. पाणिग्रही
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री भोला प्रसाद
उप महाप्रबंधक



श्री आर. सेंथिल
उप महाप्रबंधक



श्री योगेन्द्र सिंह
उप महाप्रबंधक



श्री आर. के. जागलान
उप महाप्रबंधक



श्री प्रवीण शर्मा
उप महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान V में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री ए. पी. कृष्णन
सहायक महाप्रबंधक



श्री आर. पी. मिश्रा
सहायक महाप्रबंधक



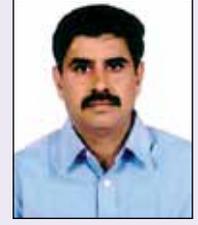
श्री एस. के. सिंह
सहायक महाप्रबंधक



श्री एस. एस. यादव
सहायक महाप्रबंधक



श्री एम.जी. सिंघल
सहायक महाप्रबंधक



श्री एस. शंकर
सहायक महाप्रबंधक



श्री एस.सी. गुरुमैता
सहायक महाप्रबंधक



श्री के. वी. अवधानी
सहायक महाप्रबंधक



श्री के. सी. सेठमाझी
सहायक महाप्रबंधक



श्री आर. जी. मिश्रा
सहायक महाप्रबंधक



सुश्री जस्मिन ए.एस. रानी
सहायक महाप्रबंधक



श्री के. शिवशंकर राव
सहायक महाप्रबंधक



श्री सुनीत कुमार रस्तोगी
सहायक महाप्रबंधक



श्री वी. एम. सुंदरराजन
सहायक महाप्रबंधक



श्री जितेन्द्र कुमार मिश्रा
सहायक महाप्रबंधक



श्री डी. वी. सिंह
सहायक महाप्रबंधक



श्री राम गोपाल सागर
सहायक महाप्रबंधक



सुश्री तेजविंदर कौर
सहायक महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।



Bal Pratibha

SKIPPING THE ROPE SKILLFULLY!

Master **ANADI**, the national rope skipper, son of Shri Shailendra Kashiv, SWO-A, R.O., Bhopal, is a Class X (CBSE) student.

He is also the 'School Sports Committee Member' & 'Vice Sports Captain' of his school.

This football fanatic & ardent lover of cinematic dances, has carved a niche in rope skipping. In January 2013, he won 2 Gold medals at the CBSE National Rope Skipping Championship in Meerut, U.P., followed by 3 Gold medals at the School Games Federation of India (SGFI) in Dewas, M.P. in September 2013. In January 2014, he bagged 1 Gold & 2 Bronze medals at SGFI National Level Championship in Delhi, followed by 3 Gold medals at SGFI State level Championship in Vidisha, M.P.

His passion and hard work for the sport paid off when he represented India in the World Rope Skipping Championship 2014 at Hong Kong, China, wherein contestants from 20 countries all over the world had participated. He was one among the 8 selected in the Indian team.

His thirst for medals continued to aggravate. He bagged 2 silver medals at the CBSE National Championship in Amritsar, Punjab, in November 2014, followed by 2 silver & a bronze at CBSE National level championship in Indore, M.P. in December 2014.

Besides rope skipping, he has also represented his school in football and won many inter-school matches and a trophy in 'Karmshri Tournament'.

Always inspired by the Great Indian Cricketer, master-blaster Sachin Tendulkar, and supported by his parents, he aspires to be in the Indian Rope Skipping Team, representing at the international level tournaments organized by the International Rope Skipping Federation (IRSF) to break the international record.

Union Dhara wishes him every success in his future 'Speedy Skipping'! More power to his rope!!



BASKETING THE BALL HER WAY!!



Miss **MEGHANA**, the basketball enthusiast daughter of Mr. Mylar Muddanna Mallayya of our R.O., Belgaum, is different from the clan in that she sets her goals above par and tries very hard to reach them.



This third year B.E. student has played national level basketball as well as net ball tournaments held at Goa, Chennai & Chhattisgarh. This apart, she also equally likes singing, rangoli and carrom.

Though she wishes to continue playing at the national level, her final destination is to appear for IAS/IPS exam, clear them with a good score and then serve the nation impartially.

Union Dhara wishes this future Admin Officer all the best in her career!!

COURAGE NEEDS NO CRUTCHES!!

Mr. **PARTH**, son of Mrs. Mrunal Kishore Hendre, SWO-B, CBO, Darukhana, Mumbai, is physically challenged since birth and has courageously faced 8 surgeries for different reasons. This courage reaches its optimum when he accepts the 'water challenge'.

This Second Year B.A. student is the State and National level Champ in Paralympics Swimming Competitions since 2004. His gutsy nature compelled the authorities to record his name in the 'Limca

Book of Records' for individual events of sea swimming when he successfully completed 5 kms from the Sunk Rock to Gateway of India and also 14 kms from Elephanta to Gateway of India, taming the roaring open sea waves.

Besides swimming, he is interested in music (guitar), reading & watching scientific programs.

His role model is 'Michael Phelps'. Taking inspiration from him and ably supported by his parents, Parth aspires to participate in the International Competitions in near future.

Union Dhara salutes this sea soldier and wishes him all the best in his future swimming endeavors!!



यूनियन धारा संवाददाता सम्मेलन

बुद्धिजीवियों का मिलन,
विचारों का संगम,
संवादों का मिश्रण,
सार्थक एवं अनुपम,
होता है, यह सम्मेलन।

गृह पत्रिका की चर्चा,
निकलता साल भर का पर्चा,
कमियों पर चिंतन,
नए आयामों पर मंथन,
उपलब्धियों का आकलन
होता है, यह सम्मेलन।



अपने क्षेत्रों से चयनित होकर,
खुले परिवेश में बातें कर,
समृद्धता को एकत्रित कर,
यूनियन धारा को बनाए बेहतर,
बौद्धिकता एवं लगन,
होता है, यह सम्मेलन।

शब्दों की गहराई से,
विचारों की अंगड़ाई से,
ले जाना है, सोपान पर,
हिमालय के उठान पर,
ज्ञानवर्धक रचनाओं का संकलन,
होता है, यह सम्मेलन।

बैंक का यह दर्पण है,
सृजनात्मकता का कण-कण है,
लेखन की निर्भिकता है,
संपादन की मार्मिकता है,
मन एवं विचारों का सम्मिलन,
होता है, यह सम्मेलन।

विषय ऐसा तार्किक हो,
रोचक एवं सामयिक हो,
स्वच्छंदता का प्रवाह हो,
ऐतिहासिकता का गवाह है,
नए भविष्य का आकलन,
होता है, यह सम्मेलन।

वी.के. पाण्डेय
क्षे.का.पटना



तिमाही के दौरान जारी कुछ महत्वपूर्ण निर्देश

S. no.	Circular No.	Circular Type	Publish Date	Dept. Name	Subject
1	00031	Instruction	30.03.2015	AC&NI	शाखाओं पर नोट ग्राही मशीनें लगाना
2	00029	Instruction	30.03.2015	AC&NI	आईआरसीटीसी यूनियन बैंक रुपये प्रीपेड कार्ड की शुरुआत
3	00024	Instruction	23.03.2015	CPMSME	ऋण संविभाग का प्रबंधन - असहयोगी ऋणियों के वर्गीकरण/विवर्गीकरण की प्रक्रिया
4	01678	DIT Letters	21.02.2015	DIT	लैस में अतिरिक्त सुविधाओं को जोड़ना
5	01744	Circular Letter	13.03.2015	DIT	15 जी/15 एच का जनरेशन एवं डेबिट कार्ड की समाप्ति पर कार्ड धारकों को एसएमएस अलर्ट
6	00008	Instruction	10.03.2015	FI	प्रधानमंत्री जन-धन योजना:पीएमजेडीवाई खातों में रु. 5000 तक का ओवरड्राफ्ट
7	10158	Instruction	24.01.2015	FI	प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अन्तर्गत खोले गये खातों में आधार संख्या अंकित करना
8	00004	Instruction	03.03.2015	IBD	फोरेक्स सेवा प्रभागों में छूट के लिए विविध अनुरोध प्रस्तावों की प्रस्तुति
9	00025	Instruction	23.03.2015	MDO	संबन्धित पक्ष व्यवहार नीति
10	00030	Instruction	30.03.2015	PBOD	कर कटौती में छूट पर रिपोर्ट
11	00028	Instruction	27.03.2015	PBOD	हमारी शाखाओं के माध्यम से हज -2015 के तीर्थयात्रियों से शुल्क का संग्रहण 30.03.2015 से द्वितीय चरण की शुरुआत
12	00014	Instruction	18.03.2015	PBOD	शाखा कारोबार का समय
13	00013	Instruction	18.03.2015	PBOD	सरल टीडीएस - स्टाफ टीडीएस -24Q के लिए रिटर्न दाखिल करना -तिमाही 4
14	00011	Instruction	14.03.2015	PBOD	सरल टीडीएस -आयकर विभाग से डिमांड नोटिस तथा संशोधन विवरण
15	00001	Instruction	24.02.2015	PBOD	शाखाओं/क्षेका/क्षेमप्रका में तथा भारिबैं/वित्त मंत्रालय एवं अन्य माध्यमों से प्राप्त शिकायतों का आईसीएमटी (ICMT) के माध्यम से निस्तारण करना
16	10169	Instruction	18.02.2015	PBOD	नगदी के सापेक्ष डिमांड ड्राफ्ट जारी करना
17	10162	Instruction	03.02.2015	PBOD	टीडीएस कटौती एवं सरकार को विप्रेषण
18	10157	Instruction	24.01.2015	PBOD	केन्द्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) के लिए यूनियन फ्लेक्सी जमा योजना
19	00017	Instruction	19.03.2015	RBD	सीएसआईएस स्कीम के लिए शिक्षा ऋण अजा / अजजा के संवर्ग के छात्रों के लिए अनुपूरक दावे

अलका रानी
पीबीओडी, कें.का.





वसंत

वसंत आया, सौ
 बिखरे इंद्रधनु
 आई खुशबू क
 भँवरे गुनगुना
 हरे तरफ घुलने
 पंखुड़ियों प
 चूम लिय
 वसंती पवन
 रोक लिय
 वसंत आया, म
 वसंत आया, क



श्यामा...

दृश्य को साथ लाया.
ची रंग फिजाओं में
नी तरंग हवाओं में.
उठे प्यार की गुंजार
लगा प्यार ही प्यार.
र टिकी ओस को
रा दिवाकर ने
र हुई पागल उसने
र रत्नाकर ने.
मथ को साथ लाया.
वेन का सार लाया.



गौरव तिवारी
क्षे.का.लखनऊ

SAYONARA

Union Dhara wishes all of them 'All The Best' in their new assignments!!!



Shri R.C. LODHA
General Manager
was elevated as
Executive Director
of Central Bank of India
w.e.f. 10.03.2015



Shri Ajit Kumar Rath
General Manager
was elevated as
Executive Director
of Andhra Bank
w.e.f. 10.03.2015



Shri R.S. Pandey
General Manager
was elevated as
Executive Director
of Syndicate Bank
w.e.f. 11.03.2015

शुभमस्तु



श्री डी.वी. गुसा
महाप्रबंधक



श्री वी.जे. म्हात्रे
महाप्रबंधक



श्री आर.पी. मिश्रा
महाप्रबंधक



श्रीमती आभा आनंद
महाप्रबंधक



श्री एस.एस. बिम्म
उप महाप्रबंधक



श्री आर.एन. अमलानी
सहायक महाप्रबंधक



श्री सुनील धवन
सहायक महाप्रबंधक



श्री के. नरसिम्हन
सहायक महाप्रबंधक



श्री ए.के. दास
सहायक महाप्रबंधक



श्री एम.पी. खुराना
सहायक महाप्रबंधक



श्री पी.के. त्रिपाठी
सहायक महाप्रबंधक



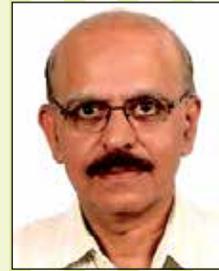
श्री पी.के. बेलखेडकर
सहायक महाप्रबंधक



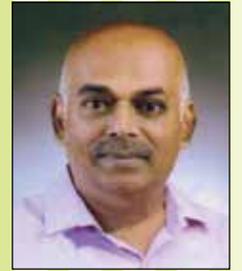
श्रीमती वी.एल. कुमारी
सहायक महाप्रबंधक



श्री भगवान स्वरूप
सहायक महाप्रबंधक



श्री एस.एस. अरोरा
सहायक महाप्रबंधक



श्री ए.एल. रामास्वामी
सहायक महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

विश्व हिन्दी दिवस - 2015 के अवसर पर बैंक द्वारा आयोजन

दिनांक 10.1.2015 को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर हमारे बैंक द्वारा मुंबई में पदस्थ वेतनमान - V व उससे अधिक के कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा कार्यपालक निदेशक के साथ ही मुंबई में तैनात 11 महाप्रबंधक, 28 उप महाप्रबंधक व 66 सहायक महाप्रबंधक सहित कुल 117 प्रतिभागी उपस्थित थे.

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा श्री राकेश सेठी, कार्यपालक निदेशक द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया. श्री अरुण श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया और विश्व हिन्दी दिवस के आयोजन तथा इस संगोष्ठी की आवश्यकता पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की. इस बात पर जोर दिया गया कि बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की गुणवत्ता और विविधता पर अधिक ध्यान दिया गया है. इस अवसर पर बैंक द्वारा विशेष रूप से तैयार किए गए पावर पाइंट की प्रस्तुति की गई. इसके माध्यम से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पिछले वर्षों के दौरान किए गए कार्यों का उल्लेख किया गया. साथ ही बैंक की उपलब्धियों को भी प्रस्तुत किया गया.

यह उल्लेखनीय है कि बैंक ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान पत्राचार व आंतरिक कामकाज में हिन्दी के प्रयोग के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में कुछ नई परम्पराओं को प्रारम्भ किया है जैसे: प्रत्येक वर्ष बैंकिंग विषयों एक हिन्दी पुस्तक का प्रकाशन, कार्टून पुस्तिका का प्रकाशन, कार्टून फिल्म का निर्माण, मौलिक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत पुस्तकों का प्रकाशन, बैंकिंग विषयों पर संदर्भ साहित्य का हिन्दी में प्रकाशन, प्रत्येक कार्यालय द्वारा हिन्दी गृह पत्रिका का तिमाही प्रकाशन, बैंकिंग विषयों पर हिन्दी में पावर पाइंट तैयार करना, एटीएम से हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं में लेनदेन पर्ची प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करना, ग्राहक सेवा पर हिन्दी - अंग्रेजी के साथ ही अन्य 09 क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तकों के नमूने, अहिंदी भाषी क्षेत्रों में ग्राहकों के साथ बातचीत करने व उनकी बातों को समझने हेतु स्टाफ सदस्यों हेतु क्षेत्रीय भाषाओं में 06 व्यावहारिक ज्ञान पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया गया है.

इसके साथ ही प्रतिभागियों को बैंक द्वारा इन - हाउस तैयार किए गए कोर राजभाषा सोल्यूशंस की जानकारी भी प्रदान की गई. इस प्रोग्राम के अंतर्गत उपलब्ध सुविधाओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया. यह उल्लेख किया गया कि इस प्रोग्राम पर कई उपयोगी और महत्वपूर्ण लिंक्स उपलब्ध हैं. कुछ उपयोगी सॉफ्टवेयर भी यहां से डाउन लोड किए जा सकते हैं. भारतीय रिजर्व बैंक शब्दावली, तकनीकी शब्दावली और सामान्य शब्दों की शब्दावली इस प्रोग्राम पर उपलब्ध है. हिन्दी में टाइप कैसे करें - यह जानकारी प्रतिभागियों को प्रोजेक्टर पर दिखाई गई. बैंकिंग विषयों पर हिन्दी पुस्तकों के नमूने, कार्टून पुस्तकें, गृह पत्रिकाएं, पावर पाइंट, यूनियन धारा, केंद्रीय कार्यालय के कार्यवृत्त आदि से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया. इसी प्रकार प्रत्येक शाखा द्वारा ऑन लाइन रिपोर्ट प्रस्तुत करना, रोस्टर, कार्यशाला व शाखा निरीक्षण की जानकारी प्रस्तुत करना व इस कार्यक्रम में अन्य उपलब्ध जानकारी से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया गया.

उक्त कार्यक्रम के अवलोकन के पश्चात माननीय श्री राकेश सेठी, कार्यपालक निदेशक ने प्रस्तुत जानकारी को अत्यंत उपयोगी बताते हुए आगे भी इसी प्रकार के कार्यक्रम तैयार करने का सुझाव दिया. प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए माननीय श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने इतने अच्छे कार्यक्रम के लिए डीआईटी व राजभाषा टीम को बधाई व शुभकामनाएं दीं. उनके द्वारा सुझाव दिया गया कि बैंक को भविष्य में भी प्रथम स्थान पर बने रहने के लिए इसी प्रकार के नवोन्मेषी प्रयास जारी रखने की आवश्यकता है और मात्रात्मक सुधार के साथ ही गुणात्मक सुधार हेतु हर स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिए. श्रीमती हेमलता राजन, प्रभारी महाप्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि अब तो भारत सरकार के शीर्ष नेतृत्व द्वारा देश- विदेश में हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है और इसे देश के आम व्यक्तियों द्वारा सहर्ष स्वीकार किया जा रहा है और बैंकिंग उद्योग में इतनी अधिक संख्या में वरिष्ठतम कार्यपालकों हेतु एक साथ राजभाषा संगोष्ठी के आयोजन का संभवतः यह प्रथम अवसर है, जो हमारे बैंक के नवोन्मेषी प्रयासों में एक और कड़ी है.



आर.एस. गुप्ता
रा.भा.वि. कें.का., मुंबई



अखिल भारतीय यूनियन धारा संवाददाता सम्मेलन All India Union Dhara Correspondents Meet स्थान / Venue- लखनऊ Lucknow



मंचासीन अतिथि गण



महा प्रबंधक का संबोधन

दिनांक 02 एवं 03 मार्च 2015 को स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, लखनऊ में 'यूनियन धारा' के संवाददाताओं का अखिल भारतीय वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया. इस सम्मेलन में महाप्रबंधक, लखनऊ श्री एल डी रेवतकर, उप महाप्रबंधक(राजभाषा) श्री अरुण श्रीवास्तव तथा संपादक श्रीमती सविता शर्मा के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों/कार्यालयों के कुल 28 चुनिंदा संवाददाताओं ने भाग लिया. कार्यक्रम का शुभारंभ उप महाप्रबंधक क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ श्री ए के सिंह के स्वागत संबोधन से हुआ. इसके उपरांत उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री अरुण श्रीवास्तव द्वारा सम्मेलन तथा गृह-पत्रिका की भूमिका पर विस्तार से बताया गया. तदुपरांत महाप्रबंधक, लखनऊ अंचल श्री एल डी रेवतकर ने कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की तथा संवाददाताओं को संबोधित किया. अध्यक्षीय संबोधन में श्री रेवतकर ने सभी संवाददाताओं को उच्च प्रबंधन की अपेक्षाओं से अवगत कराया तथा आगामी अंकों के प्रकाशन के लिये दिशानिर्देश भी दिये. इसके उपरांत सभी संवाददाताओं से पिछले सम्मेलन में प्राप्त सुझावों पर कृत कार्रवाई से सदन को अवगत कराया गया. स्टार संवाददाता श्री के. के. यादव को पुरस्कार, प्रमाणपत्र तथा सभी संवाददाताओं को सम्मान के रूप में मोमेंटो दिये गये. संवाददाताओं को सजीव एवं सटीक रिपोर्टिंग के व्यावहारिक प्रशिक्षण के रूप में स्थानीय दर्शनीय स्थलों पर ले जाया गया तथा रिपोर्टिंग के बारे में चर्चा की गयी.



दीप प्रज्वलन



स्टार संवाददाता को पुरस्कार



कर्मण्येवाधिकारस्ते...

मा फलेषु कदाचन .

मा कर्म फल हेतुर्भूमा ते संगोऽस्त्वकर्मणि (श्रीमद्भगवद्गीता)

भगवद्गीता के इस श्लोक ने आज तक न जाने कितनों को सफलता के शिखर तक पहुंचाया होगा. संसार के अनेक विख्यात व्यक्तियों का यह मत है कि उन्होंने कर्मण्येवाधिकारस्ते के सिद्धान्त पर चलकर सफलता के शिखर को छुआ है.

वस्तुतः यह वाक्यांश हमें कर्म करने की ऐसी प्रेरणा देता है कि हम कर्म करें लेकिन फल की इच्छा न करें. यह एक दिलचस्प प्रश्न है कि जब हमें कुछ पाने की इच्छा होती है तभी हम कर्म करते हैं, यहाँ कहा जा रहा है यानी भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तू सिर्फ कर्म कर. उसके फल की इच्छा न कर. सच्चाई यह है कि समस्त प्राणी फल पर ही ध्यान केन्द्रित करते हैं. यहाँ भगवान श्रीकृष्ण जैसे दार्शनिक के द्वारा, वह भी युद्ध के मैदान में, इस तरह का उपदेश दिया जाना उतना ही प्रासंगिक था जितना आज यह जनमानस के लिए उपयोगी है. यहाँ कर्म करते रहने के लिए कहा गया है, फल की इच्छा नहीं रखते हुए. मनुष्य तो पहले फल की इच्छा करता है, फल का बीज उसके अंदर पहले आता है फिर कर्म की ओर वह प्रेरित होता है. मनुष्य जिस वस्तु की आकांक्षा लेकर कर्म करना शुरू करता है वह वास्तव में उसका लक्ष्य होता है, न कि फल.

वस्तुतः सामान्य मनुष्य फल पर ध्यान केन्द्रित कर देता है, लक्ष्य पर नहीं, इसी में सामान्य और विशिष्ट के बीच अंतर उत्पन्न होता है.

कर्म पर ध्यान केन्द्रित न कर फल पर ध्यान केन्द्रित करने से हमारी शक्ति का व्यर्थ में अपव्यय होता है. यहाँ लक्ष्य और फल में अंतर समझना बहुत जरूरी हो जाता है. अधिकांश मामलों में व्यक्ति लक्ष्य को फल या फल को ही लक्ष्य समझने की भूल कर बैठता है.

इसे एक उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है. एक व्यक्ति आम के वृक्ष पर देखता है कि आम है. उसके बाद वह कल्पना करता है कि मुझे वह चाहिए. उसके मन में इच्छा जागृत हुई, यहाँ उस वृक्ष से आम

पाना फल की प्राप्ति है. लेकिन उसकी प्राप्ति में हेतुरुप साधन है, उसका कर्म, कर्म करने की कुशलता में उसके लक्ष्य को हासिल कर फल पाना स्वतः समाहित है. परंतु अगर वह फल की इच्छा करते हुए कार्य करना शुरू करता है तो उसके मन में विक्षेप पैदा होने जैसी स्थिति हो जाती है. लेकिन अगर वह सिर्फ लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करता है जो कि उसके वश में है, तो वह निश्चित रूप से सफल होता है. यहाँ उस आम को पाना उसके वश में नहीं है; उसके वश में है सिर्फ उसका साधन रूप प्रयास यानी कर्म.

विशिष्ट व्यक्ति फल पर केन्द्रित न होकर कर्म के अपने लक्ष्य पर केन्द्रित हो जाते हैं. चाहे कोई सरकारी तंत्र हो, बैंक हो, सबमें कुछ-न-कुछ लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं. हानि-लाभ, जय-पराजय की परवाह किए विशिष्ट व्यक्ति सिर्फ अपना कर्म भलीभाँति करता जाता है और सफलता को प्राप्त करता है. तो यहाँ पर फल की इच्छा रहित होकर कर्म करने की बात आती है, यानी कि हम उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए पूरे

मनोयोग से कार्यरत रहें लेकिन फल की इच्छा न करें. अगर बीज अच्छा है तो फल निश्चित रूप से अच्छा ही होगा. कर्म करने में ही हमारा अधिकार है; उसके परिणाम पर हमारा अधिकार नहीं है. यह हमारे अधिकार के बाहर है कि हम किसी कर्म का फल प्राप्त कर सकें. इसी तरह अगर हमारा कर्म रूपी बीज अच्छा होगा तो फल निश्चित रूप से अच्छा ही होगा और हम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाएंगे. सभी विचारक, चिंतक एक सुर में इसी बात को कहते हैं कि हम कर्म करें और करते रहें.

आज के परिप्रेक्ष्य में यह सिद्धान्त बहुत ही हितकारी है—एकदम टॉनिक की तरह. आज इस संसार में इतनी लूट-पाट, घृणित कर्म, हत्याएँ इत्यादि जो देखने में आ रही हैं, इनका कारण कहीं-न-कहीं फल को जल्दी से या शॉर्ट-कट तरीकों से पा लेने की इच्छाएँ हैं. उसके लिए निमित्त साधन कर्म न कर, व्यक्ति उन सुखों को प्राप्त करने के लिए सिर्फ उस फल को, उसके बाहरी आवरण को देखते हुए गलत कर्म कर बैठता है. अगर यह बात सबको पता हो कि हमें कर्म कैसे करने हैं और कौन से कर्म करणीय और प्रशंसनीय हैं, तो यह दुनियाँ बहुत सुखमय बन सकती है. आज इस श्लोक पर चलने की बहुत आवश्यकता है, ताकि हम एक अच्छे व्यक्तित्व के स्वामी बन सकें एवं सुंदर समाज का निर्माण कर सकें. कर्म करते

रहने की प्रेरणा से हमारा आत्मबल बढ़ता है और हम पूरे मनोयोग से उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कर्म करते हैं. 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' के सिद्धान्त पर चलने वालों को अधिकांश मामलों में सफलता मिलती ही है.



हरिश्चंद्र पंडित
क्षे. का. मंगलूर

बैंक मित्र

प्रधानमंत्री जनधन योजना की महत्वपूर्ण कड़ी



15 अगस्त 2015 को भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री जन-धन योजना का शुभारंभ किया गया जिसके द्वारा देश की एक बहुत बड़ी जनसंख्या का वह भाग जो बैंकिंग सुविधाओं से वर्जित रहा को अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा से जोड़ना था. इस योजना के अंतर्गत देश के हर परिवार के कम से कम एक सदस्य को बैंक में खाता खोलने की सुविधा दी गई. वास्तव में विश्व के आर्थिक इतिहास में वित्तीय समावेशन का सबसे बड़ा प्रयास है. योजना को आरम्भ करते समय एक स्पष्ट रोडमैप प्रस्तुत किया गया जिसके अंतर्गत देश की अनुमानित 25 करोड़ परिवारों का सर्वेक्षण कर न केवल हर परिवार के एक सदस्य का बैंक में खाता खोला जाए परंतु उन खातों में लेन-देन कराया जाए. इसके अलावा प्रत्येक खाते के साथ कुछ अन्य सुविधाएँ भी प्रदान की गई, जैसे दुर्घटना बीमा, ओवरड्राफ्ट की सुविधा, इत्यादि. 15 अगस्त 2014 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा योजना की शुरुआत के समय यह संदेश दिया गया कि यह वास्तव में वित्तीय अस्पृश्यता को समाप्त करने का एक बृहद प्रयास है जिसमें देश के दूरदराज इलाकों में रहने वाले पिछड़े एवं गरीब वर्ग के परिवारों को देश की बैंकिंग एवं वित्तीय व्यवस्था में जोड़कर उन्हें आर्थिक मुख्यधारा से जोड़ा जा सके.

योजना के आरम्भ के समय यह लक्ष्य रखा गया था कि 26 जनवरी 2015 तक बैंकों द्वारा लगभग 7.5 करोड़ खाते खोले जाएंगे. परंतु यह योजना आशा से अधिक सफल हुई व बैंकों द्वारा रिकार्ड तोड़ लगभग 12.5 करोड़ खाते खोले गए व इस में लगभग 21.5 करोड़ परिवारों का सर्वेक्षण कर प्रत्येक परिवार का एक बैंक खाता उपलब्ध कराया गया.

विश्व इतिहास में यह एक अभूतपूर्व वित्तीय घटना है. यहां तक कि एक सप्ताह में लगभग 1.80 करोड़ खाते खोलकर देश द्वारा गिनीज रिकार्ड बुक में भी नाम दर्ज कराया गया.

बैंक मित्र - आवश्यक पात्रता

वित्तीय समावेशन, जिसका उद्देश्य देश के प्रत्येक नागरिक को बैंक खाता खोलकर वित्तीय व्यवस्था से जोड़ा जा सके, अपने आप एक बहुत बड़ी चुनौती है. इस विशाल देश के दूर-दराज इलाकों में रहने वाले समाज के गरीब व पिछड़े वर्गों के हर व्यक्ति के पास बैंक को अपनी शाखाओं द्वारा पहुँचना लगभग नामुमकिन-सा कार्य था. इसी चुनौती का सामना करते हुए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा शाखा-विहीन बैंकिंग के द्वारा वित्तीय समावेशन करने हेतु बैंकों को दिशानिर्देश दिए गए. नवम्बर 2009 में भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को निर्देश दिया कि प्रत्येक गांव, जिसकी जनसंख्या 2000 से ऊपर है उसके बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट (B.C.) & बिजनेस फेसिलिटेटर लगाकर शाखाविहीन बैंकिंग की सुविधाएं दी जाएं. 31 मार्च 2014 तक B.C. के द्वारा 337678 गांवों में बैंकिंग सुविधाएं प्रदान की गईं. 31.12.2014 को समाप्त वर्ष में यदि हम आंकड़ों पर नजर डालें तो इन 337678 गांवों में तथा 60730 शहरी इलाकों में लगभग 11.69 करोड़ खाते खोले गए एवं इन खातों में लगभग 33 करोड़ संख्या में लेन-देन किए गए.

इस बी.सी. मॉडल के तीन पात्र होते हैं :- बैंक, बी.सी. एवं एजेण्ट अर्थात् बैंक मित्र. बैंक मित्र वह व्यक्ति है जो स्वयं या किसी कॉरपोरेट बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट & तकनीकी सेवा प्रदाता के प्रतिनिधि के रूप में आपके द्वार पर स्वयं बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है.

कौन होते हैं बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट ?

भारतीय रिजर्व बैंक नियमानुसार निम्नलिखित बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट के रूप में कार्य कर सकते हैं :-

1. एनजीओ / म्युचुअल फंड जो सोसायटी अधिनियम / ट्रस्ट उक्त के अंतर्गत स्थापित हों
2. को-ऑपरेटिव सोसायटी



3. कम्पनी अधिनियम के अंतर्गत धारा 25 में स्थापित कम्पनी या एन बी एफ सी, टैलीकॉम कम्पनी या उनकी होल्डिंग कम्पनी जिसमें उनकी भागीदारी 1% से अधिक न हो.
4. डाकघर
5. सेवानिवृत्त बैंक कर्मचारी
6. भूतपूर्व सैनिक
7. सेवा निवृत्त सरकारी कर्मचारी
8. सेल्फ हेल्प ग्रुप या उनके सदस्य जो बैंक से जुड़े हों या एन बी एफ सी जो लोन देती है, जिसका कम से कम लोन सूक्ष्म वित्तीय क्षेत्र में 8% से कम ना हो.
9. इसके अलावा रिजर्व बैंक ने बैंकों को किसी भी व्यक्ति को बैंक बिजनेस कॉरस्पॉन्डेंट के रूप में नियुक्त करने की अनुमति दी है. इसमें वह व्यक्ति भी शामिल है जो सामान्य सेवा केंद्र (CSC) चलाते हैं.
90. वह व्यक्ति जिनकी किराना/दवाई की दुकान है.
91. पीसीओ चलाने वाले
92. छोटी बचत स्कीम/बीमा एजेंट एवं पेट्रोल पम्प चलाने वाले
93. सेवानिवृत्त अध्यापक

बैंक मित्र की गतिविधियाँ :-

बैंक मित्र सामान्यतः निम्नलिखित कार्य करते हैं :-

1. बचत एवं बैंकिंग सम्बन्धी जानकारी लोगों को देना
2. खाता खोलने हेतु ग्राहकों की पहचान करना
3. फार्म भरना तथा आवश्यक कागजात एकत्रित करना व उनका सत्यापन करना / केवाईसी के अनुसार कागजात लेना
4. पीओएस / मशीन के डाटा खाता खोलना
5. खातों का संचालन - जमा/भुगतान/धनराशि प्रेषण/इन राशि की न्यूनतम एवं अधिकतम सीमा बैंक द्वारा निर्धारित होती है.
6. खातों की मिनी स्टेटमेंट जारी करना
7. इसके अलावा बैंक मित्र लघु बीमा के उत्पादों की भी बिक्री कर सकते हैं.

कैसे कार्य करते हैं बैंक मित्र :-

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि बैंक मित्र वह व्यक्ति है जो उपरोक्त संस्थाओं की तरफ से नियुक्त या स्वयं अपने आप बैंकिंग सुविधाओं को दूर-दराज क्षेत्रों में जहाँ बैंकों की शाखाएं नहीं हैं, वहाँ पर समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों को बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करवाता है.

इन सुविधाओं को उपलब्ध करवाने की सामान्य तकनीक जो अब तक प्रयोग की जा रही थी वह एक हैंड -होल्डिंग डिवाइस (HHD) या पाईट ऑफ सेल (POS) मशीन एवं स्मार्ट कार्ड है. इसमें सारा लेन-देन बायोमैट्रिक सत्यापन के आधार पर होता है अर्थात् खातेदार की उंगलियों की छाप के आधार पर सारी प्रक्रिया पूरी की जाती है. खातेदार को एक स्मार्ट कार्ड भी दिया जाता है जिसके द्वारा भी



लेनदेन किया जाता है. बाद में इस लेन-देन को बैंक के सर्वर में स्थानांतरित कर बैंक के रिकार्ड में लेनदेन दर्ज किया जाता है.

परंतु वित्तीय समावेशन में उपयोग की जाने वाली तकनीक में और प्रगति हुई है. आधार कार्ड जारी होने से एक बहुत बड़ा लाभ यह भी हुआ है कि आधार के द्वारा खाताधारक की पहचान एवं लेन-देन का सत्यापन और सुरक्षित हो गया है.

स्मार्ट कार्ड एवं पीओएस मशीनों के अलावा आजकल निम्नलिखित तकनीक उपलब्ध है :-

1. मोबाईल कम्युनिकेशन द्वारा बैंकों/बैंक मित्र/ एवं ग्राहकों को जोड़ कर लेन-देन
2. आधार / एनपीसीआई के साथ माईक्रो एटीएम को जोड़ कर लेन-देन जोकि बैंक के गेटवे सर्वर एवं एनपीसीआई सर्वर से जुड़ा हो.
3. मोबाईल फोन पर आधारित तकनीक में ग्राहक मोबाईल फोन को बैंक मित्र/ग्राहक/बैंक से जोड़ना.
4. कियोस्क पर आधारित व्यवस्था - इस माध्यम में इन्टरनेट के द्वारा लेन-देन किया जाता है. एक कम्प्यूटर या लैपटाप को इन्टरनेट से जोड़कर व प्रिंटर एवं स्कैनर की मदद से गांव में बैंक मित्र के स्थायी स्थान पर से लेन-देन किया जाता है.

बैंक मित्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीकों में निरंतर प्रगति हो रही है. प्रधान मंत्री जन-धन योजना लागू होने के बाद यह आवश्यक हो गया है कि बैंक मित्र को नवीनतम तकनीक उपलब्ध कराई जाए. प्रधान मंत्री जन-धन योजना में यह निर्धारित किया गया कि हर खाता धारक को 'रुपे डेबिट कार्ड (एटीएम)' दिया जाए जिसके द्वारा खाता धारक पैसा निकाले. योजना के अंतर्गत 1,00,000/ रुपये का दुर्घटना बीमा भी तभी मिलेगा जब खाता धारक 45 दिन में एक बार रुपे कार्ड का उपयोग करे. इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि बैंक मित्र को माईक्रो एटीएम की मशीन उपलब्ध कराई जाए जिसमें रुपे कार्ड का उपयोग हो सके. माईक्रो एटीएम वास्तव में एक हैंड होल्डिंग डिवाइस ही है जिसके मानक आई.एस.आई./ भारतीय बैंक संघ द्वारा निर्धारित किये गए हैं. यह मशीन यूआईडीए सर्वर, एनपीसीआई सर्वर एवं बैंक के गेटवे से जुड़ी होती है. इसमें आधार के आधार पर खातेदार का सत्यापन होकर खातों को एनपीसीआई के सर्वर से होते हुए बैंक के सर्वर में दर्ज किया जाता है. इसके द्वारा इंटर ऑपरेटिबिलिटी की सुविधा भी होती है अर्थात् एक बैंक का ग्राहक दूसरे बैंक के बैंक मित्र के पास जाकर भी लेन-देन कर सकता है. वास्तव में यह एक बहुत ही सुरक्षित टेक्नोलाजी है जिसका उपयोग भविष्य में बैंक मित्रों की कार्यप्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी तथा वित्तीय समावेशन का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ साबित होगा.

बैंकों द्वारा प्रधान मंत्री जन-धन योजना में लगभग 12.5 करोड़ खाते खोले जा चुके हैं. अभी भी इसमें 67% खाते ऐसे हैं जिनमें 'जीरो बैलेन्स' है अर्थात् लेन-देन आरम्भ नहीं हुआ है. अतः यह आवश्यक है कि इन खातों में लेन-देन आरम्भ किया जा सके. यह तकनीकी सक्षमता ही इस योजना की सफलता मूलभूत रूप से सुनिश्चित कर सकती है.

बैंक मित्र - समस्याएँ

यद्यपि बैंक मित्र लम्बे समय से बैंकों में वित्तीय समावेशन के कार्य में जुटे हैं परन्तु प्रधानमंत्री जन-धन योजना लागू होने से पहले इस पद्धति को आशातीत सफलता नहीं मिली। इसके लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित कारण रहे :-

1. वित्तीय साक्षरता का अभाव / दूर दराज व पिछड़े क्षेत्रों में बैंक सुविधाओं के बारे में ज्ञान न होना।
2. एक मानक व सुरक्षित टेक्नोलाजी का अभाव तथा दूर क्षेत्रों में नेटवर्क की समस्याएँ
3. वित्तीय रूप से यह कार्य बहुत बड़े रूप में बैंकों को लाभप्रद नहीं होगा। वित्तीय समावेशन को एक सफल व्यवसाय नहीं बल्कि मजदूरी समझा गया। बैंक मित्रों को उपयुक्त आय नहीं होती है।
4. जनता में बैंक मित्रों के प्रति अविश्वास-वित्तीय साक्षरता के अभाव में लोगों को बैंक मित्रों में पूरा विश्वास नहीं होता था व उनसे लेन-देन करने से कतराते थे। कम संख्या के लेन-देन से इस पूरे मॉडल की सक्षमता एक बहुत बड़ी चुनौती थी।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना लागू करते समय उपरोक्त समस्याओं के समाधान हेतु ठोस कदम उठाये गए तथा बैंकों का वित्त मंत्रालय द्वारा आवश्यक निर्देश दिए गए। यथा :-

1. बैंकों द्वारा प्रत्येक बैंक मित्र को कम से कम उत्पादकता आधार पर 5,000/ प्रति माह का वेतन निर्धारित किया गया। पूर्व में बैंक मित्रों को वेतन उनके कारपोरेट बिजनेस कॉर्रसपोन्डेंट्स द्वारा दिया जाता था। नए निर्देशों के अनुसार बैंक मित्र का वेतन सीधे तौर पर उनके बचत खाते में दिया जाएगा।
2. बैंकों द्वारा एकरूपता से माईक्रो एटीएम पर पिन आधारित तकनीक का उपयोग किया जाएगा जिसमें रुपये डेबिट कार्ड का प्रयोग हो सके तथा यह माईक्रो एटीएम में अंतर परिचालन की क्षमता हो अर्थात् कोई भी खाता धारक दूसरे बैंक के बैंक मित्र के पास जाकर भी रुपये कार्ड का उपयोग कर सके।
3. वित्तीय साक्षरता हेतु प्रचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा भारतीय बैंक संघ ने संयुक्त प्रचार अभियान आरम्भ किए।
4. बैंक मित्र के आवश्यक प्रशिक्षण हेतु भारतीय बैंक संघ ने एकरूप मानक तय किए तथा बैंकों को बैंक मित्रों का आवश्यक प्रशिक्षण देने हेतु दिशा निर्देश दिए।

भविष्य की योजनाएँ

प्रधानमंत्री जन-धन योजना की बड़ी सफलता जिसमें 12.5 करोड़ से ऊपर खाते खोले गए, बैंकों को यह लगने लगा है कि वित्तीय समावेशन एक लाभ कमाने का भी साधन हो सकता है। अतः बी.सी. मॉडल के ढांचे को मजबूत बनाया जाना चाहिए। बैंक इस क्षेत्र में गंभीरता से कार्य कर रहे हैं।

इस क्षेत्र में अब नए-नए प्रयोग भी किए जा रहे हैं। कई टेक्नोलाजी कम्पनियों अब इस क्षेत्र में आ रही हैं जोकि सूक्ष्म वित्तीयन / बीमा/ विप्रेषण उत्पादों का वितरण कर रही हैं।

यूनियन बैंक द्वारा एनडीडीबी के साथ दूध विक्रेताओं को भुगतान तथा SKDRDP संस्था से जुड़कर यूनियन बैंक, कारपोरेशन बैंक, आईडीबीआई

बैंक, रत्नाकर बैंक, एसबीआई, केनरा बैंक द्वारा दूर दराज इलाकों को बैंक मित्रों के द्वारा मायक्रो ऋण दिए गए।

स्वयं सहायता समूह - बैंक सखी

बैंक द्वारा वित्तपोषित स्वयं सहायता समूह विश्व में लघु ऋण वितरण का सबसे बड़ा प्रयास है। 1992 में स्वयं सहायता समूह की शुरुआत नाबार्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार की गई। भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी स्वयं सहायता समूह को बिना किसी गारंटी के ऋण देने में बैंकों को प्रोत्साहित किया। तब से स्वयं सहायता समूह अपने आप में लघु ऋण वितरण का एक अभियान बन गया है।

इसी कड़ी में स्वयं सहायता समूह को या उनके सदस्यों को बैंक मित्र के रूप में लाने के लिए प्रयास किए गए हैं। वास्तव में जमीन से जुड़े होने के कारण सही रूप से प्रशिक्षित सदस्य बैंक मित्र के रूप में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में एक प्रयोग किया गया जिसमें स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों, जिन्हें 'बैंक सखी' का नाम दिया गया, को आवश्यक प्रशिक्षण एवं टेक्नोलाजी देकर ग्रामीणों के द्वार तक बैंक सुविधाएं देने का प्रयास किया गया। आंकड़ों के अनुसार 2013 में उत्तर प्रदेश में आयावर्त ग्रामीण बैंक के साथ मिलकर एक कारपोरेट बिजनेस कॉर्रसपोन्डेंट्स - बार्टॉनिक्स द्वारा यह प्रयास आरम्भ किया गया। अक्टूबर 2014 तक 50 बैंक सखी कार्यरत थीं जिनके द्वारा लगभग 19,000 खाते खोले गए। भविष्य में बैंकिंग सुविधाएँ हर घर तक पहुँचाने में यह प्रयास लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

यूनियन बैंक के बैंक मित्र

यूनियन बैंक वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में एक अग्रणी बैंक है। वास्तव में बैंक द्वारा शाखा विहीन बैंकिंग की शुरुआत 2007 में कर दी गई तथा देश के सभी भागों में बैंकिंग सुविधाएँ देने हेतु विभिन्न कारपोरेट बिजनेस कॉर्रसपोन्डेंट्स कम्पनियों जैसे फीनो लि. बार्टॉनिक्स, वक्रान्गी से करार कर बैंक मित्रों को नियुक्त किया।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना से पहले ही बैंक द्वारा लगभग 34,000 गांवों में लगभग 8000 बैंक मित्रों के द्वारा शाखा विहीन बैंकिंग की सुविधाएँ दी गईं। प्रधानमंत्री जन-धन योजना लागू होने पर बैंक को 18,396 गांव आंबंटित किए गए। योजना अनुसार इन गांवों को लगभग 5500 उप सेवा क्षेत्र (SSA) में विभाजित किया गया अर्थात् 34 गांवों का एक समूह बनाया गया। प्रत्येक समूह पर एक बैंक मित्र नियुक्त कर बैंक द्वारा इन 18396 गांवों में बैंकिंग सुविधाएँ दी जा रही हैं। बैंक द्वारा 40 लाख से ऊपर खाते इस योजना में खोले जा चुके हैं।

जैसा कि अब तक बताया गया है वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया में बैंक मित्र की बहुत बड़ी भूमिका है। बैंकों द्वारा 12.5 करोड़ से ऊपर खाते खोलकर लगभग 21 करोड़ परिवारों को बैंकिंग की मुख्य धारा से जोड़ दिया गया है। अब वास्तविक चुनौती इन खाता धारकों को उनके निवास के पास लगातार लेन-देन की सुविधा प्रदान करने की है। एक सक्षम, तकनीक युक्त व संवेदनशील बैंक मित्रों का समूह ही यह उद्देश्य पूरा कर सकता है।



एस. के. भाटिया
वित्तीय समावेशन विभाग, कें.का., मुंबई

खुशनुमा व्यक्तित्व - सुखी जीवन

आधुनिक परिदृश्य एवं प्रतिस्पर्धी युग में शालीन एवं सुख-समृद्धि पूर्ण जीवन जीना प्रत्येक व्यक्ति की कामना होती है। जैसे किसी भवन की मजबूती एवं स्थिरता उसकी नींव पर निर्भर करती है, उसी प्रकार हमारे जीवन में सुख समृद्धि की परिपूर्णता की आधारशिला भी हमारा खुशहाल मन एवं स्वस्थ शरीर होता है। आइये जानें कि हम खुशहाल मन और स्वस्थ शरीर की नींव को कैसे मजबूत कर सकते हैं।

सर्वप्रथम हमें अपने मन को मजबूत करना आवश्यक है और इसमें शामिल है * प्रबल इच्छा शक्ति * दृढ़ संकल्प * मजबूत आत्मविश्वास और सकारात्मक रवैया। मन के इन चार आधार स्तंभों की नींव जितनी मजबूत होगी, हम उतने ही प्रसन्नचित और खुशहाल रहेंगे। इसमें जहाँ प्रबल इच्छा-शक्ति चुनौती पूर्ण कार्यों को स्वीकार करके उन्हें सम्पन्न करने की प्रेरणा जगाती है, वहीं दृढ़ संकल्प की भावना कर्तव्यनिष्ठा तथा स्वाभिमान का प्रतिनिधित्व करती है। मजबूत आत्मविश्वास जहाँ अदम्य साहस एवं अंतर्मुखी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा जगाता है वहीं सकारात्मक रवैया जीवन में नकारात्मक पहलुओं तथा दुखों को दूर करने के अवसर प्रदान करता है।

खुशनुमा व्यक्तित्व हमारे शरीर के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। व्यक्तित्व की इस महत्वपूर्ण आधारशिला-स्वास्थ्य-को मजबूत करने हेतु हमें अपनी जीवन-शैली में थोड़े से परिवर्तन करने होंगे जिससे बिगड़ते खान-पान एवं शारीरिक व्यायाम के अभाव के फलस्वरूप अस्वस्थ रहने से बचा जा सके। आज के तथाकथित आधुनिक परिदृश्य में अपनी जीवन शैली में थोड़े से परिवर्तन करके हम स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आइये! इन्हें जानें और अपनी जीवन शैली में आत्मसात करें।

नियमित रूप से टहलने जायें एवं व्यायाम करें। प्रत्येक सुबह टहलने जाना एवं हल्का व्यायाम दिन भर पूरे शरीर को स्फूर्तिवान एवं ऊर्जावान बनाए रखने में मदद करता है।

संतुलित आहार लें। स्वच्छ एवं संतुलित आहार को प्राथमिकता दें। एक बार में अत्यधिक भोजन लेने के बजाय 2 से 3 घंटे के अंतराल से थोड़ा-थोड़ा खायें जिससे भोजन अच्छी प्रकार से पचे और रस-स्त्राव एवं रसावशोषण भली प्रकार हो सके। इससे शरीर ऊर्जावान बना रहता है।

प्रत्येक घंटे में थोड़ा सा विश्राम लें। अपने कार्य-स्थल अथवा कार्यालय में एक साथ लंबे समय तक बैठने के बजाय हर एक से दो घंटे के अंतराल से 5 से 10 मिनट का विश्राम अवश्य लें जिससे कार्य के दौरान थकान महसूस न हो। विश्राम का तात्पर्य बिस्तर पर लेटकर सोना ही नहीं होता। पंजवाहरलाल नेहरू कहते थे कि हमारा मस्तिष्क कभी नहीं थकता। बस जरूरत होती है

तो अपनी ऊर्जा को रि-क्रियेट करने की। और ऐसा टेबल पर रखी झरने की सुंदर सी तस्वीर को देखकर ताजगी का एहसास लेते हुए किया जा सकता है। कार्य-स्थल पर लगे एक्वेरियम में खेलती मछलियों को देखकर किया जा सकता है या अन्य किसी तरह की पसंदीदा बात से भी किया जा सकता है किंतु इतना ध्यान जरूर रखा जाना चाहिये कि कार्य-स्थल पर किये जाने वाले इस रि-क्रियेशन से अन्य सहकर्मियों के कार्य में व्यवधान न पड़े।

रात्रि के भोजन के बाद नियमित रूप से आधा घंटा जरूर टहलें ताकि भोजन उदर स्रावित रसों-रसायनों में अच्छी तरह से मिश्रित हो सके और सुपाच्य बन सके। इसके साथ ही भरपूर नींद लें। सुबह जल्दी जागें जिससे अगले कार्य दिवस हेतु आप पुनः ऊर्जावान हो सकें।

संयमित आचरण एवं संतुलित आहार-व्यवहार को प्राथमिकता दें। अपने सहकर्मियों, मित्रों व परिवार-जनों से संयमित आचरण एवं सकारात्मक व्यवहार रखें ताकि आपके प्रभावशाली स्वभाव एवं आदर्श व्यक्तित्व की झलक को अन्य सभी अपनाने का प्रयास कर सकें।

आइये, आज हम संकल्प लें कि हम अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए स्वस्थ जीवन शैली अपनायेंगे एवं दूसरों को भी प्रोत्साहन देंगे जिससे हम स्वयं अपने तथा अपने संगठन के प्रभावशाली विकास एवं उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम हो सकें साथ ही विकासशील से विकसित राष्ट्र की ओर नये शिखर की बुलंदियों, उच्च आयाम एवं विश्व कीर्तिमान स्थापित कर सकें।



राहुल सहारे
शास्त्री नगर शाखा, भोपाल

हमारी योजनाएं

यूनियन नारी शक्ति

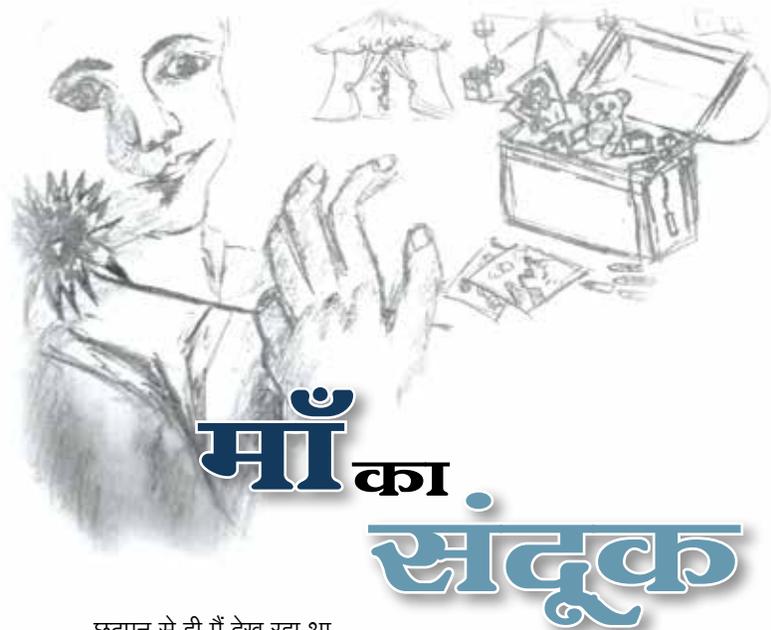
देश के विकास में महिलाओं का काफी योगदान रहा है। देश की अर्थव्यवस्था की वृद्धि में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। पिछले कुछ समय से देश के उद्यमशीलता के क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति महसूस की जा रही है।

इसे ध्यान में रखते हुए हमारे बैंक ने केवल महिला उद्यमियों के लिए एक नई योजना शुरू की है जिसका नाम है यूनियन नारी शक्ति। महिला उद्यमियों को आर्थिक सहायता प्रदान करना और व्यापक संभावनाओं का दोहन करना इस योजना का उद्देश्य है। इस योजना के तहत महिला उद्यमियों के स्वामित्व वाली सेवा तथा निर्माण क्षेत्रों की सूक्ष्म तथा छोटी इकाइयों को वित्तपोषण किया जाता है। इससे न केवल महिलाएं स्वावलंबी बनने में सक्षम होंगी बल्कि क्षेत्र विशेष की प्रगति के साथ-साथ देश का विकास भी होगा।

इस योजना की अधिक जानकारी के लिए अनुदेश परिपत्र क्रमांक 10096 दिनांक 10 नवंबर, 2014 का संदर्भ लें।



अशोक आचार्य
रिटेल बैंकिंग विभाग, के.का.मुंबई.



माँ का संदूक

छुटपन से ही मैं देख रहा था,
माँ ने अपने पास एक संदूक रखा था।
अपने कमरे में बिस्तर के नीचे रखती थी,
मैं पूछता तो हँस के टाल देती थी।
मेरे बालमन में कई खयाल आते थे,
जो मुझे अक्सर बेचैन कर जाते थे।

सोचता था माँ ने ढेरों पैसे बचाये होंगे,
मुझे देने ना पड़ें, इसलिए छुपाये होंगे।
समय के साथ मैं बड़ा और माँ बूढ़ी हो गई,
मेरी जिज्ञासा भी मेरे साथ बड़ी हो गई।

संदूक को लेकर मन में तरह-तरह के खयाल आते थे,
कभी-कभी तो मुझे सोते से जगाते थे।
एक दिन मैंने संदूक खोला तो आँखें भर आई थीं,
माँ ने उसमें मेरे बचपन की यादें संजोई थीं।

मेरी निक्कर, टूटे खिलौने, धूप वाला चश्मा भी संभाला था,
और वो प्लेट के टुकड़े, जिन्हें मैंने हवा में उछाला था।
बचपन की तस्वीरें और वो बल्ला जो मैंने जीता था,
और वो कार्टून वाला गिलास, जिसमें मैं दूध पीता था।

यहाँ तक कि मेरा टूटा हुआ दाँत भी रखा था,
और वो मेरे हाथों का बना कार्ड जिसमें मैंने "प्यारी माँ" लिखा था।
अपने बचपन की चीजें देखकर मेरी आँखें भर आईं,
उस दिन समझ पाया मैं माँ के प्यार की गहराई।

एहसास हुआ जो मेरे लिए बस एक पल था,
वो मेरी माँ का खजाना था और बीता हुआ सुनहरा कल था।
जब मेरी चीजें मुझे मेरे बचपन की याद दिला रहीं थीं,
माँ मेरे पीछे ही खड़ी थी और वो मुस्कुरा रही थी।

दीपक कोहली
क्षे. का. देहरादून.

नव वर्ष

नये वित्तीयवर्ष के अवसर पर

अवधारणा पुरातन से नूतन की
प्रस्थान और आगमन की
समय की धारा में बहते हम
पतवार-विहीन नाविक से
आदि से अंत पर्यंत.
अंतराल को मापने की भ्रांति
बस एक अंक गणित मात्र
महाशून्य से लेकर अबतक
हर क्षण शाश्वत, हर पल नूतन
अपरिमित, असीमित, निर्बंध
अपरिचित आगंतुक सा
स्नेहिल स्पर्श से
हमारी चेतना को सहलाता, सपने जगाता
सृजन को तत्पर, रचने को विह्वल
धवल, निष्कपट, निश्चल.
कृत्य तो मानव का छोड़ जाता अभिट घाप
मैला नहीं उसका आंचल
नव आकृति की रचना को
प्रस्तुत करता केनवास
दिशाहीनों का दिग्दर्शक
समय का हरेक पल
धारा एक अविरल
अविभक्त कालखंडों में
दशा, दिशा के हथकंडों में
पलों से युगों तक यात्रा एक अविराम
प्रथम सारथी मान रथ का
न आगमन न प्रस्थान
हर पल अभिनव हर पल महान...

समय

चाबी सफलता की...

जब व्यक्तित्व की बात आती है तो हम समय जैसी अमूल्य प्राकृतिक संपदा को कैसे भूल सकते हैं। एक संतुलित व्यक्तित्व ही समय का बेहतर प्रबंधन और अधिकतम उपयोग कर सकता है। जिसका मस्तिष्क संयत, संतुलित, शांत और अपेक्षाकृत अधिक तार्किक होगा— वही समय के श्रेष्ठतम सदुपयोग से समय की रेस में विजयी होगा। यह शाश्वत सत्य है। किसी भी व्यक्ति का समय उसके जन्म से शुरू होता है और उसकी अंतिम साँस तक चलता है। इस सीमित समय का अधिकतम और श्रेष्ठतम उपयोग किसी भी व्यक्ति को राजा बना सकता है। कोई 24 घंटों में बहुत सारे काम कर पाता है तो कोई 24 दिनों में एक भी काम नहीं कर पाता। यही समय का उचित प्रबंधन है जो किसी भी व्यक्ति की मानसिक सुदृढ़ता का परिचायक और भावी सफलताओं का विनियामक है।

मानव जीवन में समय ही सफलता की कुंजी है। समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है या यूँ कहें कि भाग रहा है। यह गति नियत है, नियमित है, निरंतर है। इसमें किसी प्रकार का बदलाव या फेरबदल ना तो होता है और ना ही करना संभव है। अक्सर हमें किसी ना किसी से यह सुनने को मिल ही जाता है कि 'क्या करें! समय ही नहीं मिलता'। वस्तुतः हम निरंतर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नहीं पाते और पिछड़ जाते हैं। समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हम हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं और अधिकांशतः इसे एक बहाने की तरह इस्तेमाल करते हैं। इसका कारण यह है कि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे समझे खर्च कर देते हैं या यूँ कहें कि व्यर्थ कर देते हैं।

समय की बर्बादी विकास की राह में सबसे बड़ा शत्रु है, चाहे वह आत्म-विकास हो, समाज का विकास या राष्ट्र का विकास। एक बार जो समय हाथ से निकाल गया वह फिर कभी वापस नहीं आता है। हमारा अमूल्य वर्तमान क्रमशः भूत बन जाता है, जो कभी वापस नहीं आता। सत्य कहावत है कि बीता हुआ समय और बोले हुए शब्द कभी वापस नहीं आ सकते। कबीरदास ने कहा है—

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,

पल में परलै होएगी, बहुरी करेगा कब ?

सच ही तो है मित्रो, किसी भी काम को कल पर नहीं टालना चाहिए, क्योंकि आज का काम कल पर और कल का काम परसों पर टालने से काम अधिक हो जाएगा तथा कभी-कभी तो कुछ काम धरे-धरे रह जाएंगे। कल पर टालना गलत है क्योंकि कल कभी नहीं आता है। बासी काम बासी भोजन की तरह अस्वीकार्य तथा परिहार्य व मूल्यहीन हो जाता है। समय जैसे बहुमूल्य धन को सोने-चांदी की तरह सहेज कर नहीं रखा जा सकता, क्योंकि समय गतिमान है। इस पर हमारा अधिकार तभी तक है जब तक हम इसका सदुपयोग करते हैं, अन्यथा यह नष्ट हो जाता है। समय का सदुपयोग, धन के सदुपयोग से भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम सभी की सुख-सुविधा इसी पर निर्भर है। चाणक्य के अनुसार जो व्यक्ति जीवन में समय की परवाह नहीं करता, उसके हाथ असफलता और पछतावा ही लगते हैं। समय जितना कीमती एवं नाशवान तत्व है, उतना ही हम उसका महत्व नहीं समझते। परंतु जिन्होंने इसके महत्व को समझा है वे विश्व इतिहास में हमेशा विद्यमान रहेंगे। ईश्वरचंद्र विद्यासागर समय के बड़े पाबंद थे। कहते हैं, जब वे कॉलेज जाते थे तो रास्ते के दुकानदार अपनी घड़ियाँ उन्हें देख कर ठीक करते थे। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपने छोटे से जीवन काल में इतनी सारी रचनाएँ कर डालीं क्योंकि वे समय का सदुपयोग करते थे एवं बिना इसे व्यर्थ किए अपने मनोभावों को कागज पर उकेरते रहते थे। आज हम जिन इतिहास पुरुषों को याद करते हैं, उन्होंने अपने जीवन में समय के सदुपयोग को सदैव प्राथमिकता दी। कहने का आशय यह है कि सभी विकासशील लोगों में एक बात

समान है—समय का सदुपयोग।

समय का प्रबंधन, प्रकृति से स्पष्ट समझा जा सकता है। समय का कालचक्र प्रकृति में नियमित है। दिन-रात समय पर आते हैं, ऋतुएँ समय पर आती-जाती हैं, ज्वारभाटा का समय निश्चित है, चाँद की कलाओं का समय निश्चित है, पक्षियों का विचरण, पशुओं का पलायन, सब निश्चित है। यदि कहीं भी अनियमितता होती है तो विनाश की लीला भी प्रकृति दिखा देती है। समय की उपेक्षा करने पर कई बार विजय का पासा पराजय में पलट जाता है। नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया को इसलिए हरा दिया क्योंकि वहाँ के सैनिकों ने पाँच मिनट का विलंब कर दिया था। वहीं कुछ ही मिनटों में नेपोलियन बंदी बना लिया गया क्योंकि उसका एक सेनापति थोड़े विलंब से आया। वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की पराजय का सबसे बड़ा कारण समय की अवहेलना ही थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हिटलर की सेना का सोवियत संघ में पराजित होना, समय के महत्व को ही साबित करता है। 1857 की क्रान्ति के विफल होने का एक प्रमुख कारण, उसका नियत समय से दो दिन पहले शुरू होना था। कहते हैं कि खोई हुई दौलत फिर से कमाई जा सकती है, भूली विद्या फिर से पाई जा सकती है, किन्तु खोया हुआ समय पुनः वापस नहीं लाया जा सकता, सिर्फ पश्चताप ही शेष रह जाता है।

समय के गर्भ में संपदा का अक्षय भंडार भरा हुआ है। किन्तु इसे वही पाते हैं जो इसका सही उपयोग करते हैं। जापान के नागरिक ऐसा ही करते हैं। वे अपने व्यावसायिक कार्य से फुरसत मिलने पर छोटी मशीनों या खिलौनों के पुर्जों से नियमित रूप से कुछ न कुछ नया बनाते हैं। इस प्रकार समय के सदुपयोग से उन्हें अतिरिक्त धन की प्राप्ति होती है और समाज तथा राष्ट्र भी परोक्ष रूप से लाभान्वित होता है। उनकी खुशहाली का बड़ा कारण समय का सदुपयोग है।

समय तो उच्चतम शिखर पर पहुँचने की सीढ़ी है। जीवन का महल समय के इन घंटों-मिनटों की ईंटों से बनता है। प्रकृति ने किसी को भी अमीर गरीब नहीं बनाया। उसने अपनी बहुमूल्य संपदा अर्थात् दिन के चौबीस घंटे सबको बराबर बाँटे। राजा या रंक, मंत्री या संतरी, व्यवसायी या मजदूर, चाहे वह किसी भी व्यवसाय, धर्म, देश या काल का हो, सबको यह धन बराबर ही प्राप्त हुआ है— दिन के चौबीस घंटे। न कम ना ज्यादा। अब यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह इस समय का उपयोग कितना और कैसे करता है। कोई कितना ही परिश्रमी क्यों ना हो, परंतु समय पर कार्य न करने से उसकी मेहनत व्यर्थ चली जाती है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया बीज बेकार हो जाता है, उसमें फल नहीं लगते। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्ज्वल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझ कर बरबाद कर रहे हैं, वही पल हमारे लिए सौभाग्य की सफलता का क्षण हो। एक मुहावरा है **अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत**। अर्थात् जब खेतों की फसल चिड़ियों ने बर्बाद कर दी, उसके बाद पछताने से क्या होगा। समय पर किए गए परिश्रम से फसलों को बचाया जा सकता है। ठीक वैसे ही समय का सदुपयोग यह निर्धारित करता है कि हमारे जीवन की दिशा क्या होगी। जहाँ समय के सदुपयोग से सफलता एवं खुशियाँ जीवन में स्वतः अवतरित होती हैं वहीं इसे बर्बाद करना दुर्भाग्य और कष्टों को न्योता देने जैसा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वक्त और सागर की लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। हमारा कर्तव्य है कि हम समय का पूरा-पूरा उपयोग करें। आने वाला प्रत्येक क्षण तो आकाश-कुसुम की तरह है जिसकी खुशबू से स्वयं को सराबोर कर लेना चाहिए।



राकेश कुमार सिंह
क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर



भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस)

भारतीय रिजर्व बैंक ने केंद्रीकृत बिल पेमेंट सिस्टम की दिशा में एक और कदम आगे बढ़ा दिया है। अब आपको जल्द ही बिजली, पानी, फोन या फिर इंश्योरेंस बिल के भुगतान के लिए लंबी कतारों से निजात मिल सकती है। इस प्रणाली को 'भारत बिल पेमेंट सिस्टम' नाम दिया गया है।

भारत बिल भुगतान प्रणाली (Bharat Bill Payment System, BBPS) भारत की एक समन्वित बिल भुगतान प्रणाली है जो ग्राहकों को एक सुविधाजनक तरीके से भिन्न भिन्न प्रकार के बिल, फीस आदि का भुगतान एक ही स्थान पर करने की सुविधा उपलब्ध कराएगी। इस पेमेंट सिस्टम में ग्राहकों को एजेंट्स के विस्तृत नेटवर्क के माध्यम से, विभिन्न प्रकार के भुगतान माध्यम द्वारा भुगतान की तुरंत पुष्टि भी हो सकेगी।

हमारे देश में इलेक्ट्रॉनिक तकनीक का प्रयोग करके जागिरो (GIRO) भुगतान प्रणाली को कार्यान्वित करने से पहले रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, के कार्यकारी निदेशक श्री जी पद्मनाभन के निर्देशन में एक कमेटी का गठन किया गया। जिसके परिणामस्वरूप गैग (GAG) परामर्श समूह का गठन हुआ। इस समिति के अनुमान के अनुसार भारत के बड़े शहरों में ही प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों के बिल आते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि हमारे देश में एक समन्वित बिल भुगतान की नितांत आवश्यकता है।

वर्ष 2014 में आईआईटी बॉम्बे के प्रोफेसर उमेश बेल्लूर की अध्यक्षता में गिरो (GIRO) परामर्श समूह का गठन किया गया। गिरो (GIRO) परामर्श समूह की संस्तुति के आधार पर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने भारत बिल भुगतान प्रणाली को कार्यान्वित करने के लिए 28 नवम्बर, 2014 को दिशा निर्देश जारी किए। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा जारी किए गए निर्देशों का सार इस प्रकार है :-

योजना: भारत बिल पेमेंट सिस्टम एक विशेष लेयर्ड स्वरूप है, जिसके माध्यम से यह प्रणाली एकल ब्रांड के ही अंतर्गत हमारे देश में कार्यान्वित होगी। बीबीपीएस की सुविधा का लाभ उठाकर सभी ग्राहक अपनी सुविधानुसार कभी भी कहीं भी बिल भुगतान की सुविधा प्राप्त कर सकेंगे।

बीबीपीएस के संघटक: भारत बिल भुगतान प्रणाली के मुख्य घटक भुगतान और समझौता अधिनियम, 2007 के अंतर्गत कार्य करेंगे, जिनका विवरण निम्नवत् है:-

- 1.) भारत बिल पेमेंट केन्द्रीय यूनिट : यह एकल अधिकृत संस्था होगी जो भारत बिल पेमेंट सिस्टम को चलाने के लिए टेक्निकल, ऑपरेशनल और बिजनेस से जुड़े मापदण्ड पूरे सिस्टम और इसके प्रतिभागियों के लिए निर्धारित करेगा। कंट्रोल यूनिट जिन मानकों का निर्धारण करेगी वो इस प्रकार हैं:-
 - i.) पीएसएस अधिनियम के अंतर्गत सभी बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट के लिए बिजनेस के स्टैंडर्ड, नियम और तरीके
 - ii.) सभी बीबीपीएस ऑपरेटिंग और सेंट्रल यूनिट के साथ-साथ बीबीपीएस से जुड़ी सभी बिजनेस/टेक्निकल/ऑपरेशन इकाइयों के लिए कार्यविधि एवं कार्य प्रणाली का निर्धारण
 - iii.) सूचना के आदान-प्रदान से जुड़ी सुरक्षा से संबन्धित नियम
 - iv.) रिस्क मितिगेशन

- v.) यूनिट क्लियरिंग और सेटलमेंट से जुड़ी कार्यविधि का निर्धारण
 - vi.) धोखाधड़ी एवं ऑपरेशनल रिस्क से निबटने के लिए रूपरेखा बनाना
 - vii.) सम्पूर्ण देश में बीबीपीएस की मार्केटिंग के साथ-साथ ब्रांड पोजिशनिंग
 - viii.) शिकायतों/विवाद के निपटान के लिए उपयुक्त क्रिया-विधि का निर्माण
- 2.) भारत बिल पेमेंट ऑपरेटिंग यूनिट: इस यूनिट का परिचालन भारत बिल भुगतान केन्द्रीय यूनिट के द्वारा बनाए गए नियमानुसार होगा। एक ही भुगतान केन्द्रीय यूनिट के अंतर्गत सभी ऑपरेटिंग यूनिट कार्य करेंगी। प्रत्येक बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं :-
- i.) बिलर और अग्रीगेटर को जोड़ना, एजेंट्स का ड्यू-डिलिजेंस करने के साथ ही साथ स्टैंडर्ड के अनुसार गोपनीयता बरकरार रखना
 - ii.) आधारभूत संरचना का निर्माण (इनफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट): एप्लिकेशन डेवलपमेंट, ऑपरेटिंग यूनिट्स के लिए कंट्रोलिंग यूनिट द्वारा निर्धारित किए गए एपीआई का निर्माण
 - iii.) व्यवसाय प्रबंधन: सुरक्षा और गोपनीयता के नियमानुसार लेन-देन, बिलर का सत्यापन
 - iv.) ग्राहकों की शिकायतों का निराकरण
 - v.) निश्चित अंतराल पर एमआईएस (MIS) और अन्य आवश्यक रिपोर्ट को पूर्व निर्धारित फ़ारमेट में उपलब्ध कराना

भारत बिल भुगतान ऑपरेटिंग यूनिट का आथराइजेशन

बैंक जो बीबीपीएस के स्कोप में आते हैं और बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट (बीबीपीएसओयू) के रूप में काम करने हेतु इच्छुक हैं उन्हें रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से स्वीकृति लेनी होगी। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और नॉन बैंकिंग दोनों तरह की संस्थाओं को बीबीपीसीयू (BBPCU) से कुछ ज़रूरी सर्टिफिकेट भी प्राप्त करने होंगे।

भारत बिल पेमेंट सिस्टम का स्कोप

वर्तमान में इ-कॉमर्स के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान प्रणाली में यह वेब दुनिया मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित है- सेवा प्रदान करने वाले और दूसरा भुगतान का समाधान करने वाले। भुगतान समूह में बैंक और अन्य मध्यवर्ती संस्थाएं कार्यरत होती हैं जो कि भुगतान सुविधाओं को एकीकृत रूप से प्रदान करती हैं।

दूसरी ओर सेवा प्रदत्त करने वाले ऐसी इकाइयों के समूह हैं जो डिजिटल मार्केट में विभिन्न सुविधायें प्रदान करते हैं। इनमें से कई यूनिट भुगतान बिल के निर्धारण में भी समायोजक की भूमिका निभाते हैं। कुछ तो बिल का पेमेंट और सेटलमेंट दोनों ही कार्य स्वयं करते हैं और कुछ पेमेंट का सेटलमेंट भुगतान की सुविधा प्रदान करने वाले विशेषीकृत मर्चेन्ट के माध्यम से भुगतान की सुविधा प्रदान करते हैं।

भारत बिल भुगतान प्रणाली का उद्देश्य हमारे देश में एजेंट के माध्यम से एकीकृत

बिल भुगतान सिस्टम और अंतर प्रचालनीय सुगम बिल भुगतान प्रणाली को कार्यान्वित करना है, जो भुगतान के विभिन्न मोड- इंटरनेट बैंकिंग, एटीएम, क्रेडिट कार्ड आदि को सम्मिलित करे और साथ ही साथ तुरंत बिल के भुगतान की स्वीकृति की पुष्टि भी दे. इसलिए यह निर्धारित किया गया है, कि वर्तमान में ई-कॉमर्स में जो वेंडर बिलों के भुगतान की सुविधा प्रदान कर रहे हैं. उनके साथ अन्य पेमेंट की सुविधा देने वाले को बीबीपीएस में समन्वित किया जाएगा.

भविष्य में बीबीपीएस ऐसे पेमेंट को भी स्वीकार कर सकेगा जिनकी आवृत्ति सुविधा के उपयोग के अनुसार कई बार होती है, जैसे कि स्कूलों/कॉलेजों की फीस का भुगतान, नगर निगम के टैक्स/फीस आदि और अन्य ई-कॉमर्स सुविधाएं जो समयानुसार आरबीआई के द्वारा निर्धारित किया जाएगा.

बीबीपीएस के प्रतिभागी:

बीबीपीएस ऑथराइज्ड यूनिट्स जैसे कि भारत बिल भुगतान केन्द्रीय यूनिट और भारत बिल भुगतान ऑपरेटिंग यूनिट एवं इसके एजेंट्स, पेमेंट गेटवे, बैंक, बिलर और पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर और अन्य इकाइयाँ जो कि आवश्यकतानुसार बीबीपीएस की सहायता करेंगी.

सिस्टम के प्रतियोगियों के लिए योग्यता मानदंड

बीबीपीएस की केन्द्रीय इकाई में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों का कंपनी अधिनियम 1956, सेक्शन 25, के अंतर्गत पंजीकरण अनिवार्य है. साथ ही साथ उनके वरिष्ठ प्रबंधन को क्लियरिंग एवं ट्रांजेक्शन बैंकिंग का अनुभव होना भी अपेक्षित है. एनपीसीआई (NPCI) हमारे देश की एक ऐसी यूनिट है जो इस कसौटी पर खरी उतरती है. अतः एनपीसीआई का चयन बीबीपीएस की केन्द्रीय यूनिट के रूप में किया गया है.

नॉन बैंकिंग कंपनियाँ जो बीबीपीएस की ऑपरेटिंग यूनिट के रूप में कार्य करना चाहती है, उनके मानदंड निम्नवत हैं :-

- 1.) कंपनी पंजीकरण अधिनियम 1956/कंपनी अधिनियम 2013 में पंजीकरण
- 2.) पार्ट के मेमोरेंडम ऑफ एसोसिएसन (MOA) में एक बीबीपीओयू (बीबीपीओयू) के रूप में कार्यान्वित होने के लिए प्रावधान होना चाहिए
- 3.) प्रतिभागी की नेट वर्थ गत वर्ष की आडिटेड बैलेन्स शीट के अनुसार कम से कम 100 करोड़ रुपये होनी चाहिए
- 4.) अगर पार्ट में विदेशी निवेश है तो इसके लिए सक्षम अधिकारी से अनुमोदन लेना अनिवार्य होगा
- 5.) प्रतिभागियों को पेमेंट और सेटलमेंट अधिनियम, 2007- आरबीआई से स्वीकृति प्राप्त करना होगा
- 6.) कंपनी के पास बिल कलेक्शन/सर्विस में अनुभव होना भी अपेक्षित है

इसके अतिरिक्त बैंकिंग कंपनियाँ जो बीबीपीएस के स्कोप में आती हैं परंतु उपर्युक्त कसौटी पर खरी नहीं उतरती उन्हें बीबीपीएस की ऑपरेटिंग इकाई के रूप में कार्य करने हेतु एक वर्ष तक के कार्यकाल में सारे मानदंडों को परिपूर्ण करना होगा या वो पार्टनर के रूप में भी कार्य कर सकते हैं.

सेटलमेंट मॉडल

सेटलमेंट मॉडल किसी भी इंटर-ऑपरेबल सिस्टम का अभिन्न अंग है. बीबीपीएस मॉडल में ऑपरेटिंग यूनिट के एजेंट्स सभी तरह के बिलर के बिल का भुगतान स्वीकार करने के लिए अधिकृत होंगे. सेटलमेंट बैंक में खातों के परिचालन एवं निस्तारण हेतु व्यवस्था, सेटलमेंट की अवधि का निर्धारण बीबीपीएस की सेंट्रल यूनिट ही निर्धारित करेगी. इस सिस्टम में ग्राहक कई माध्यम से बिल का भुगतान कर सकेंगे जिसके फलस्वरूप हर बिल की प्रकृति के अनुसार उसका एक विशेष रियलाइजेशन साइकल और सेटलमेंट पीरियड होगा. बीबीपीएस सेंट्रल यूनिट इन सभी प्रकार के बिल एवं उनके सेटलमेंट नियमों का निर्धारण आरबीआई से अनुमोदन होने के बाद बीबीपीएस के सभी प्रतिभागी उनका अनुपालन करेंगे.

इस प्रकार बिल पेमेंट मॉडल में जिनके आधार पर बीबीपीएस केन्द्रीय यूनिट सेटलमेंट की प्रक्रिया स्थापित करेगी, निम्नवत हैं :-

ऑन-अस (ON -US)- जहाँ बिलर और भुगतान संग्रहित करने वाला एजेंट दोनों एक ही बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट से संबद्ध हों. इन बिलों के भुगतान का सेटलमेंट, भुगतान स्वीकार करने वाली बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट ही करेगी.

हर ऑपरेटिंग यूनिट का एक सुनिश्चित सेटलमेंट बैंक होगा, जहाँ प्रत्येक बिलर और एजेंट का अकाउंट उनके खातों में प्रतिदिन हुए आदान-प्रदान के आधार पर सेटल किया जाएगा. दिन की समाप्ति से पहले हर ऑपरेटिंग यूनिट प्रत्येक एजेंट की नेट स्थिति की फाइल भी सेटलमेंट बैंक को भेजेगी.

इस प्रकार बिलर के खातों में जहाँ प्रतिदिन सेटल हुए बिलों की धन राशि प्रेषित की जाएगी, वहीं एजेंट को प्रति दिन किए गए ट्रांजेक्शन के आधार पर कमीशन प्राप्त होगा.

ऑफ-अस (OFF-US) - जहाँ बिलर और भुगतान संग्रहित करने वाला एजेंट दोनों अलग-अलग बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट से संबन्धित हों. इनके भुगतान का सेटलमेंट का निर्धारण बीबीपीएस सेंट्रलाइज्ड यूनिट करेगी. बीबीपीएस सेंट्रलाइज्ड यूनिट प्रत्येक बिलर के लिए, सेटलमेंट बैंक को अलग अलग पे-आउट निर्देश प्रति बिलर देगी.

इस प्रकार के आदान प्रदान में ऑपरेटिंग यूनिट, बीबीपीएस कंट्रोल यूनिट के द्वारा निर्धारित किए गए नेट सेटलमेंट एमाउंट के आधार पर प्रतिदिन प्रेषित/प्राप्त करेगी. जब कि ऐसे बिलर का भुगतान पेमेंट जिनका भुगतान दूसरे ऑपरेटिंग यूनिट द्वारा संग्रहीत किया गया है, उनका फाइल सेटलमेंट ऑपरेटिंग यूनिट ट्रांजेक्शन का विवरण सेंट्रल यूनिट से मिलने के पश्चात ही निपटान हो पाएगा.

ग्राहक संरक्षण एवं शिकायतों का निष्पादन

बीबीपीएस के अंतर्गत, बीबीपीएस ऑपरेटिंग यूनिट ग्राहक सेवा एवं संरक्षण से संबन्धित सभी नियमों एवं शर्तों को जन साधारण के लिए ग्राह्य शब्दों में त्रैभाषिक (इंग्लिश, हिन्दी और स्थानीय भाषा) में प्रेषित करेगी, जिनमें बिल से संबन्धित फीस और प्रभार का विवरण होगा. इसके साथ में इसमें ग्राहक सेवा टेलीफोन नंबर और वेबसाइट का यूआरएल भी प्रेषित किया जाएगा.

बीबीपीएस को प्रचलित बनाने के ऑन अस और ऑफ अस दोनों ही प्रकार के लेन-देन से जुड़ी शिकायतों के निबटारे के लिए एक ही केन्द्रीय एंड टु एंड (End to End) यूनिट बनाई गयी है. हर शिकायत को एक विशिष्ट नंबर दिया जाएगा. जैसे ही शिकायत पोर्टल पर दाखिल होगी, सिस्टम से सेंट्रल यूनिट और शिकायत से संबन्धित ऑपरेटिंग यूनिट और संबद्ध बिलर को सूचना तुरंत भेजी जाएगी. इसके अतिरिक्त ग्राहकों को शिकायत करने के लिए कोई शुल्क देय नहीं होगा.

भारत बिल पेमेंट सिस्टम नई टेक्नालॉजी का उपयोग करके मर्चेन्ट, अग्रिगेटर और बिलर सभी को एक प्लेटफॉर्म पर समायोजित करके, हमारे देश के विकास की ओर अग्रणी बनाने की दिशा में एक बेहतरीन कदम है.

हम सभी भी हर प्रकार के बिल जैसे फोन, बिजली, पानी और किराए का भुगतान अपनी सुविधानुसार कभी भी पास के ऑपरेटिंग यूनिट के एजेंट के माध्यम से करने के लिए निकट भविष्य में तैयार हैं. तो आइए कदम बढ़ाएँ बीबीपीएस के साथ बिल पेमेंट की ओर, अपनी और देश की उन्नति की ओर.



उन्नति पाण्डेय

आर.सी.सी. क्षे. का. लखनऊ



निवृत्त जीवन से

On 28th February, 2015, Social & Cultural wing of the Retirees' Association, Lucknow (U.P.) Unit organised a camp for Senior Citizens' health check up at Gomti Nagar, Lucknow, with the help of the Charitable Institution 'UMMEED' & Neera Hospital. Large number of our Bank's retirees availed this opportunity and participated in this camp.



स्नेह – निमंत्रण

भारत के संविधान में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रावधान है. इस व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ कुछ मौलिक सिद्धान्त एवं दायित्व भी जुड़े हैं. जाति और समाज अपनी जगह आदरणीय हैं, लेकिन यह समझना आवश्यक है कि कोई भी जाति व समाज देश के हितों, देश के कानून व देश के संविधान के ऊपर नहीं है. राष्ट्र सर्वोपरि है.

इसे बताने की आवश्यकता नहीं है कि देश में लड़का व लड़की के समान अधिकार हैं. इसे बताने की भी आवश्यकता नहीं है कि अंतर जातीय विवाह भी कोई अपराध नहीं है. देश भी अन्तरजातीय विवाह को प्रोत्साहन दे रहा है. यह कल की आवश्यकता भी है. लड़का-लड़की में अन्तर करना तथा रुग्ण मानसिकता एवं दकियानूसी विचारों के वशीभूत होकर अन्तरजातीय विवाहों को न अपनाना तथा उन्हें अपमानित करना न केवल सामाजिक अपराध है अपितु दण्डनीय अपराध भी है. ऐसे में जेल भी जाना पड़ सकता है, जमानत भी मिलनी मुश्किल हो जाती है. न केवल ऐसा कृत्य करने वाला ही दोषी है, अपितु कराने वाला या बिना विरोध के देखने वाला भी बराबर का दोषी है.

दरअसल होता यह है कि कुएँ के मेंढक को उसका सीमित दायरा ही उसको अपना संसार नजर आता है. वह अपनी टर-टर को ही शेर की दहाड़ समझने लगता है. दुनिया बहुत आगे चली गई है. पूरा देश व लगभग आधी दुनिया के भ्रमण से मैंने बहुत कुछ सीखा है और पाया है. अतः आने वाली पीढ़ी को मेरा यह सुझाव है कि ज्यादा से ज्यादा विद्या अर्जित करें.

एक जो नई बात लगी है वह यह है कि विवाह का निमंत्रण पत्र जयपुर जिले की स्पीकिंग भाषा में था. अपने घर की भाषा से प्यार होना अच्छी बात है. आत्मीयता जागती है, बशर्ते की अतिथि इस भाषा को सही से पढ़ सके, समझ सकें. राजस्थान के साथ एक दूसरी समस्या है. इस प्रांत में सैकड़ों भाषाएं बोली जाती हैं. हर जिले की करीब-करीब अलग भाषा है. एक दूसरे की भाषा को पढ़ना व समझना भी कोई आसान काम नहीं है. निमंत्रण पत्र इस युग में एक जनपद तक तो सीमित नहीं रहते. अनेक जिलों, अनेक प्रांतों में भेजे जाते हैं. कई बार तो विदेशी दोस्तों को भी आमंत्रित किया जाता है. ऐसे में हमारा निमंत्रण

पत्र उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर साबित न हो. रिश्तेदारों व मेहमानों को छुट्टी लेने के लिए अपने अधिकारी को निमंत्रण पत्र की एक प्रति भी मुहैया करानी पड़ती है. ऐसे में अगर कार्ड हिन्दी, अंग्रेजी या फिर ऐसी भाषा में हो जो कम से कम एक प्रांत में तो पढ़ी-समझी जा सकती हो. अतिथियों जिन्हें आप आदर से स्नेह निमंत्रण भेज रहे हो, कम से कम उन्हें तो समझने में कष्ट नहीं हो. हर पत्र का यह लक्ष्य होना चाहिए कि पढ़ने वाला उसमें लिखे को समझ सके न कि समझने के लिए भी दूसरे का सहारा लेना पड़े या फिर आपसे टेलिफोन पर उसे समझे. बस कहना इतना है कि हमारा स्नेह निमंत्रण "अन्धा बांटे रेवड़ी फिर - फिर अपने को ही दे" साबित न हो जाय. हमारी प्रसन्नता के साथ-साथ दूसरे सिरे पर भी निमंत्रण पत्र पढ़ने की उतनी ही प्रसन्नता रहे तो फिर सोने पे सुहागा.

एक और बात, मेहमानों का स्वागत करना हमारी परम्परा रही है. बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू आदि का सेवन निजी रूप से कोई अपराध तथा असामाजिक कृत्य नहीं है. परन्तु फिर भी भारत सरकार ने ऐसे मादक पदार्थों के सेवन पर सरकारी स्थानों में प्रतिबंध लगा रखा है. उल्लंघन पर जुर्माना तथा और कड़ी सजा भी हो सकती है. ऐसे उत्पादों पर चेतावनी भी लिखी होती है जैसे "धूम्रपान सेहत के लिए हानिकारक है", "तम्बाकू सेवन से कैंसर हो सकता है" टेलीविजन व पत्र-पत्रिकाओं में भी ऐसी चेतावनियाँ अक्सर छपती हैं, दिखाई जाती हैं. अच्छा तब नहीं लगता जब परिवार के बड़े ही छोटों से ऐसा अपराध करायें. उन्हें ये मादक पदार्थ बाजार से खरीदने तथा उत्सवों में सबको सेवन के लिए अर्पित करने को कहते हैं. बच्चे डर तथा आदर से ऐसा करने पर विवश होते हैं. परन्तु यह सब चीजें क्या शादी जैसे उत्सवों में करना जरूरी है? अतिथियों के लिए क्या दूसरे अहानिकारक पेय उपलब्ध नहीं हैं? मेरे लिखने का तात्पर्य यह है कि उत्सवों में सार्वजनिक रूप से इन नशीले पदार्थों पर प्रतिबंध लगाने के लिए बुजुर्गों को आगे आकर प्रयास करना चाहिए. अपनी पुरानी सोच को सब पर न थोपें. इसमें सबका फायदा है.

एम.सी. राव

(निवृत्त सहायक महाप्रबंधक), जोबनेर, राजस्थान

Answers of banking quiz-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
b	b	b	b	d	d	b	d	b	c	d	d	d	d	d

सफलता की कुँजी

आपका जीवन महान हो इसके लिए आवश्यक है कि आपके पास साहस का भंडार हो। जब आपको यह विश्वास हो जाएगा कि आप ईश्वर के अंश हैं और आपकी शक्ति अनंत है तब अपनी विशालता के कारण बड़े-बड़े काम आपको साधारण जान पड़ेंगे।

आप बड़े बड़े काम कर सकते हैं इसमें कोई संदेह न करें। इसके लिए यह आवश्यक है कि आप अपना ध्येय उंचा उठाकर लगन के साथ बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्य करें। दुनिया के सभी व्यक्तियों ने ईमानदारी और

मेहनत से काम किया है। उन्होंने कार्य के फल को उसके फैलाव से नहीं, उसकी किरम के हिसाब से तोला है।

यदि खुश रहना चाहते हैं तो काम कीजिए। काम से मिलने वाला सबसे बड़ा लाभ है, यह विश्वास कि आपके द्वारा काम ठीक ढंग से किया गया है। अच्छे कार्यों की कमी नहीं है और यदि आपकी काम करने की इच्छा है तो आपके लिए हर अच्छे काम का दरवाजा खुला है।

चाहने मात्र से न अच्छा स्वास्थ्य मिल सकता है न उसे बनाए रखा जा सकता है। स्वास्थ्य से प्राप्त होने वाले सौन्दर्य और शक्ति को समझिये और अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होइए।

अपने जीवन को प्रकृति के नियमों के अनुकूल बनाइए।

अपनी खुशी में दूसरों को हिस्सेदार बनाइए। इस विधि से आपकी खुशी दूनी हो जाएगी।

संसार को कुछ अच्छा बनाने की कोशिश करें। ऐसा करना आपका कर्तव्य है क्योंकि आप इस संसार में है।

कुछ जल्दी-जल्दी करके सफलता प्राप्त करने की कोशिश न कीजिए। जो जल्दी में किया गया है, उसका परिणाम कभी संतोषजनक नहीं होता।

एक बार में एक काम कीजिए। इस प्रकार काम आपके वश में रहेंगे। कार्य करते समय न जल्दी मचाइए, न घबराइए और न चिन्तित हों और परिणाम की प्रतीक्षा कीजिए। आवश्यक और अनावश्यक के अन्तर को समझिए।

अपने उद्देश्य को स्पष्ट समझिए और फिर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होइए।

आप जिस लाभ के लिए कार्य कर रहे हैं, उसकी बात अपने पड़ोसी से कर सकें तभी वह कार्य ठीक कहा जा सकता है।

सोने जाने से पहले अपने से प्रश्न कीजिए - "क्या आज मेरा व्यवहार सबके प्रति मृदु एवं शिष्टतापूर्ण था? आज मैंने किसके साथ अपनी मैत्री के संबंध मजबूत बनाए?"

राम मोहन अग्रवाल
सेवा निवृत्त, मुख्य प्रबंधक

TWINKLE TWINKLE SENIOR STARS !

Body beacons, organ's failure,
Follow physician's acute cure,
Medicine is life-line's saviour
Seniors, health is wealth, dear

Never be lazy to rise early,
Sleep on time, exercise regularly,
Eat full, smart, chew carefully,
No fasting, skipping, meditate daily

Enjoyed hardship, learn to relax,
Cultivate habits, for laughter no tax,
Seniors you are champion of your fate,
Certainly, become captain of soul state

Dr. Ravindra B. Kadam
retd. Manager, Malad, Mumbai

हमारी जीवनशैली और व्यक्तित्व

व्यक्तित्व विकास का सही अर्थ है अपना बाहरी और भीतरी सकारात्मक विकास—वह विकास—जो हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए. प्रत्येक व्यक्ति का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व होता है जो उसे विरासत में मिलता है. विरासत में मिले गुणों को न तो हटाया जा सकता है और न ही पूर्णतया बदला जा सकता है. तथापि इन्हें परिमार्जित अवश्य किया जा सकता है. वस्तुतः वातावरण किसी भी व्यक्ति के व्यवहार पर उद्दीपक का काम करता है. हमारा शरीर तथा मन इन्हीं उद्दीपकों के प्रति प्रतिक्रियायें करता है. हाँ, यह एक विचारणीय बिन्दु हो सकता है कि ये प्रतिक्रियायें अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग ढंग से क्यों करते हैं. इसके पीछे भी जैविक, वातावरणीय और आनुवंशिक कारण हैं. व्यक्तित्व के वे तत्व, जिन्हें परिमार्जित और संशोधित किया जा सकता है, उसमें आत्मविश्वास, संप्रेषण कौशल, ज्ञान-वृद्धि, अपनी रुचियों से संबंधित कौशल को विकसित करना, उचित शिष्टाचार, भाषा-शैली और अनुग्रह के तरीके आदि शामिल हैं. संक्षेप में कुल मिलाकर अपने जीवन में सजीवता और शांति के साथ बहुमुखी सुधार लाना है.

इस विकास की पूरी प्रक्रिया में कुछ परिश्रम, प्रयास और समय लगता है. भले ही सभी आयु एवं सभी समूह के लोगों के व्यक्तित्व विकास के लिए कई क्रेश पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं लेकिन, इसको अपनी दिनचर्या में लागू करने और अपने आप में एक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कुछ समय अवश्य लग जाता है क्योंकि सैद्धांतिकता और व्यवहार्यता—दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू होते हुए भी अलग अलग हैं. सिद्धांत को व्यवहार में उतारने में कुछ परिश्रम और समय लगता है. सही मायने में व्यक्तित्व विकास के लिए कोई पाठ्यक्रम में शामिल होना आवश्यक नहीं है; बल्कि निम्नलिखित प्रयासों से हम अपने व्यक्तित्व की आभा या आकर्षण का विकास कर सकते हैं.

- हम यह लाखों बार सुनते हैं "सकारात्मक सोचें". सचमुच यह कारगर है.
- मुस्कान हमारे व्यक्तित्व का अंकित मूल्य बढ़ाती है और हमारे जीवन में उर्जा लाती है.
- कुछ लेख अखबार में जोर से पढ़ें. यह हमारे संप्रेषण कौशल को धारदार बनाने तथा भाषा के ज्ञान को बढ़ाने में हमारी मदद करेगा.
- टेबल शिष्टाचार, फोन शिष्टाचार और भोजन शिष्टाचार का पालन करें.
- अपने स्वास्थ्य का पूरा खयाल रखें, अच्छे कपड़े और अच्छी तरह से कपड़े पहनें, स्वच्छ और साफ रहें.
- कुछ समय अपनी शक्तियों और कमजोरियों का उल्लेख एक चार्ट पर तैयार करने में लगाना उचित होगा. बाद में इन कमजोरियों का सुधार करने के तरीके खोजें पर अपनी शक्ति को और मजबूत करना मत भूलें.
- कुछ समय अपने आप पर ध्यान केंद्रित जरूर करें.

- ध्यान और योग का अभ्यास करें. यह हमें मन की शांति देगा और यह शांति हमारे व्यक्तित्व में भी प्रतिबिंबित होगी.
- नीरस जीवन ना जियें, रचनात्मक बनें और हर समय कुछ नया करते रहें. रचनात्मक संतुष्टि की खुशी से बड़ा कुछ नहीं.
- व्यक्तित्व विकास अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है क्योंकि यह लोगों को दूसरों पर एक प्रभावी छाप छोड़ने के लिए सक्षम बनाता है. यह सहायता करता है संबंधों को बनाने में और उन्हें प्रगाढ़ करने में, अपने करियर के विकास इत्यादि में.

व्यक्तित्व बस एक उपकरण है जो हमें अपनी क्षमताओं और शक्ति का एहसास कराता है और हमें एक मजबूत, प्रसन्न और हंसमुख व्यक्ति बनने में मदद करता है.

स्पष्ट है, कोई काम करने से पहले उसे जानना बड़ा जरूरी है. यही हमारे अपने व्यक्तित्व के साथ भी होता है. हमें अपनी शक्तियों और कमजोरियों की विश्लेषण करना चाहिए. अपने दोषों को स्वीकार करने से हमें दूर नहीं भागना चाहिए और खुद के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने पर समय लगाना चाहिए.

अपने व्यक्तित्व में सकारात्मकता लाइये : एक आकर्षक व्यक्तित्व के लिए विचारों और कार्यों दोनों को सकारात्मक होना चाहिए. हम जिस तरह से सोचते हैं उसका प्रभाव हमारे कर्मों पर बहुत होता है. और अगर हम एक सकारात्मक विचार रखें तो हमारे मन के अंदर आत्मविश्वास बढ़ेगा जो कि हमारे व्यक्तित्व को सकारात्मक बनाएगा. हमारे जीवन की परिस्थितियों में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, लेकिन जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए हमें चीजों के अच्छे भागों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए एवं सकारात्मक पक्ष को खोजना चाहिए. हर व्यक्ति एक ऐसी खिड़की पर खड़ा है जिसके बाहर ज़मीन पर कूड़ा पड़ा है और आसमान में चाँद चमक रहा है. यह खिड़की में खड़े उस व्यक्ति पर निर्भर करता है



कि वह क्या देखता है. उसे वही दिखता है जो वह देखना चाहता है. नकारात्मक मनोवृत्ति वाला व्यक्ति कूड़ा देखता है और सकारात्मक मनोवृत्ति वाला व्यक्ति चमकते चांद को देखकर आह्लादित होता है.

अपने निर्णय पर अडिग रहें :

अपने निर्णय पर अडिग एवं उसे आत्मविश्वास से आगे रख कर बात करने से आप वार्तालाप को रोचक बना सकते हैं और अपने को अधिक प्रभावशाली और अन्य लोगों में ज्ञानी कहलाने में सक्षम होते हैं. कभी भी अपने तर्क एवं विचार रखने में झिझकें नहीं, भले ही वे अन्य लोगों के साथ न मेल खाते हों. अपने आसपास के बारे में अवगत रहें.

नए लोगों से मिलें:

नए और अलग-अलग प्रकार के लोगों के साथ आपका मेल-जोल आपके क्षितिज का विस्तार करता है. इससे हमें अन्य संस्कृतियों और जीवन शैलियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने का एक मौका मिलता है जिसका काफी सकारात्मक प्रभाव हमारे अपने ही व्यक्तित्व पर पड़ता है.

पढ़ने की नियमित आदत बनाएं और नए शौक का विकास करें

एक आदमी जो बहुत कम शौक रखता है उस आदमी के पास बात करने के लिए बहुत कम होता है. यदि आप अच्छी तरह से चीजों के बारे में सूचित हैं और विभिन्न प्रकार के शौक रखते हैं, तो आप अधिक लोगों की पसंद बन पाते हैं. इस तरह आप सुस्त और नीरस दर्शित होने के बजाय रुचिकर व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते हैं. इस तरह आप नए लोगों से मिलने पर अपना ज्ञान बाँट सकते हैं और उनके ज्ञान से लाभान्वित हो सकते हैं.

एक अच्छा श्रोता होना

ज्यादातर लोग समझने की मंशा के साथ नहीं सुनते; वे उत्तर देने के इरादे के साथ सुनते हैं बल्कि सच यह है कि भले ही अच्छा श्रोता होना आवश्यक प्रतीत नहीं होता किन्तु यह आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम है. जब भी आप किसी से बात करें तो उसकी बात ध्यानपूर्वक सुनें और उनको महत्व दें. आँखों से प्रत्यक्ष संपर्क बनाए रखें और आसपास की चीजों से विचलित न हों. इस प्रकार आप सामने के व्यक्ति को बेहतर जान सकते हैं, एक बेहतर वार्तालाप कर सकते हैं.

हंसमुख बनें



जी हॉ ! यह बहुत ज़रूरी है. हर परिस्थिति में आनंद ढूँढने वाला व्यक्ति हमेशा सराहा जाता है. सब लोग उस व्यक्ति को पसंद करते हैं जो उन्हें हंसने का कारण दिखता है और हर परिस्थिति में अपने दृष्टिकोण से खुश रहने की वजह बनता है. हर वक्त गंभीर और दुखी होना अनिवार्य नहीं है बल्कि खुशमिज़ाज होने से आप अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बना सकते हैं.

विनम्र बनें

विनम्र व्यक्ति हमेशा सराहा जाता है और सम्मानित होता है. इसलिए विनम्र बनें और सब से मुस्कुरा के मिलें. कभी भी साधियों की मदद करने से पीछे ना हटें. उनके काम आयें तब, जब उनको आपकी सब से ज्यादा जरूरत हो. दया एवं यदृष्टिक कृत्यों से आप न सिर्फ किसी का दिन बना सकते हैं बल्कि आप भी एक मनभावन व्यक्ति के रूप में सामने आ सकते हैं. यह आपके आत्मविश्वास को बढ़ावा देगा. हमेशा अपने जूनियर और सीनियर से विनम्रता से बात करें.

शारीरिक भाषा समझें

शारीरिक भाषा मौखिक संप्रेषण कौशल की तरह आपके व्यक्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. यह आप के बारे में बहुत कुछ बताती है और लोगों को आप के बारे में सटीक राय बनाने में मदद करती है. आप जिस तरह चलते हैं, बैठते हैं, बात करते हैं और खाना खाते हैं सब कुछ आप के आसपास के लोगों पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं. सही शारीरिक भाषा लोगों पर आपकी अच्छी छाप छोड़ती है. कंधे सीधे कर के चलें और सीधे बैठें. आराम से बैठें और हमेशा आँखों से संपर्क करते हुए बात करें.

अपनी पोशाक पर ध्यान दें.

समाज में हमारी पोशाक अन्य नागरिकों पर हमारी छाप छोड़ने में अहम् भूमिका निभाती है. यह हमारे आंतरिक व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती है और लोगों को हमारे बारे में राय बनाने में मदद करती है. सही पोशाक न केवल हमारा आत्मविश्वास बढ़ाती है बल्कि हमें आकर्षक भी बनाती है. इसलिए अपने आसपास के वातावरण, स्थान, अवसर आदि के अनुरूप सभ्य तरीके के वेश भूषा धारण करें. कार्यालय तथा सामाजिक कार्यक्रमों के लिए भिन्न प्रकार का पहनावा होना चाहिए.

खुद पर भरोसा रखें

हालाँकि आप हमेशा दूसरों से प्रेरणा ले सकते हैं लेकिन फिर भी स्वयं को विशेष बनाएँ. प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग गुण धर्म तथा कमियाँ होती हैं जो उसे सब से अलग बनाती हैं. इसलिए किसी और की तरह बनने से हम कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते. हमारी कोशिश कभी भी दूसरों के अनुरूप ढलने की न होकर स्वयं को भीड़ से अलग दिखाने की होनी चाहिए. यह महत्वपूर्ण है कि हमें सभी से आगे और विशिष्ट दिखना चाहिए लेकिन इस प्रयास में हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं हमारे प्रयास भोंडे न लग रहे हों. स्वयं पर विश्वास बनाए रखें. प्रेरक रचनाएँ पढ़ें. इस से आपके चारों तरफ सकारात्मक उर्जा रहेगी और आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा. अपने डर पर विजय प्राप्त करें और मेहनती बनें क्योंकि अद्भुत और पर्याप्त मात्रा में आत्मविश्वास आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाता है.



विशाल दीप थापा
पुछ शाखा, क्षे.का. जालंधर

बधाई



कुमार बी. अभिनव, सुपुत्र श्री बी. एस. एस. साईबाबा, सहायक प्रबंधक, क्षे.का, विजयवाड़ा ने उस्मानिया यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित बीटेक (बायो टेक्नालॉजी) परीक्षा 79.80% अंकों के साथ पहली श्रेणी डिस्टिंक्शन में उत्तीर्ण की



कुमारी के. रुप अखिला, सुपुत्री श्रीमती के.वी. यशोदा देवी, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षे.का., विजयवाड़ा को इंटरमीडियेट परीक्षा में जिला स्तर पर पहला रैंक प्राप्त करने के लिए आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा 'मुख्य मंत्री प्रतिभा पुरस्कार', जिसमें रु.20,000/- की नकद राशि के साथ साथ मेडल और प्रमाण पत्र भी शामिल हैं, से सम्मानित किया गया.



चि. एन.बी.एस. गीतिका, सुपुत्री श्रीमती एन.वी.एन.आर. अन्नपूर्णा, आशुलिपिक, क्षे.का., विजयवाड़ा ने लोकप्रिय ई टीवी तेलुगू चैनल पर प्रसारित होने वाले जनरंजक "पॉडुता तीयगा" कार्यक्रम के मेगा फाइनल्स में पहुंचकर तीसरा स्थान अर्जित किया. पुरस्कार स्वरूप उन्हें रु.50,000/- का चेक प्रदान करते हुए ई टीवी के सीवीओ श्री बापिनियुडु; प्रमुख संगीत दर्शक श्री मणि शर्मा और साथ में खडे हैं प्रमुख गायक डॉ. एस.पी. बालसुब्रह्मण्यम.



डॉ टी. मौनिका, सुपुत्री श्री टी. गोपिस्वामी, शाखा प्रबंधक, पेदकूरपाडू शाखा और श्रीमती टी. राधिका, प्रबंधक, लक्ष्मीपुरम शाखा ने एम बी बी एस डिग्री में 68.4% अंकों के साथ पहली श्रेणी के साथ-साथ 'फॉरेन्सिक मेडिसिन' और 'जनरल मेडिसिन' में दो गोल्ड मेडल भी अर्जित किये.



कुमार हिमांशु, सुपुत्र श्री गजेंद्र सिंह, स्टाफ, रमईपुर शाखा ने सीबीएसई बोर्ड की दसवीं कक्षा की परीक्षा 8.8 सीजीपीए के साथ



उत्तीर्ण की.
कुमारी टी. दीपिका, सुपुत्री श्री टी. गोपिस्वामी, शाखा प्रबंधक, पेदकूरपाडू शाखा और श्रीमती टी. राधिका, प्रबंधक, लक्ष्मीपुरम शाखा ने बीटेक डिग्री (इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्यूनिकेशन इंजीनियरिंग) परीक्षा 72.27% अंकों के साथ पहली श्रेणी डिस्टिंक्शन के साथ उत्तीर्ण की.



कुमारी सास्वती, सुपुत्री श्री बी. बी. राय, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा ने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से हिंदुस्तानी संगीत में "सीनियर डिप्लोमा परीक्षा " प्रथम श्रेणी में डिस्टिंक्शन के साथ उत्तीर्ण की.



डॉ. पंचश्री, सुपुत्री श्री विजय कुडतरकर, सहायक प्रबंधक, सीएमएस शाखा, मुंबई ने महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ सायन्सेस, नासिक द्वारा आयोजित बॅचलर ऑफ फीजिओथेरेपी की परीक्षा में 69.50% अंक प्राप्त किये.



श्री विदित, सुपुत्र श्री बिपिन कुमार अग्रवाल, सीटीओ, रिसाली शाखा, रायपुर ने एन.आई.टी., रायपुर से बी.टेक. (मेटलर्जी) की परीक्षा में ओवरऑल टॉप करते हुए गोल्ड मेडल अर्जित किया. उन्होंने हाल ही में सेल, भिलाई स्टील प्लांट, भिलाई में एम.टी.टी. के बतौर कार्यभार ग्रहण किया है.



कुमार अनूप, सुपुत्र श्री ए.बी. पट्टनायक, वरिष्ठ प्रबंधक, जेड.ए.ओ., वाराणसी ने आई आई टी जेईई (एडवांस) 2014 परीक्षा में 1076 रैंक हासिल करते हुए आई आई टी, मुंबई में बी.टेक. (केमिकल) हेतु प्रवेश प्राप्त कर लिया है. उन्हें किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना के तहत फेलोशिप अवार्ड भी प्राप्त हुआ है.



कुमारी तन्वी, सुपुत्री श्रीमती चारुशीला पाडगांवकर, मुख्य प्रबंधक, भायखला शाखा, मुंबई को महाराष्ट्र राज्य परीक्षा परिषद द्वारा पूर्व माध्यमिक शाला शिष्यवृत्ति से सम्मानित किया गया है.



कुमार असीम, सुपुत्र श्री ए.बी. पट्टनायक, वरिष्ठ प्रबंधक, जेड.ए.ओ., वाराणसी ने बीआईटीएस, पिलानी द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए बिट्स पिलानी, पिलानी कॉम्प्लेक्स, राजस्थान में एम.एससी. (इकॉनॉमिक्स) + बी.टेक. (इलेक्ट्रिकल) इंटीग्रेटेड कोर्स हेतु प्रवेश प्राप्त कर लिया है.



शुश्री अवनि, सुपुत्री श्री संतोष श्रीवास्तव, एसटीसी, भोपाल को भारत की प्रतिष्ठित मैगजिन 'प्रतियोगिता दर्पण' द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर 'भारत के सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं राजनैतिक ढाँचे में स्मार्ट शहरों की उपादेयता' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत किया गया है.



कुमार प्रवल, सुपुत्र श्री बी.आर. प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, नवी पेट शाखा, तेलंगना को डीएवी पब्लिक स्कूल, सफिलगुडा, हैदराबाद द्वारा वर्ष 2014-15 के लिए 'बेस्ट इन्स्ट्रुमेंटलिस्ट' अवार्ड से सम्मानित किया गया.



श्री पंकज, सुपुत्र श्री राम अवतार त्यागी, दफ्तरी, रोहिणी सेक्टर 16 शाखा, दिल्ली ने दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्जित किया.



The ace swimmer **KUSHAL** S/o. Shri G. Gurudatt, Sr. Mgr., Staff College, Bangaluru is a boy with Down's Syndrome, who qualified for the World Summer Games 2015 to be held in Los Angeles in July-August 2015.



जीत तक जारी जंग

बाज (Eagle) लगभग 60 – 70 वर्ष जीता है, परन्तु अपने जीवन के मध्य में आते-आते उसे एक महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ता है. उस अवस्था में उसके शरीर के कुछ प्रमुख अंग निष्प्रभावी होने लगते हैं-

1. पंजे लम्बे और लचीले हो जाते हैं व शिकार पर पकड़ बनाने में अक्षम होने लगते हैं.
2. चोंच आगे की ओर मुड़ जाती है और भोजन निकालने में व्यवधान उत्पन्न करने लगती है.
3. पंख भारी हो जाते हैं, और सीने से चिपकने के कारण पूरे खुल नहीं पाते हैं, उड़ानें सीमित कर देते हैं.

और जिसकी वजह से वह "भोजन ढूँढना, भोजन पकड़ना, और भोजन खाना...." आदि प्रक्रियाओं में अपनी पकड़ धीर-धीरे खोने लगता है.

उसके पास तीन ही विकल्प बचते हैं, या तो देह त्याग दे, या अपनी प्रवृत्ति छोड़ गिद्ध की तरह त्यक्त भोजन पर निर्वाह करे... या फिर स्वयं को पुनर्स्थापित करे, आकाश के निर्द्वन्द्व एकाधिपति के रूप में.

जहाँ पहले दो विकल्प सरल और त्वरित हैं, वहीं तीसरा अत्यन्त पीड़ादायी और लम्बा. बाज चुनौती पूर्ण पीड़ा को चुनता है और स्वयं को पुनर्स्थापित करता है.

वह किसी ऊँचे पहाड़ पर जाता है, एकान्त में अपना घोंसला बनाता है, और तब प्रारम्भ करता है अपने जीर्णोधार की पूरी प्रक्रिया.

सबसे पहले वह अपनी चोंच चट्टान पर मार मार कर तोड़ देता है..! अपनी चोंच तोड़ने से अधिक पीड़ादायक कुछ भी नहीं पक्षीराज के लिये. तब वह प्रतीक्षा करता है, चोंच के पुनः उग आने की.

उसके बाद वह अपने पंजे भी उसी प्रकार तोड़ देता है और प्रतीक्षा करता है, पंजों के पुनः उग आने की. नई चोंच और पंजे आने के बाद वह अपने भारी पंखों को एक-एक कर नोंच कर निकालता है और प्रतीक्षा करता है पंखों के पुनः उग आने की.

और फिर कई दिन या यूं कहें कुछ महीनों की पीड़ा और प्रतीक्षा के बाद उसे मिलती है वही पहले जैसी भव्य और ऊँची उड़ान,

इस पुनर्स्थापना के बाद वह अनेकों साल और जीता है, लगभग वही पुरानी ऊर्जा, सम्मान और गरिमा के साथ.

प्रकृति हमें सिखाने बैठी है- पंजे पकड़ के प्रतीक हैं, चोंच सक्रियता की और पंख कल्पना को इंगित करते हैं.

इच्छा परिस्थितियों पर नियन्त्रण बनाये रखने की, सक्रियता स्वयं के अस्तित्व की गरिमा बनाये रखने की, कल्पना जीवन में कुछ नयापन बनाये रखने की.

इच्छा, सक्रियता और कल्पना ... तीनों के तीनों निर्बल पड़ने लगते हैं.. हममें भी चालीस-पचास तक आते-आते हमारा व्यक्तित्व ही ढीला पड़ने लगता है, अर्धजीवन में ही जीवन समाप्तप्रायः सा लगने लगता है, उत्साह, आकांक्षा, ऊर्जा सब अधोगामी हो जाते हैं.

हमारे पास भी कई विकल्प होते हैं- कुछ सरल और त्वरित! और कुछ पीड़ादायी एवं अंत्यत पीड़ादायी भी!! हमें भी अपने जीवन के विवशता भरे अति-लचीलेपन को त्याग कर नियन्त्रण दिखाना होगा, विल्कुल बाज के पंजों की तरह.

हमें भी आलस्य उत्पन्न करने वाली वक्र मानसिकता को त्याग कर ऊर्जास्वित सक्रियता दिखानी होगी- "बाज की चोंच की तरह."

हमें भी भूतकाल में जकड़े अस्तित्व के भारीपन को त्याग कर कल्पना की उन्मुक्त उड़ाने भरनी होंगी- "बाज के पंखों की तरह."

अगर कुछ दिन न सही तो कम से कम एक माह ही बिताया जाये, स्वयं को पुनर्स्थापित करने में. जो शरीर और मन से चिपका हुआ है, उसे तोड़ने और नोंचने में पीड़ा तो होगी ही, बाज तब उड़ानें भरने को तैयार होंगे, इस बार उड़ानें और ऊँची होंगी, अनुभवी होंगी, अनन्तगामी होंगी....!

निमाई कुमार ठाकुर
बीवीके अयंगार रोड शाखा, बेंगलुरु

खेल जगत से... Sportingly Yours



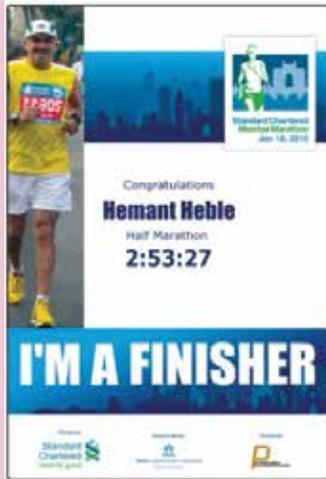
हमारी एस.एस.आई.वजीरपुर शाखा के प्रबंधक श्री अशोक कुमार सिद्धु ने दिल्ली में आयोजित 'एयरटेल दिल्ली हाफ मैराथन' प्रतियोगिता 2 घंटा 3 मिनट 37 सेकेंड में पूरी करते हुए कुल 7198 धावक प्रतिभागियों के मध्य 2012 रैंक प्राप्त किया. पुरुष संवर्ग में कुल 6493 धावकों में 1931 रैंक प्राप्त किया.



बैंकर्स स्पोर्ट्स काउंसिल, नागपुर द्वारा आयोजित अंतर बैंक क्रिकेट टूर्नामेंट में अक्सिस बैंक को हराकर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर की टीम ने अंतर बैंक 'बी' डिविजन क्रिकेट टूर्नामेंट जीत ली है. विजेता टीम के साथ क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी के सूद तथा मुख्य प्रबंधक श्री नरेन्द्र भाजीखाये.



लखनऊ में खेल एवं सांस्कृतिक क्लब की ओर से वार्षिक प्रतियोगिताओं के उपरांत पुरस्कार वितरण समारोह सांस्कृतिक संध्या के साथ आयोजित किया गया. विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए अंचल प्रमुख श्री एल. डी. रेवतकर.



हमारे सीपी एण्ड एमएसएमई विभाग, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई के सहायक प्रबंधक श्री हेमंत पी. हेबले ने 18.01.2015 को मुंबई में आयोजित 'स्टैंडर्ड चार्टर्ड मुंबई मैराथन' प्रतियोगिता में हिस्सा लेते

हुए हाफ मैराथन (21.097 कि.मी.) 2 घंटा 53 मिनटों में पूरी की. साथ ही उन्होंने 'हरियाणा वेटेन एथलेटिक असोसिएशन' द्वारा 19 से 22 मार्च 2015 तक रोहतक, हरियाणा में आयोजित 35वें नेशनल मास्टर्स एथलेटिक चैम्पियनशिप 2015 में हिस्सा लेते हुए 4 x 100 मीटर्स रिले की '55+ आयु - पुरुष' श्रेणी में गोल्ड मेडल प्राप्त किया. अक्टूबर 2015 में ऑडिलेड, ऑस्ट्रेलिया में होने वाले 'ऑस्ट्रेलिया मास्टर्स गेम्स' में हिस्सा लेने वाली इंडिया मास्टर्स एथलेटिक टीम में उनका चयन हुआ है.



8 मार्च, 2015 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में अंग्रेजी दैनिक समाचारपत्र 'डीएनए' द्वारा मुंबई में आयोजित तथा हमारे बैंक द्वारा प्रायोजित 'हाफ मैराथन' प्रतियोगिता में सुश्री राजश्री बगलारी, सहायक महाप्रबंधक, एसीएनआईडी, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई के नेतृत्व में सहभागी महिला सदस्यों की टीम.

हमारी लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स अंधेरी शाखा, मुंबई के श्री ओ.पी.के. जोशुआने 'हरियाणा वेटेन एथलेटिक असोसिएशन' द्वारा 19 से 22 मार्च 2015 तक रोहतक, हरियाणा में आयोजित 35वें नेशनल मास्टर्स एथलेटिक चैम्पियनशिप 2015 में हिस्सा लेते हुए भाला फेंक की '55+ आयु - पुरुष' श्रेणी में गोल्ड मेडल प्राप्त किया. अक्टूबर 2015 में ऑडिलेड, ऑस्ट्रेलिया में होने वाले 'ऑस्ट्रेलिया मास्टर्स गेम्स' में हिस्सा लेने वाली इंडिया मास्टर्स एथलेटिक टीम में उनका चयन हुआ है.

हमें गर्व है



श्री संतोष श्रीवास्तव, स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल के तत्वावधान में केनरा बैंक द्वारा आयोजित लघु कहानी प्रतियोगिता में विजेता होने पर दिनांक 17.03.2015 को बैंक नराकास द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया.



हमारी सी आर सी ई, हिसार शाखा, चंडीगढ़ में कार्यरत SWO-A ने शाखा के ग्राहक 'विद्या भर्ती पब्लिक स्कूल' द्वारा भूलवश ₹ 9,000/- की अधिक जमा कर दी गई राशि को अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए ग्राहक को लौटा दी.



हमारी खानपुर शाखा, अहमदाबाद के सुरक्षा प्रहरी श्री निशान सिंह बगियाना ने शाखा के लॉकर रूम में ग्राहक द्वारा भूलवश छोड़े गये बहुमूल्य जेवरात शाखा प्रबंधक के पास जमा किये.



हमारी नेरल शाखा, के सशस्त्र प्रहरी श्री आंत पी. पाटील ने अपने काम में जागरूकता दिखाते हुए सतर्कता से दिनांक 12.01.2015 को शाखा में चोरी करो के इरादे से आए दो संदिग्ध व्यक्तियों को पकड कर बहादुरी का प्रदर्शन किया.



हमारी राजकोट मुख्य शाखा के विपणन सहायक श्री विजय पारेख ने समय-समय पर हमारे बैंक की कई शाखाओं के लिए विभिन्न संस्थानों की करोड़ों रुपयों की एफडीआर रसीदों के साथ जमा राशि संग्रहण किया साथ ही अनेक चालू खाते भी खुलवाये.



कथादेश और सनुनोस के सहयोगी उपक्रम द्वारा आयोजित 'रहस्य-कल्पना कथा प्रतियोगिता 2014-15' में हमारे स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र के वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रतिभू

बॅनर्जी की कथा 'वास्को डि गामा गली' तथा राऊरकेला शाखा, ओडिशा की अधिकारी श्रीमती निवेदिता जेना की कथा 'बिसात पर सजी मोहरें' को अंग्रेजी और फ्रेंच में अनुवाद और संकलन के लिये चुना गया है तथा पुरस्कार स्वरूप उन्हें रु. 25,000/ की नकद राशि भी दी गयी है.



हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ के मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा) श्री एम.पी.एस. चौहान की पत्नी डॉ. कुमकुम धर चौहान, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कथक नृत्यांगना है, को

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा 'यश भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

हमारी छेहर्टा रोड शाखा के शाखा प्रबंधक श्री आर.के. भगत को उनके बैंकिंग विभाग में उत्कृष्ट कार्य हेतु अमृतसर के जिला



प्रशासन द्वारा सराहना पुरस्कार से सम्मानित किया गया. एक समारोह में श्री भगत अपना पुरस्कार माननीय कैबिनेट मंत्री (लोकल बाँडी), मेडिकल एज्युकेशन एण्ड रिसर्च, पंजाब सरकार श्री अनिल जोशी से प्राप्त करते हुए. साथ हैं श्री जतिंदर अवलख (आईपीएस), कमिशनर ऑफ पुलिस, अमृतसर और श्री रवि भगत (आईपीएस), डिप्टी कमिशनर ऑफ पुलिस.



हमारी अँवेन्यू रोड शाखा, बँगलुरु के व्यक्तिगत वाहन चालक श्री बसवराजू ने अपने अथक प्रयासों से बीएसबीडीए के तहत 840 खाते खुलवाए. उनकी इस उपलब्धि हेतु उन्हें 26.01.2015 को आयोजित एक समारोह में स्थानिक कार्पोरेटर द्वारा सम्मानित भी किया गया.



दिनांक 26-01-2015 को एसपीएसआर नेल्लूर जिला कलक्टर द्वारा गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय, नेल्लूर को नेल्लूर जिले में सरकारी योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन की सराहना करते हुए प्रशस्ति पत्र तथा ट्राफी प्रदान की गई. जिला कलक्टर श्रीमती एम. जानकी महोदया के हाथों से प्रशस्ति पत्र तथा ट्राफी ग्रहण करते हुए हमारे क्षेत्रीय कार्यालय नेल्लूर के मुख्य प्रबन्धक श्री वी षण्मुगम.

MOTIVATION :

WHY, WHERE & HOW

The first thing that we need to understand is What is Motivation ? It is the inner power that pushes us towards taking action and towards achievement. It is powered by desire and ambition, and therefore, if they are absent "Motivation" is absent too.

Sometimes, we might have the desire to get something done, or to achieve a certain goal, but if the desire and ambition are not strong enough, we lack the push, the initiative, and the willingness to take –necessary action. In these cases, we basically lack Motivation and inner drive.

Why do we need Motivation?

For – success in any field we need to set our GOALS. If we do not set our Goals, it is very difficult to achieve any outcome and we may have defined our goals, worked out a strategy too, but if we do not have MOTIVATION, we will not even take the first step. It is like owning the world's best car with all the parts working perfectly, the car has the capabilities to go fast with the greatest fuel efficiency. But if – we –have no driver –or if the driver does not ignite the car and start it, the car does not even move. Motivation is like that spark for the engine, this is what makes the human engine move. We may have the best talents or may have acquired the best skills but if you do not have motivation we will not reach far. Motivation is the driver which drives us to do what we are doing.

- When there is motivation, there is initiative and direction, courage, energy, and the persistence to follow our goals.
- Motivation awakens inner strength and power, and pushes us forward, towards making our vision a reality. Motivation becomes strong when we have a vision, a clear mental image of what we want to achieve and also a strong desire to manifest it.
- A motivated person takes action and does whatever it needs to achieve his or her goals.
- Motivation is one of the most important keys to success. When there is lack of motivation, we either get no results, or only mediocre ones, while, when there is motivation, we attain greater and better results and achievements.
- Motivation is present whenever there is a clear vision,

precise knowledge of what you want to do, a strong desire, and faith in your abilities.

- A motivated person is a happy person, more energetic, and sees the positive end result in his or her mind.

Where do we need Motivation?

Motivation can be applied to every action and goal. There can be motivation to study a foreign language, to get good grades at school, bake a cake, write a poem, take a walk every day, make more money, get a better job, buy a new house, own a business, or become a writer, a doctor or a lawyer. It is required at every level where we want to achieve some goal. When we talk about motivation in schools, we are talking about whether students are motivated to learn. When we talk about motivation at work, we are talking about whether the employees are motivated enough to perform their duties keeping in mind the set goals and desired output. Various studies have found that jobs with more motivational features have lower effort requirements, a better well-being, and fewer health complaints. The studies have showed that Motivation is directly linked to satisfaction or dissatisfaction of a worker at the work environment which means if a worker is satisfied at his work then he is highly motivated to work and achieve the goals. If a worker is motivated then it increases his effort which leads to better performance. These studies clearly show how important it is to have a good motivation factor at the place of our work and learning. Another theory is based on the idea that each of us has three fundamental needs:

- The need for achievement.
- The need for affiliation.
- The need for power(authority)

All those places where a person requires these needs to be fulfilled demand a proper motivation along with good motivating factors.

How to Improve or Strengthen Motivation?

It is not always easy to stay motivated. We might start out

strong but somewhere along the way we may falter. There are three main reasons why people tend to lose motivation from time to time which are also known as “ Motivation Killers”. These are:

- Lack of Confidence.
- Lack of Focus.
- Lack of direction.

It is very important for an individual to address these basic issues first in order to stay motivated.

Motivation has much to do with the emotions and the imagination, which means that if we want to increase it, we have to work on our feelings and imagination.

There are many other ways by which we can improve it at the personal as well as at the professional level. Some of them are as follows:

- Set a goal. If we have a major goal, it would be a good idea if we split it into several minor goals, each small goal leading to our major goal.

By dividing our goal into several smaller goals, we will find it easier to motivate ourselves since we will not feel overwhelmed by the size of our goal and the things we have to do. This will also help us feel that the goal is more feasible, and easier to accomplish.

- Understand that finishing what we start is important. Hammer into our mind that whatever we start we have to finish. We should develop the habit of going to the finish line.
- Socialize with achievers and people with similar interests or goals, since motivation and positive attitude are contagious. Associate with motivated people, who share your interests.
- We should never procrastinate (delay or postpone) anything. Procrastination leads to laziness, and laziness leads to lack of motivation.
- Persistence, patience and not giving up, despite failure and difficulties, we should keep the flame of motivation burning.
- We should read about the subjects of our interest. This will keep our enthusiasm and ambition alive.
- We should constantly affirm to ourselves that we can,

and will succeed as Self – Motivation is the best form of motivation.

- Look at photos of things we want to get, achieve or do. This will strengthen our desire and make our subconscious mind work with us.
- On organisational level there should be proper rewards for hard working employees that will instil a feeling of achieving new targets and will keep them motivated.
- We should visualize our goals as achieved, adding a feeling of happiness and joy.

“Motivation is like an accelerator in a vehicle. A vehicle keeps moving at the pace decided by its accelerator. The moment the accelerator is reduced, the vehicle’s speed reduces and it may come to a standstill if there is no further acceleration; similarly a person comes to a standstill if he lacks motivation.....”

Vikash Kumar
Sector 40 C.
R.O., Chandigarh

Statement about Ownership and Other Particulars concerning “Union Dhara”

Form IV (See Rule-8)

1. Place of Publication:

Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.

2. Periodicity of Publication: Quarterly.

3. Editor, Publisher and Printer’s name, nationality and address:

Mrs. Savita Sharma, Indian, Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.

4. Name and addresses of Individuals who own the newspaper:

Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.

I, Mrs. Savita Sharma, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Mrs. Savita Sharma

Signature of Publisher

March, 2015.

Customer Service



अपने देहरादून दौरे के दौरान दिनांक 22.02.2015 को आयोजित ग्राहक गोष्ठी में उपस्थित सम्माननीय ग्राहकों को संबोधित करते हुए श्री के. सुब्रह्मण्यम, कार्यपालक निदेशक; साथ मंचासीन हैं श्री शिशिर चंद्रा, क्षेत्र प्रमुख, देहरादून.



ओडिशा में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान श्री के. सुब्रह्मण्यम, कार्यपालक निदेशक द्वारा कारोबार प्रतिनिधियों से संवाद किया गया एवं प्रधानमंत्री जन-धन योजनांतर्गत खातों के खाता धारकों को रुपये-डेबिट कार्ड / पासबुक का वितरण किया गया.



यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के सौजन्य से तथा इंडियन स्कूल ऑफ माइक्रो फाइनेंस फॉर वुमेन के सहयोग से अग्रणी जिला जौनपुर के जलालपुर गाँव में प्रधान मंत्री जन-धन योजना के तहत सघन वित्तीय साक्षरता जागरूकता शिविर में संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री मनोज सिन्हा रेल राज्यमंत्री, भारत सरकार एवं मंच पर बाएँ से विराजमान श्री आर. के. जागलान, उप महाप्रबंधक, श्री ए. के. दीक्षित, महाप्रबंधक, यूनियन बैंक, वाराणसी अंचल, श्री के पी सिंह, सांसद, जौनपुर, श्री के. सुब्रह्मण्यम, कार्यपालक निदेशक, यूनियन बैंक, एवं अन्य अतिथिगण.

Let us play

BANKING CROSS-WORD-NO-102



Terms and conditions

1. The cross word is related with Banking terminology.
2. First come, first get will be applied.
3. Name and photograph of the (first) winner will be published in next issue .
4. One staff can send only one entry (Carrying Name, PF number, designation and place of posting).
5. In case of more than one entries from the same staff, the first one will be accepted.

Editor, Union Dhara, 11th Floor Central Office, Mumbai.

E-Mail :

savita.sharma@unionbankofindia.com / uniondhara@unionbankofindia.com

नये कदम



दिनांक 3.3.2015 को श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के कर कमलों से क्षेत्रीय कार्यालय महेसाणा के नवीन परिसर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ. दीप प्रज्वलन करते हुए श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय



The 69th branch in Patna Region – Boring Canal Road was inaugurated by our CMD, Shri Arun Tiwari on 17.01.2015.



दिनांक 21.01.2015 को अपने बड़ौदा दौरे के दौरान बड़ौदा क्षेत्र की निजामपुरा शाखा में स्थापित सिंगल नोट एक्सेप्टर मशीन का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; साथ मंचासीन हैं श्री निशीष मोबार, उप महाप्रबंधक, क्षे.का., बड़ौदा तथा श्री एच.एल. रावल, महाप्रबंधक, क्षे.म.प्र.का., अहमदाबाद.



बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी द्वारा दिनांक 07.02.2014 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगाम के नए परिसर का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर उनके साथ क्षेत्र महाप्रबंधक (दायें) श्री आर.एस.पांडेय और क्षेत्र प्रमुख व उप महाप्रबंधक (बाएँ) श्री वी.एच.कामत.



photographs of UBI BCA outlet which has been inaugurated by Hon. CMD of Union Bank Of India.



Our Industrial Finance Branch, Hyderabad was inaugurated by our bank's worthy Executive Director Shri K. Subrahmanyam. from left: Shri K. Subrahmanyam, Executive Director Shri T.S. Swamy, Regional Head, Hyderabad & Smt. Mangala Radhakrishna Prabhu, General Manager of the Bank.

कार्टून कोना



आयोजन और उत्सव



On 20.03.2015, during his visit to Chandigarh, Shri Arun Tiwari, CMD inaugurated the refurbished premises of Sector 7 C Branch, Chandigarh.



अंचलीय कार्यालय, भोपाल द्वारा बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल के तत्वावधान में दिनांक 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर अंतर बैंक हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेन्ट्रल बैंक के जी.एम.एवं बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के अध्यक्ष श्री उमेश सिंह एवं विशिष्ट अतिथि बैंक ऑफ बड़ौदा के जी.एम. श्री नागेश श्रीवास्तव तथा पंजाब नेशनल बैंक के सर्किल हेड श्री जुत्शी जी उपस्थित हुये.



के.जी. एस. जी बैंक द्वारा राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी वित्त व विकास निगम लि. की योजनाओं हेतु आयोजित जागरूकता व वृहद ऋण शिविर में दीप प्रज्वलन करते हुए बैंक अध्यक्ष श्री भोला प्रसाद. उनके साथ हैं केन्द्रीय राज्यमंत्री सामाजिक न्याय एवम अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली, माननीय श्री विजय सांपला.



The Financial Literacy Camp held for Women at Jayapur Village, Varanasi was attended by Smt Shyamala Gopinath as Chief Guest. Shri A. K. Dixit, Regional Head Varansi and Shri A K Jaglan. DGM were also present on the occasion.



दिनांक 17.03.2015 को विश्व सामाजिक कार्य दिवस तथा यूनेस्को के 70 वर्ष पूरे होने के अवसर पर पंजाब राजभवन में एसोसियेशन ऑफ प्रोफेशनल सोशल वर्कर्स एवं डेवलपमेंट प्रैक्टिशनर (APSWDP) चंडीगढ़, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ के संयुक्त प्रयास से एक विशेष आवरण लिफाफा माननीय राज्यपाल श्री कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा जारी किया गया. बाएँ से श्री विवेक त्रिवेदी, संस्थापक APSWDP; श्री केशव बैजल, उ. म.प्र., क्षे का चंडीगढ़; श्री आनंद ए शिराली, ए डी सी (एम); मध्य में श्री कप्तान सिंह सोलंकी, राज्यपाल, पंजाब व हरियाणा; डॉ. डी. बी. नेगी - क्षेत्र निदेशक, IGNOU; श्रीमती अचला भटनागर- पोस्ट मास्टर जनरल, पंजाब; श्रीमती मनीषा बंसल बादल - निदेशक, पोस्टल सेवाएं (HQ) ; डॉ. मोनिका सिंह- सहायक प्रोफेसर, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़



दिनांक 25.01.2015 को कानपुर में आल इंडिया यूनियन बैंक एससी/एसटी इम्प्लाईज एसोसिएशन की प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक आयोजित की गई थी. उक्त बैठक के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री एल. डी. रेवतकर, महाप्रबंधक (लखनऊ अंचल) एवं विशेष अतिथि श्री वी. के. जैन, उप महाप्रबंधक/क्षेत्र प्रमुख, कानपुर थे.



स्टाफ सदस्यों के होनहार बच्चों को, जिन्होंने कक्षा दसवीं, बारहवीं के साथ-साथ डिप्लोमा एवं डिग्री परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन किया, "दी यूनियन बैंक ऑफ इंडिया एम्प्लॉईज को-ऑप. क्रेडिट सोसायटी लिमिटेड, मुंबई" द्वारा सम्मानित किया गया. इस अवसर पर बैंक के का. नि. द्रय श्री राकेश सेठी तथा श्री के. सुब्रह्मण्यम के साथ-साथ श्री अरविंद दुधवाडकर, बीईएसटी; म.प्र. श्री अनिल मित्तल, एवं श्रीमती रेखा नायक; उ. म. प्र. श्री आर.आर. मोहनती, एवं श्री राजू वायकुळ; क्रेडिट सोसायटी के अध्यक्ष श्री संजय माळकर एवं अन्य मान्यवर उपस्थित थे.



दिनांक 13.02.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर के अंतर्गत कुकस शाखा के द्वारा आयोजित किसान ऋण मेले में मुख्य अतिथि क्षेत्र प्रमुख श्री चंद्रशेखर एस. एस. (उ.म.प्र.), विशेष अतिथि विधायक श्री जगदीश मीना, शंकरा इंस्टीट्यूट के चेयरमैन श्री संत कुमार चौधरी तथा जेईसी कॉलेज के निदेशक श्री ललित सरावगी और शाखा प्रबंधक श्री गोपाल लाल मीना जी. मेले में 5 करोड़ का ऋण मंजूर किया गया और 1 करोड़ के चेक वितरित किए गए.

आयोजन और उत्सव



Marketing Officers of Mumbai Zone along with Shri Sumit Srivastava, AGM, Marketing, C.O. and Shri Ravi Hooja, Trainer from Skill Edge India at "Sales Skill Training Programme" for Marketing Officers at STC, Powai conducted on 15th & 16th January, 2015.



गुजरात राज्य द्वारा बड़ौदा में 23.01.2015 से 29.01.2015 तक राष्ट्रीय शिल्प मेले एवं गरबी गुजरात 2015 का आयोजन किया गया. इस मेले में बड़ौदा शहर में स्थित अग्रणी एवं बड़े बैंकों को अपने बैंक के उत्पादों की प्रदर्शनी लगाने हेतु स्टॉल आबंटित किए गए. सम्मेलन में बैंक की सक्रिय सहभागिता रही. इसमें क्षेत्रीय कार्यालय बड़ौदा के सभी मार्केटिंग अधिकारियों ने भाग लिया. शिल्प मेले में श्री जी जी गुमा, सहायक महा प्रबंधक की विशेष उपस्थिति रही .



दिनांक 14.01.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा के परिसर की छत पर उत्तरायण पर्व मनाते हुए श्री निशीष मोबार, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा तथा स्टाफ सदस्य.



क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम के अंतर्गत मिनी मैराथन का आयोजन किया गया. इस अवसर पर महिला स्टाफ-सदस्यों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया.



क्षेत्रीय कार्यालय जालंधर द्वारा आयोजित खेल एवं सांस्कृतिक क्लब के कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए उप महाप्रबंधक एच.पी.एस. गुगलानी



क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगाम द्वारा दिनांक 2 जनवरी 2015 को बेलगाम में आयोजित इंडस्ट्रियल एक्सपो में स्टॉल लगाया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख एवं उप महाप्रबंधक श्री वी.एच.कामत (बैठे हुए, बाएँ से पहले) ने उपस्थित होकर विपणन अधिकारियों का मनोबल बढ़ाया.

National Games were held in the state of Kerala between 31.01.2015 to 14.02.2015. A group run which named "Run Kerala Run" was organized across Kerala as a prelude to the ensuing National Games which the state is hosting after 28 years." Run Kerala Run", in which a good share of people of Kerala taken part held on 20.01.2015. Shri. Sachin Tendulkar participated in the event by leading the run along with Chief Minister of Kerala and other Ministers. The event was inaugurated and flagged off by Governor of Kerala Justice P Sathasivam. Our staff members also participated in the event.



A mini marathon was organized at Trivandrum on 10.01.2015 by the organization called "Save a Rupee & Spread a Smile". About 75 unionites participated in the run along with Regional Manager Shri. R Ramanathan (DGM, RO, Trivandrum) wearing T-Shirt and caps, with bank logo and waving flags with Union Bank logo. It was a great event and we got good publicity.

कारोबार और समीक्षा



दिनांक 21.01.2015 को अपने बड़ौदा दौरे के दौरान बड़ौदा क्षेत्र के शाखा प्रमुखों की बैठक में उपस्थितों को संबोधित करते हुए श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; साथ मंचासीन हैं श्री निशीष मोबार, उप महाप्रबंधक, के.का., बड़ौदा तथा श्री एच.एल. रावल, महाप्रबंधक, के.म.प्र.का., अहमदाबाद.



During his visit to Chandigarh on 23.01.2015, Shri Arun Tiwari, CMD addressed the Branch Heads Meet at R. O. Chandigarh.



श्री राकेश सेठी, कार्यपालक निदेशक द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ का दौरा किया गया. इस दौरान क्षेत्र की शाखाओं के शाखा प्रबंधकों के कार्य निष्पादन की समीक्षा भी की गई. साथ में हैं: श्री केशव बैजल, क्षेत्र प्रमुख, के का चंडीगढ़,



ED Shri K. Subrahmanyam addressed the Branch Heads of Bhubaneswar Region during his visit to Odisha on 18.01.2015.



बैंक के स्टाफ महाविद्यालय, बैंगलूरु में संकाय सदस्यों की बैठक आयोजित की गयी. इस अवसर पर श्रीमती हेमलता राजन महा प्रबन्धक (का) द्वारा महाविद्यालय में वृक्षारोपण किया गया



Mrs Rosemary Sebastian, Banking Ombudsman, Reserve Bank of India, visited R.O.Nasik on 11.02.2015 and guided Branch Managers. Mr. Prakash Waikar, DGM, welcoming Madam Rosemary Sebastian, Banking Ombudsman, RBI, while Mr A.K.Dhamija, Nodal officer, R.O. Mumbai (South), and others, look on.

कारोबार और समीक्षा



वाराणसी शहर में प्रसिद्ध काल भैरव मंदिर के पास एटीएम का उदघाटन करते हुए श्री राकेश सेठी, कार्यपालक निदेशक. साथ में श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी, श्री टी. एन. घोष, उप महाप्रबंधक, महाप्रबंधक कार्यालय, वाराणसी तथा श्री बी. एन. साहू, मुख्य प्रबंधक, विश्वेश्वरगंज गंज शाखा.



वाराणसी में आयोजित प्रेस वार्ता में पत्रकारों को संबोधित करते हुए श्री राकेश सेठी, कार्यपालक निदेशक. साथ में श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी, श्री टी. एन. घोष, उप महाप्रबंधक, महाप्रबंधक कार्यालय, वाराणसी



Our DGM handing over a cheque of Rs.5.00 lacs being our sponsorship amount for the Nirbhaya Kerala Suraksha Kerala Scheme of the Government of Kerala.

(L) to(R):- Shri V.Anil Kumar, Lead District Manager, Union Bank of India, Ernakulam, Shri R.Nellaiappan, Dy. General Manager, Union Bank of India, Nodal Regional Office, Ernakulam and Shri M.G.Rajamanickam, I.A.S., District Collector, Ernakulam.

समाज सेवा



बेलगाम में शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए निधि जुटाने हेतु आयोजित मेराथन में भाग लेते हुए बेलगाम के क्षेत्र प्रमुख व उप महाप्रबंधक (बाएँ से चौथे) श्री वी. कामत एवं बेलगाम क्षेत्र के कार्मिक.

जिंदगी का मोबाइल



गमों को डिलीट करो, खुशियों को सेव करो.

अच्छे दोस्तों को ऐड करो, देश की मुख्य धारा में एंटर करो.

प्रेरक संदेशों को सेट करो, ऑप्शन की अपेक्षा करो.

रचनात्मक कार्यों को रिपीट करो,

अपनी कमियों को पहचानों और एडिट करो.

इस तरह से जिंदगी के मोबाइल का इस्तेमाल करो.

सुबोध देवनाथ

कानपुर मुख्य शाखा



पुणे में आयोजित प्रधामंत्री जन-धन योजना के एक कार्यक्रम में श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा क्षेत्र प्रमुख, पुणे.



दिनांक 19.01.2015 को भुवनेश्वर क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री के. सुब्रह्मण्यम, कार्यपालक निदेशक; साथ मंचासीन हैं श्री सुनील गुप्ता, क्षेत्र महाप्रबंधक, कोलकाता एवं श्री विजय कुमार श्रीवास्तव, उप महाप्रबंधक क्षे.का., भुवनेश्वर.



वाराणसी क्षेत्र के अंतर्गत दिनांक 08 जनवरी 2015 को हेतिमपुर ग्राम जिला चंदौली में महिलाओं हेतु वित्तीय साक्षरता जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री आर. एम. श्रीवास्तव, आईएएस मंडलायुक्त, वाराणसी मण्डल; विशिष्ट अतिथि जिलाधिकारी, चंदौली; श्री ए. के. दीक्षित, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी अंचल श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी उपस्थित रहे.



वाराणसी में प्रधान मंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत उक्त खाते की पासबुक लाभार्थी को देते हुए कार्यपालक निदेशक श्री राकेश सेठी. साथ में हैं क्षेत्र प्रमुख वाराणसी श्री योगेंद्र सिंह.



वाराणसी क्षेत्र के अंतर्गत दिनांक 08 जनवरी 2015 को हेतिमपुर शाखा एवं एटीएम का शुभारंभ श्री आर. एम. श्रीवास्तव, आईएएस, मंडलायुक्त, वाराणसी मण्डल, के कर कमलों से सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर श्री ए. के. दीक्षित, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी अंचल; श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी उपस्थित रहे. श्री आर. एम. श्रीवास्तव, आईएएस मंडलायुक्त, वाराणसी मण्डल हेतिमपुर शाखा एवं एटीएम का उदघाटन करते हुए साथ में श्री ए. के. दीक्षित, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी अंचल, श्री योगेंद्र सिंह, क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी.



क्षेत्रीय कार्यालय, बंगलुरु द्वारा दिनांक 12.02.2015 को राजभाषा प्रयोग – आपसी संवाद : सार्थक दिशा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के शाखा प्रमुखों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया. उल्लेखनीय है कि डॉ वेद प्रकाश दूबे, संयुक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने सभी उपस्थितों को अपने अनुभवों से लाभान्वित किया. श्री ए.वी. रमणा, क्षेत्र प्रमुख, बंगलुरु; श्री आर.एस. पाण्डेय, महाप्रबंधक, बंगलुरु अंचल और श्री आर.पी. बेरी, उप महाप्रबंधक, बंगलुरु अंचल भी इस अवसर पर मौजूद थे.

कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी



जयापुर, जिला वाराणसी में 17.01.2015 को आयोजित वित्तीय साक्षरता शिविर में सुश्री श्यामला गोपीनाथ, पूर्व उप गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए.



श्री एन.एस. मेहरा, अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन), गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दिल्ली ने दिनांक 13.03.2015 को क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली (उत्तर) का निरीक्षण किया. इस अवसर पर श्री पी. सत्यनारायण, उप महाप्रबंधक, क्षे.का., दिल्ली (उत्तर) पुष्प गुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए.



गुणदल मेरी माता मंदिर, गुणदला, विजयवाड़ा की पुण्य तिथि दिनांक 9 से 11 फरवरी, 2015 को मनाई गई जिसमें हमारे बैंक की तरफ से मंदिर को दो वाटर कूलर की प्रदान किए गए. इससे संबंधित ₹ 25,000/- का चेक मंदिर के प्रभारी फादर चिन्नप्पा को सौंपते हुए क्षेत्र के उप महा प्रबंधक डॉ. के. एल. राजू. साथ में खड़े हैं मुख्य प्रबंधक श्री सी. रवीन्द्रनाथ और अयोध्या नगर के शाखा प्रबंधक श्री पी. एल. विद्याधर राव.



दिनांक 23.01.2015 को नांदेड गुरुद्वारा की गुरुद्वारा समिति द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान श्री एस.के. जैन, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, पुणे ने महाराष्ट्र राज्य के गवर्नर श्री विद्यासागर राव की उपस्थिति में गुरुद्वारा के सुपरिटेण्डेंट को एम्बुलेंस प्रदान की. इस अवसर पर नांदेड शाखा के शाखा प्रमुख श्री सुनील पी. हेडाव भी उपस्थित थे.



मह तो इसके व्यक्तित्व का प्रभाव है कि दखाने पर दस्तावेज देने ही तसूली लेजाती है.



स्थानिक अन्नपूर्णा देवी म्युनिसिपल हाई स्कूल में हमारे बैंक की ओर से लेबोरेटरी सामग्री खरीदने के लिए ₹ 25,000/- की निधियाँ प्रायोजित की गई हैं. उससे संबंधित चेक स्कूल की प्रधानाध्यापिका को सौंपते हुए डॉ. एल. राजू, उप महा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा. इसके साथ-साथ स्कूल की आठवीं, नौवीं, दसवीं कक्षा के सभी छात्रों के बचत खाते भी खोले गए.

Mr. Vishal Bhanwar..



Friends, the human brain emits a plethora of ideas and hands decipher them into beautiful sketches and colourful paintings. Variety is said to be the spice of life; lines and colours are spectacular in our speckled existence. Each one of us has a tendency to scribble on a piece of paper in our leisure hours, but a very few are serious about these lines and patterns emerging out of them. A range of colours catch your eyesight instantly but to create a master piece out of black & white lines is the work of a specialist. One of our colleagues has this rare ability. He is Mr. Vishal Bhanwar, Asst. Manager of our Khargone Branch, Indore. Joining in April, 2013 as a Probationary Officer, this Engineering graduate {BE (Electronics & Telecommunication)} hails from a respected family. With grit and devotion for art, he is steadily establishing himself in the art world. The most striking fact about him is that he has learnt this art on his own with the help of a book only. Thus he is the modern 'Ekalavya' who is very grateful to his family for their support and motivation. He strongly believes in 'there is no chance of another life so dream it, decorate it, play it, enjoy it, live it..' Here, in this short dialogue with Mrs. Supriya Nadkarni, this sketching artist, unveils his journey on the black & white canvas.

- How did your sketching / portraying mission start? What led you to pencil sketching?

Though there is no one in the family who sketches or paints, it is my childhood hobby. In my young days I used to draw cartoons. When I was about 13–14 years old, I found a book on 'pencil sketching' in a book fair. I purchased it and started learning the basics. Slowly and steadily I tried to hone my skills and one day I tried a sketch of Madhuri Dixit on a simple paper which turned out to be very beautiful. This inspired me. I think we can make beautiful art only with the help of a pencil. The expressions which we can put on paper with an effective way fascinated me to proceed further in pencil sketching.

- What type of material do you use? How do you proceed?

I use soft charcoal, hard paper sheet, H1, H2, 5H, HB pencils,

Apsara Dark pencils, non-dust eraser, cotton cloth piece, black acrylic colour, etc. I proceed by making an outline, then by making a dark shade of sketch and by rubbing and shading it with the help of cotton and the finger. Though I had tried with charcoal, I feel it does not give a smooth finishing and cleaning.

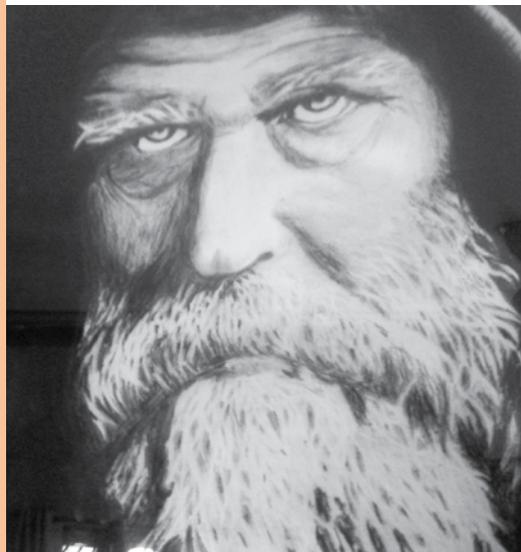
- How do you bring liveliness in your work?



By understanding the impact and reflection of light on the objects.

- How do you start your sketching? What are the steps involved? How much time does it take to complete a single sketch?

First by making rough outlines of the subject on the paper, I proceed to darken the dark parts of the subject and make a shade with the help of a cloth and eraser. Proper shading is important in drawing realistically. Good shading textures and tonal



possessive about Black & White lines



flow can add a lot to a drawing. I take 20–25 hours to complete a sketch. It requires a lot of patience.

- What precautions do you have to take while working with pencils?

The paper should remain neat and clean always. Pencil dust should be blown out immediately and carefully. Shades should be even and proper according to the direction of light.

- How do you preserve your sketches? How much it costs?

By framing them and it costs about Rs. 100/ per frame.

- From amongst your own creations, which is your favourite sketch? Why?

The sketch of a 'white horse' is my favourite one because it seems to be a real one. This one and a sketch of a lady made during my



college days put me in the limelight.

- How did your sketching hobby help you in your studies?

It keeps me relaxed and passionate. It teaches me to complete my work with an efficient manner.

- Is it easy for an amateur artist to hold an exhibition – solo or in a group? What is the general public response to Art Exhibitions here?

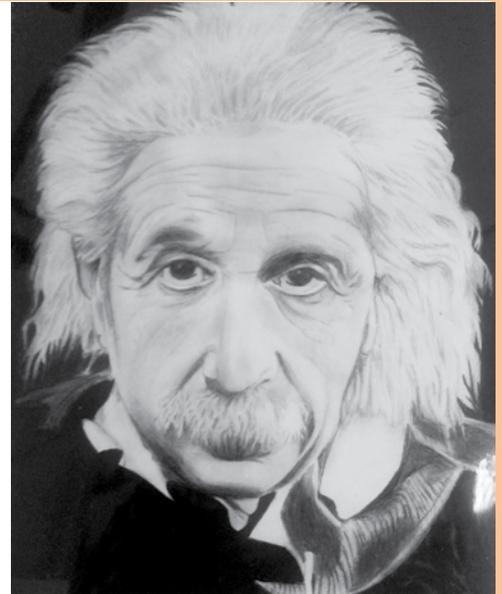
It is not easy to for an amateur artist to hold an exhibition. In exhibitions, people don't care whether an artist is new or experienced but your art piece exhibited should be effective/attractive. Whenever I visit such exhibitions, I get inspired by the art displayed.

- Is the computer a boon or bane for the art? Do computer based paintings have a similar impact on the viewer as that of the traditional one?

Yes, the computer is a boon for the art. Now-a-days different kinds of art are introduced in which the computer plays a vital role. Yet, traditional painting is more valuable and has much more impact on the viewers.

- Give us your views on 'Modern art'?

Modern art has more impact of the



computer and technology. Hence, it becomes a more logical and wonderful creation. Different mediums and types have been introduced in the current art scenario.

- Any message for budding art lovers?

Don't go only on exterior part of an art; try to understand the process of its imagination.

- Any other information you wish to share with our readers?

Every person has an art in his soul, give it a chance to emerge –i.e help yourself to unlock the artist inside and then motivate.

"Union Dhara" wishes him 'All The Best' in his future 'sketching' endeavours. More power to his pencils!

- Supriya Nadkarni
Union Dhara, C.O



Banking QUIZ



1. **What is the permissible period of remittance (remittance norms) in respect of payments into Government Account through debit/credit cards and net-banking?**
 - a. 2 hours
 - b. T+1 working day
 - c. T+2 working days
 - d. T+2 business days
2. **Banks can review the Base Rate methodology after--- years from date of its finalization.**
 - a. 2 years
 - b. 3 years
 - c. 4 years
 - d. 5 years
3. **With effect from January 15, 2015, what is the marginal standing facility rate fixed by RBI?**
 - a. 9.00%
 - b. 8.75%
 - c. 8.50%
 - d. 7.75%
4. **With effect from January 15, 2015, what is the REPO rate fixed by RBI?**
 - a. 9.00%
 - b. 8.75%
 - c. 8.50%
 - d. 7.75%
5. **With effect from January 15, 2015, what is the reverse REPO rate fixed by RBI?**
 - a. 8.00%
 - b. 7.75%
 - c. 7.50%
 - d. 6.75%
6. **With effective from January 15, 2015, what is the revised bank rate fixed by RBI?**
 - a. 9.00%
 - b. 8.75%
 - c. 8.50%
 - d. 8.25%
7. **Keeping in view, the implementation of PM Jan-Dhan Yojana, banks are required to complete the process of providing banking services in unbanked villages with population below 2000 by:**
 - a. 31 March 2015
 - b. 15 August 2015
 - c. 31 December 2015
 - d. 31 March 2016
8. **How much Indian currency can be carried by a person coming from or going to Nepal and Bhutan?**
 - a. ₹ 10,000
 - b. ₹ 25,000
 - c. ₹ 100,000
 - d. Any amount
9. **What is the highest denomination of Indian Currency Notes that a person going to or coming from Nepal and Bhutan, can carry when the total amount is Rs. 2.00 lac.**
 - a. ₹ 50
 - b. ₹ 100
 - c. ₹ 500
 - d. ₹ 1000
10. **Kisan Vikas Patra is available in the following denomination**
 - a. ₹ 1000, ₹ 5000, ₹ 10,000 only
 - b. ₹ 1000, ₹ 2000, ₹ 5000, ₹ 10,000
 - c. ₹ 1000, ₹ 5000, ₹ 10,000, ₹ 50,000
 - d. ₹ 1000, ₹ 5000, ₹ 10,000; ₹ 50,000 and ₹ 1.00 Lac
11. **The maturity period of Kisan Vikas Patra is;**
 - a. 5 years 6 months
 - b. 6 years 3 months
 - c. 7 years 6 months
 - d. 8 years 4 months
12. **The rate of Interest on Kisan Vikas Patra is;**
 - a. 8.3%
 - b. 8.7%
 - c. 9.1%
 - d. Amount becomes double during the maturity period.
13. **For which of the following transactions, the nomination is permitted under the provision of the Banking Regulation Act 1949, as amended from time to time;**
 - a. A self operated account opened by a minor aged 16
 - b. Articles deposited in a joint safe custody account
 - c. Account in the name of an HUF concerned opened by the karta
 - d. Account in the name of a proprietor for a proprietorship firm.
14. **Which of the following statement regarding Kisan Vikas Patra is not correct;**
 - a. Pledge of a KVP is not allowed to raise a loan.
 - b. Nomination facility is not available.
 - c. Pre-mature encashment is not allowed in any circumstances.
 - d. All of the above.
15. **Which of the following is a condition relevant for considering a small unit as a micro enterprise.**
 - a. It is located in places having population upto 50,000.
 - b. It is not located in Metro cities.
 - c. Investment in fixed assets is up to Rs. 25 lac.
 - d. Investment in plant and machinery is up to Rs. 25 lac.



Find answers in this issue...

ब्राह्मी

मस्तिष्क के विकास तथा सुदृढ़ता के लिए भारतीय आयुर्वेद में तीन औषधीय पौधों का वर्णन है—ब्राह्मी, बच और शंखपुष्पी. इनमें ब्राह्मी बूटी के विषय में हम इस अंक में चर्चा कर रहे हैं क्योंकि ग्रीष्म ऋतु के आगमन के साथ ही हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ठंडी तासीर वाली खाद्य सामग्री को खोजने लग जाते हैं. फिर ब्राह्मी की तासीर के क्या कहने! इतनी ठंडी कि जून के महीने में जुकाम कर दे. लेकिन इसके सेवन के साथ इसकी ठंडी तासीर को मारने वाली औषधियों/मसालों का प्रयोग अपेक्षित है.

ब्राह्मी बूटी सम्पूर्ण भारतवर्ष में जलाशयों के किनारे उत्पन्न होती है, परंतु हरिद्वार से लेकर लगभग 200 फुट की ऊंचाई तक यह विशेष रूप से दर्शन देती हुई आभास कराती है कि यह विशेष रूप से ब्रह्म प्रभावित क्षेत्र है. ऐसा कहा जाता है कि इस दिव्य बूटी के सेवन से ब्रह्म की साधना में मदद मिलती है. इसी से साधक जन प्रायः इस बूटी का सेवन करते रहते हैं.

- इसका प्रभाव मेध्य (मेधा को पुष्ट करने वाला) है तथा यह सह स्मृतित्व बुद्धि तथा कोढ़, पीलिया, मस्तिष्क के रोगों में लाभकारी है. यह हृदय के लिए बलकारक, घाव और बुढ़ापा दूर करने वाली है.
- शुष्क ब्राह्मी 1 भाग, बादाम गिरी 1 भाग, काली मिर्च चौथाई भाग घोटकर 3-3 ग्राम की टिकिया बनाएँ. याददाश्त और दिमाग को शक्ति देने के लिए एक टिकिया रोजाना प्रातः-सायं दूध के साथ दें.
- ब्राह्मी 3 ग्राम, शंखपुष्पी 3 ग्राम, बादाम गिरी 6 ग्राम, छोटी इलायची के बीज 3 ग्राम, चारों मगज एक तोला-जल में घोट, छानकर मिश्री मिला कर पिलायें. स्मरण शक्ति के साथ-साथ यह खांसी, पित्त वर और जीर्ण उन्माद के लिए बहुत लाभदायक है.
- ब्राह्मी का ताजा रस लेकर, उसमें समभाग घी मिलाकर घी सिद्ध कर लें. इस घी को 5 ग्राम की मात्रा में गर्म दूध के साथ सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है. इसके पंचांग का चूर्ण दूध में मिलाकर सेवन करने से याददाश्त तेज होती है.
- ब्राह्मी का 3 ग्राम का चूर्ण गाय के आधा किलो कच्चे दूध में घोटकर, छानकर एक सप्ताह तक सेवन करने से पुराने निद्रानाश रोग में अवश्य लाभ हो जाता है.
- ताजी ब्राह्मी के 5-10 ग्राम रस को 100-150 ग्राम कच्चे दूध में मिलाकर पीने से लाभ होता है. ताजी बूटी के अभाव में लगभग 5 ग्राम चूर्ण प्रयोग करें.
- ब्राह्मी का रस 6 ग्राम, कूठ का चूर्ण डेढ़ ग्राम, मधु 6 ग्राम मिलाकर रोगी को दिन में तीन बार पिलायें, यह प्रयोग जीर्ण उन्माद मिटाने के लिए लाभप्रद है.
- ब्राह्मी 3 ग्राम, काली मिर्च 2 नग, बादाम गिरि 3 ग्राम, मगज के बीज प्रत्येक 3-3 ग्राम, मिश्री सफेद 25 ग्राम जल में घोट छानकर सुबह शाम पिलायें, यह पित्तज जीर्ण उन्माद में भी लाभकारी है.

- ब्राह्मी 3 ग्राम, कुछ दाने काली मिर्च के- जल में घोट छानकर दिन में 3-4 बार पिलाने से पुरातन मस्तिष्क शूल और दिमागी भूल मिटती है.
- ब्राह्मी रस 1 किलो और मिश्री 2.5 किलोग्राम मिलाकर मंदाग्न पर शर्बत समान चाशनी बनाकर नीचे उतारकर तुरंत छान लें. 15 से 25 ग्राम तक जल के साथ दिन में 3 बार पीने से वात नाड़ियों के जीर्ण रोगों में जैसे मस्तिष्क दौर्बल्य, रक्त का दबाव कम होना और जीर्ण उन्माद आदि में लाभदायक है.
- ब्राह्मी के रस में कूठ चूर्ण तथा मधु को मिलाकर चाटने से उन्माद रोग शांत होता है.
- ब्राह्मी की पत्तियों का रस तथा बालवच, कूठ, शंखपुष्पी इनके कल्क के साथ गाय के पुराने घी का यथाविधि पान करें. यह घृत उन्माद, अपस्मार तथा अन्य पाप कर्मों से उत्पन्न होने वाले रोगों का विनाश करता है.
- बाल झड़ने पर ब्राह्मी के पंचांग का चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में सुबह-शाम नियमित रूप से कुछ हफ्ते सेवन करें. यह प्रयोग निर्बलता निवारण में भी लाभप्रद है.
- ब्राह्मी सूखी 100 ग्राम, मुनक्का 100 ग्राम, शंखपुष्पी 50 ग्राम, सबको चौगुने पानी में मिलाकर अर्क निकालें. इसके प्रयोग से शरीर स्वस्थ और आवाज साफ हो जाती है.
- ब्राह्मी के 2 चम्मच रस में, एक चम्मच मिश्री मिलाकर सेवन करने से मूत्रावरोध मिटता है.
- ब्राह्मी के पत्तों का रस एक चम्मच की मात्रा में आधे चम्मच शहद के साथ सेवन करने से उच्च रक्तचाप सामान्य हो जायेगा.
- ब्राह्मी के अधिक प्रयोग से कभी-कभी शीतजन्म वातवृद्धि के कारण नशा, शिरःशूल, भ्रम और अवसाद उत्पन्न होते हैं. त्वचा में लालिमा और खुजली होती है. ऐसी अवस्था में मात्रा कम कर दें या प्रयोग बंद कर दें.

तथापि ब्राह्मी का प्रयोग सर्वदा काली मिर्च, मुलहठी, मोटी इलायची, छोटी इलायची, दूध या घी के साथ करें क्योंकि यह ठंडी और शुष्क तासीर वाली होती है. किंतु यदि इसे इन सब उपद्रवों की काट के साथ प्रयोग किया जाए तो इसके लाभ गिनने की सीमा तथा गुणवत्ता माप से बाहर हैं. आफिस में दिमागी (विशेष रूप से आँकड़ों से संबंधित काम करने वालों), विद्यार्थियों, गायकों आदि की 90 प्रतिशत व्याधियों का उपचार ब्राह्मी से संभव है. यह अनुभूत नुस्खा है.

अनीता भोबे
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई.

सैहत और सौन्दर्य का सरताज 'तरबूज'



आयुर्वेद के अनुसार तरबूज मस्तिष्क एवं हृदय को ताजगी प्रदान करने वाला, नेत्रज्योति बढ़ाने वाला, मन-मस्तिष्क एवं शरीर को शीतलता प्रदान करने वाला, कफनाशक, पित्तनाशक, वातनाशक और प्यास बुझाने वाला मधुर फल है। गर्मी के मौसम में यह शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। यह रक्तचाप को संतुलित रखता है और कई बीमारियाँ दूर करता है। इसमें विटामिन ए, बी, सी तथा लोहा भी प्रचुर मात्रा में मिलता है, जिससे रक्त सुख्ख व शुद्ध होता है।

- खाना खाने के उपरांत तरबूज का रस पीने से भोजन शीघ्र पच जाता है। इससे नींद भी अच्छी आती है। इसके रस से लू लगने का अंदेशा भी नहीं रहता।
- मोटापा कम करने वालों के लिए यह उत्तम आहार है।
- तपती गर्मी में जब सिरदर्द होने लगे तो तरबूज के आधा गिलास रस को पानी में मिलाकर पीना चाहिए।
- पेशाब में जलन हो तो ओस या बर्फ में रखे हुए तरबूज का रस निकालकर सुबह शक्कर मिलाकर पीने से लाभ होता है।
- गर्मी में नित्य तरबूज का ठंडा-ठंडा शरबत पीने से शरीर को शीतलता तो मिलती ही है, साथ ही चेहरे पर एक चमक भी आ जाती है। इसके लाल गूदेदार छिलकों को हाथ-पैर, गर्दन व चेहरे पर रगड़ने से सौंदर्य निखरता है।
- तरबूज में लाइकोपिन पाया जाता है, जो हमारी त्वचा को उर्जावान और जवान बनाए रखता है और हमारे शरीर में कैंसर को होने से भी रोकता है।
- धूप में चलने से बुखार आ गया है तो फ्रिज में रखा ठंडा-ठंडा तरबूज खाने से फायदा होता है।
- तरबूज का गूदा लें और इसे 'ब्लैक हैडस' के प्रभावित जगह पर आहिस्ता-आहिस्ता रगड़ें। एक ही मिनट उपरांत चेहरे को गुनगुने पानी से साफ कर लें।
- तरबूज के बीजों को छीलकर अंदर की गिरी खाने से शरीर में ताकत आती है। मस्तिष्क की कमजोर नसों को बल मिलता है, टखनों के पास की सूजन भी ठीक हो जाती है।

- बीजों की गिरी में मिश्री, सोंफ, बारीक पीसकर मिलाकर खाने से गर्भ में पल रहे शिशु का विकास अच्छा होता है।
- यदि आपके बाल झड़ रहे हों तो आप तरबूजे के बीजों का पेस्ट बनाकर अपने सिर पर लगाएं और आधे घंटे के बाद बालों को धो लें। कुछ दिनों तक लगातार करने से बालों की झड़ने की समस्या कम हो जाएगी। यदि बाल रुखे हों तो तरबूजे के बीजों से निकले तेल का प्रयोग कर सकते हैं।
- तरबूज एक अच्छा मल शोधक फल है, जिसके सेवन से पेट की गंदगी मल के जरिये निकलकर पेट साफ रहता है।
- तरबूज के नियमित सेवन से नेत्रज्योति बढ़ती है। प्रतिदिन नियमित रूप से 2-3 गिलास तरबूज का रस पीने से गुर्दे की पथरी नष्ट हो जाती है।

सावधानियाँ

- तरबूज बाजार से खरीदते समय बासी, कटा हुआ या पिलपिला न हो।
- दमे के मरीजों को तरबूज का सेवन नहीं करना चाहिए।
- तरबूज खाने के तुरन्त बाद पानी, दूध अथवा दही का सेवन न करें क्योंकि इससे हैजे के संक्रमण का खतरा रहता है। खाली पेट भी तरबूज का सेवन न करें।
- तरबूज का सेवन करने से कम से कम एक घंटा पहले इसे ठंडे पानी में डाल दें ताकि इसकी गर्मी निकल जाए। गर्म तरबूज का सेवन न करें।
- काटकर ज्यादा समय तक रखे गए तरबूज का सेवन करने से बचें।
- भोजन के बाद तरबूज काटकर पिसी हुई काली मिर्च व काला नमक बुरककर ही इसका सेवन करें।
- तरबूज का सेवन करने से कम से कम 02 घंटा पहले और 02 घंटे बाद तक चावल का सेवन न करें।

दीपा राजे

एन आर आई शाखा, मुंबई.

त्यंजन गर्मी के लिए...

मखाना ठंडाई



सामग्री- मखाने 100 ग्राम, हरी इलायची 8-10, रोज एसेंस, सजाने के लिए खरबूजे के बीज या बादाम।

विधि- मखाने को बिना घी के कढ़ाई में करारा होने तक भूनें। अब इन्हें हरी इलायची डाल कर मिक्सी में पीस लें व आटा छानने वाली छलनी से छान लें। 1 गिलास दूध में 1 बड़ा चम्मच मखाना, इलायची मिश्रण, स्वादानुसार चीनी या शुगर फ्री, 4-5 बूंद रोज एसेंस, कुटी बर्फ डाल कर मिक्स करें। सजाने के लिए खरबूजे की गिरी को तवे पर फूलने तक भूनें व ठंडाई पर ऊपर से डाल कर सर्व करें। बादाम को भिगो कर ऊपर से काट कर डालें।

अनीता भोबे
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई.

रिफ्रेशिंग लेमन ड्रिंक

सामग्री- चीनी 2 ½ कप, पानी 2 कप, अदरक 1 छोटा टुकड़ा, नींबू 250 ग्राम, प्रिजरवेटिव ½ छोटा चम्मच।

फॉर सरविंग- 1 गिलास सरविंग के लिए, रुहफज़ा 2 छोटा चम्मच, काला नमक ½ छोटा चम्मच, भुना जीरा (पिसा) ½ छोटा चम्मच, 1 गिलास पानी या सोडा।



विधि- एक भारी तले वाले बर्तन में 2 कप चीनी, 2 कप पानी व कदूकस करा हुआ अदरक, चीनी घुलने तक पकाएं। ½ कप पानी पर नींबू का रस निचोड़ लें। नींबू के रस पर चीनी व पानी वाला मिश्रण प्रिजरवेटिव डाल कर छान लें। इस मिश्रण को 1 महीने तक रख सकते हैं। जब सर्व करना हों 1 गिलास सोडे में 2 छोटा चम्मच रुहफज़ा, काला नमक, भुना जीरा, 1 बड़ा चम्मच नींबू चाशनी मिश्रण, कुटी बर्फ डाल कर मिक्सी में चलाएँ। नींबू का स्लाइस लगा कर सर्व करें।



"Just read the latest Union Dhara issue of December 2014 on the net. Was very excited to feel the grace of the magazine & involvement of everyone

associated with it...The issue is very nicely framed, well planned & edited. All related articles are - one better than the other. Very informative & knowledgeable. Topics on health are - excellent. Common remedies & benefits of natural resources are useful and praiseworthy. Union Dhara definitely is the best....

The entire team of Union Dhara deserves appreciation for the wonderful work done. We await eagerly the next issue. "

Tarun Kochhar
DGM, ZAO, Chandigarh

"यूनियन धारा का सितम्बर 2014 का अंक पढ़ा. पत्रिका की साज-सज्जा आला दर्जे की है तथा सभी सामग्री सामयिक, प्रासंगिक और पठनीय है. इसके लिये आपको बहुत-बहुत बधाईयाँ और साधुवाद. साथ ही नव-वर्ष की भी बहुत बहुत शुभ कामनायें और नव-वर्ष मंगलमय हो इसकी कामना!"

श्याम आठल्ये
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

"The latest issue contains topics covering from medicine to banking contributed by our staff from various branches and STCs, including NPA article. The info regarding retirement of Top Executives and of those promoted to TEG/Sc-VII/VI/ and V are worthy to know. Last but not the least, the small poem on the back page contributed by Smt. Savita Sharma in every quarter is excellent and thought provoking."

GS Laxman

"I am really pleased with the Dec. 14 Health n Wealth issue. The journal is packed with all types of Health Tips. It will be of great use to us."

Saleh Master
salehmaster64@gmail.com

"यूनियन धारा का दिसम्बर 2014 अंक स्वास्थ्य विशेषांक पढ़कर बहुत अच्छा लगा. सर्वप्रथम ऐसा विशेषांक प्रकाशित करने के लिए पूरी यूनियन धारा टीम को हार्दिक बधाई. इस अंक के सभी लेख बहुत ही रचनात्मक और महत्वपूर्ण हैं. खास करके तनाव को कैसे कम करें, डाइबिटीस नियंत्रण के गुर, Homoeopathy, स्वास्थ्य जीवन का अनमोल रत्न, आदि लेख बहुत ही रचनात्मक हैं. 'Banking Cross Word', 'पढ़ो, समझो और उत्तर दो' ये दो नये सम्म भी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं. हम आशा करते हैं कि आगे भी ऐसी कुछ नयी चीजें शामिल होती रहेंगी. हर अंक में अपने एक एक Unionites की प्रतिभा 'Face in the Union Bank Crowd' कॉलम में उपलब्ध कराने हेतु धन्यवाद, जिससे हमें पता चलता है कि हमारे Unionites कितने प्रतिभाशाली हैं. आशा करते कि आनेवाले अंक भी इसी तरह जानकारीप्रद होंगे."

सलाउद्दीन कड़ेर रुबेल
उदयपुर शाखा, त्रिपुरा

"यूनियन धारा का सितम्बर 2014 अंक बहुआयामी था. व्यंग्य से लेकर ज्ञानवर्धक लेख एवं कविताएँ संजोए यह अंक खुदरा बैंकिंग, कृषि एवं एमएसएमई के ऊपर विविध जानकारियाँ दे गया. कृषि क्षेत्र में कृषि पर्यटन पर दो लेख पढ़े, बहुत अच्छा लगा. कृषि पर्यटन एक नया उभरता क्षेत्र है. इसमें विकास की असीम संभावनाएं हैं. भारत एक कृषि प्रधान देश है. हमारे यहां के मंझले एवं बड़े किसान अपने खेतों में एवं फार्म हाउसों में परिवर्तन कर इसे कृषि पर्यटन केन्द्र बना सकते हैं. कृषि पर्यटन कृषकों को अतिरिक्त आय का स्रोत बनेगा, वहीं दूसरी ओर पर्यटकों को स्वच्छ पर्यावरण एवं स्वास्थ्यवर्धक वातावरण भी उपलब्ध करायेगा. वह समय दूर नहीं जब भारत कृषि पर्यटन का प्रसिद्ध केन्द्र बनेगा."



सुरेन्द्र कुमार गर्ग
(सेवानिवृत्त) गाजियाबाद



"I commend the Editorial Team of Union Dhara for bringing out an issue that is dedicated to ensuring health discipline. Usually, it is the case that we are so much preoccupied with our daily chores, we neglect our health. The body has an incredible in-built mechanism gifted by God to give sufficient indication of some abnormal things, if any, happening and yet we tend to ignore these warning signals. To an extent, it is understandable if ailments persisting are of a minor nature as they can be cured in a short time but the serious thing is that on few occasions we go even beyond abusing our health turning into serious disorders that - have to be avoided. The December 2014 issue did well to highlight the pertinent issues concerning health, thereby also giving some valuable tips for maintaining a stable and good health. Health, wealth and discipline are three important but different aspects of life. While self-imposed discipline is necessary to build a good character in the society, and wealth for a comfortable life style, a life without health means no wealth too. One is incidentally reminded of a beautiful saying - If money is lost then nothing is lost; if health is lost then something is lost but if character is lost then everything is lost. We will, therefore, need to be conscious of all the three aspects above and strive to maintain a reasonable degree of fitness both mentally and physically to be able to enjoy the fruits of life even while giving the best to our beloved institution, which is our bread and butter. Congratulations, once again."

Srinivasan Umashankar
Bank of Maharashtra, Nagpur.

विध्वंस और विश्वास, चलते हैं साथ-साथ,
विश्वास नव-निर्माण का, और नए सृजन का,
विश्वास कि पुराना मिटेगा तभी नया बनेगा.
यही विश्वास जब आस्था में बदलता है,
तो नए सृजन का बीज बनता है.
और फिर नए कलेवर और नए नाम के साथ,
ते लेता है पुरातन का स्थान.
केदार हों या पशुपतिनाथ,
हिमालय का बर्फीला तूफान हो या भूकंप की मार,
विध्वंस और विश्वास चलते हैं साथ-साथ.

सविता शर्मा
संपादक, यूनियन धारा